प्रारंभिक शिक्षा में डिप्लोमा
(डी.एल.एड.)

पाठ्यक्रम-509
उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान का अधिगम

ब्लॉक-2
सामाजिक विज्ञान की अवधारणाएं एवं विषय

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
A 24/25, सांस्थानिक क्षेत्र, सैक्टर-62 नौएडा,
गौतम बुद्ध नगर उत्तर प्रदेश-201309
वैबसाइट : www.nios.ac.in

विशेषज्ञ समिति

डॉ. सीतांशु एस. जेना
(अध्यक्ष)
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी षिक्षा संस्थान, नोएडा

श्री बी. के. त्रिपाठी
आईएएस, प्रधान सचिव, मासवि
झारखंड सरकार, रांची

प्रो. ए. के. शर्मा
भूतपूर्व निदेषक,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान प्रषिक्षण परिषद
नई दिल्ली

प्रो. एस.वी.एस. चौधरी
भूतपूर्व उपाध्यक्ष
रा.अ.शि.प. नई दिल्ली

प्रो. सी.बी. शर्मा
शिक्षा विद्यापीठ,
इ.गा.रा.मु.वि. नई दिल्ली

प्रो. एस. सी. अगरकर
प्रो. होमी भाभा विज्ञान षिक्षा केन्द्र, मुम्बई

प्रो. सी.एस. नागराजु
भूतपूर्व प्रधानाचार्य
क्षे.शि.सं. (रा.शै.अ.प्र.प.) मैसूर

प्रो. के. दोराईसामी
भूतपूर्व विभागाध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा
एवं विस्तार विभाग, रा.शै.अ.प्र.प.
नई दिल्ली

डा. बी. फलाचन्द्र
भूतपूर्व अनुदेशन विभागाध्यक्ष
क्षे.शि.सं. (रा.शै.अ.प्र.प.) मैसूर

प्रो. के.के. वशिष्ठ
भूतपूर्व विभागाध्यक्ष, प्रा. शि. विभाग
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

प्रो. वसुधा कामठ,
कुलपति,
एस.एन.डी.टी.,
महिला वि.वि. मुंबई

डा. हुमा मसूद
शिक्षा विशेषज्ञ, यूनस्को
नई दिल्ली

प्रो. पवन सुधीर
विभागाध्यक्ष, कला एवं सौंदर्य विभाग,
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

श्री बिनय पटनायक
शिक्षा विशेषज्ञ, यूनिसेफ, रांची

डॉ. कुलदीप अग्रवाल
निदेषक (षैक्षिक)
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी षिक्षा संस्थान, नोएडा

प्रो, एस. सी. पांडा
वरिष्ठ सलाहकार, (शैक्षिक)
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी षिक्षा संस्थान, नोएडा

डा.कंचन बाला काचरू
वरिष्ठ कार्यकारी अधिकारी (षैक्षिक)
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी षिक्षा संस्थान, नोएडा

पाठ्यक्रम समन्वयक एवं संपादक

प्रो. एस. सी. पांडा एवं डॉ. कंचन बाला काचरू
षिक्षा विभाग, राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी षिक्षा संस्थान

पाठ लेखक

डॉ. आशा के.वी.डी. कामत
आर.आई.ई. मैसूर

डॉ. नित्यानंद प्रधान
रवनशा विष्वविद्यालय
कटक, उड़ीसा

डॉ. प्रबोध कुमार पांडा
बीजेबी स्वायत्त कॉलेज,
उड़िसा भुवनेष्वर

डॉ. टी.के. बसंनतिया
ऐसोसिऐट प्रोफेसर
असम विष्वविद्यालय, सिलचर

डॉ. शरत राउत
ऐसोसिएट प्रोफेसर
रवनषा विष्वविद्यालय, कटक उड़िसा

डॉ. सुखविन्दर
एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली

पाठय वस्तु संपादक

प्रो. एन. के. दास,
प्रोफेसर,
षिक्षा विद्यापीठ, इ.गा.रा.मु.वि. नई दिल्ली

अनुवादक

डा. अनिल कुमार तेवतिया
वरिष्ठ प्रवक्ता
एस.सी.ई.आर.टी. दिल्ली

श्रीमति अनुराधा
प्रवक्ता, डायट,
कडकडडुमा, दिल्ली

डा. सत्यवीर सिंह
प्रधानाचार्य
एस. एन. आई. कॉलिज, पिलाना, बागपत (उ.प्र.)

डा. वीरेन्द्र सिंह
ऐसोसिएट प्रोफेसर, डी. जे. पी. जी. कालेज, बड़ौत
बागपत(उ.प्र.)

डा. सतनाम सिंह
वरिष्ठ प्रवक्ता
एस.सी.ई.आर.टी. दिल्ली

डा. एम. एम. राय
वरिष्ठ प्रवक्ता
एस.सी.ई.आर.टी. दिल्ली

विषय वस्तु लेखक

प्रो. एस. सी. पांडा एवं डॉ. कंचन बाला काचरू
षिक्षा विभाग, राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी षिक्षा संस्थान

कार्यक्रम समन्वयक

डॉ. कुलदीप अग्रवाल
निदेषक (षैक्षिक)
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी षिक्षा संस्थान, नोएडा

प्रो, एस. सी. पांडा
वरिष्ठ परामर्षदाता (अध्यापक षिक्षा),
शैक्षिक विभाग,
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी षिक्षा संस्थान, नोएडा

डॉ. कंचन बाला काचरू
वरिष्ठ कार्यकारी अधिकारी (षैक्षिक)
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी षिक्षा संस्थान, नोएडा

आवरण संकल्पना एवं रूपांकन
श्री डी.एन. उप्रेती
प्रकाशन अधिकारी, मुद्रण,
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी षिक्षा संस्थान, नोएडा
धर्मानन्द जोशी
कार्यकारी सहायक, मुद्रण
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी षिक्षा संस्थान, नोएडा

टाईपसैटिंग
मैसर्स शिवम ग्राफिक्स
रानी बाग, 431, ऋषि नगर
दिल्ली–110034

लिपिकीय सहयोग
सुश्री सुषमा, कनिष्क सहायक, शैक्षिक,
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान, नोएडा

अध्यक्ष का संदेश .....

प्रिय अधिगमकर्ता,

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत एक स्वायत्त संगठन है। माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर पर लगभग 2.02 करोड़ अधिगमकर्ताओं के साथ वर्तमान में यह विश्व की सबसे बड़ी मुक्त विद्यालयी शिक्षण प्रणाली है। राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान के पास अपने शैक्षिक एवं व्यावसायिक कार्यक्रमों के लिए देश में और उसके बाहर 15 से अधिक क्षेत्रीय केंद्रों, 2 उपकेंद्रों और 5000 अध्ययन केंद्रों का राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय तन्त्र है। यह अधिगमकर्त्ताओं को मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से केंद्रिक गुणवत्ता-शिक्षा, कौशल विकास और प्रशिक्षण का उपागम उपलब्ध कराता है। इसके कार्यक्रमों का वितरण मुद्रित सामग्री के माध्यम से मुखाभिमुख शिक्षण से युग्मित, सूचना एवं संचार तकनीकि, श्रव्य-दृश्य कैसेट्स, आकाशवाणी प्रसारण, दूरदर्शन प्रसारण आदि से अनुपूरित होता है।

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान को प्रारंभिक स्तर पर अप्रशिक्षित शिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिए अधिकार संपन्न किया गया है। प्रारम्भिक शिक्षा डिप्लोमा कार्यक्रम के लिए प्रशिक्षण प्रस्ताव राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान द्वारा उस क्षेत्र में कार्यरत अन्य अभिकरणों के सहयोग से विकसित किया गया है। यह संस्थान शिक्षा का अधिकार कानून 2009 के अनुसार विभिन्न राज्यों में अप्रशिक्षित अंत:सेवी शिक्षकों के लिए प्रारंभिक शिक्षा कार्यक्रम में एक बहुत ही नवीन एवं चुनौतीपूर्ण द्वि-वर्षीय उपाधि प्रदान करता है।

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान के प्रारंभिक शिक्षा डिप्लोमा कार्यक्रम के इस उपाधि पाठ्यक्रम में आप सबका स्वागत करते हुए मुझे सुखानुभूति हो रही है। मैं आपके राज्य के बच्चों के प्रारंभिक-शिक्षा में योगदान के लिए आपका आभार व्यक्त करता हूं। शिक्षा के अधिकार कानून 2009 के अनुसार सभी शिक्षकों के लिए व्यावसायिक रूप से प्रशिक्षित होना अनिवार्य हो गया है। हम समझते हैं कि एक अध्यापक के रूप में आपका अनुभव, एक अच्छा शिक्षक होने के लिए आवश्यक अपेक्षित कौशल आपको पहले ही प्रदान कर चुका है। चूंकि कानून द्वारा अब यह अनिवार्य है अत: आपको यह कार्यक्रम पूर्ण करना पड़ेगा। मैं आश्वस्त हूं कि आपके द्वारा अब तक संचित ज्ञान और अनुभव निश्चय ही आपको इस कार्यक्रम में सहयोग प्रदान करेगा।

प्रारम्भिक शिक्षा डिप्लोमा कार्यक्रम में प्रशिक्षण मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा विधि के माध्यम से दिया जाता है और एक शिक्षक के रूप में आपके नियमित कार्य को बाधित हुए बिना आपको पेशेवर रूप से प्रशिक्षित होने का विस्तृत अवसर प्रदान करता है। विशेष रूप से आपके उपयोग के लिए विकसित स्व-अनुदेशात्मक सामग्री आपको सेवा के लिए योग्य होने के अतिरिक्त आपकी समझ सृजित करने और एक अच्छा शिक्षक होने में सहायक होनी चाहिए।

इस महान प्रयत्न में शुभकामनाओं सहित!

एस.एस. जेना

अध्यक्ष

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान

खंड प्रस्तावना

विद्यार्थी के रूप में आप खण्ड दो: सामाजिक विज्ञान: अवधारणाएं एवं संबंधित विषय का अध्ययन करेंगे। इस खण्ड में इतिहास, भूगोल तथा राजनीति विज्ञान/अर्थशास्त्र/सामाजशास्त्र के एकीकृत विषय के रूप में सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन से संबंधित तीन इकाईयां है। प्रतयेक इकाई भागों एवं उपभागों में विभाजित है। खण्ड-एक में आप सामाजिक विज्ञान की प्रकृति तथा पाठ्यचर्या में सामाजिक विज्ञान का स्थान का अध्ययन कर चुके हैं।

इकाई-तीन

यह इकाई आपको प्रारंभिक स्तर पर इतिहास का अर्थ, इसके तत्व तथा प्रकृति के बारे में चर्चा करने हेतु सक्षम बनाएगी। साथ ही साथ सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम में इतिहास के शिक्षण के महत्व का वर्णन करने के योग्य हो सकेंगे। आप भूतकाल को समझने हेतु ऐतिहासिक उपागम को समझ सकेंगे तथा अवधारणा मानचित्र को विकसित कर सकेंगे।

इकाई-चार

यह इकाई आपको भूगोल के सीखने-सिखाने के उद्देश्य, भौगोलिक प्रतिबिम्ब, भूगोल शिक्षण के विभिन्न उपागम एवं भूगोल के क्षेत्रों को समझने में मदद करेगी। साथ ही साथ आप उच्च प्राथमिक स्तर पर भूगोल के शिक्षण के तर्क को समझ सकेंगे तथा भूगोल में पाठ योजना बनाने के योग्य हो सकेंगे।

इकाई-पाँच

यह इकाई आपको प्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान में सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन से संबंधित प्रत्ययों के बारे में जानकारी प्रदान करेगी। आप राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र तथा समाजशास्त्र में सामाजिक वैज्ञानिकों द्वारा अपनायी गयी विभिन्न पद्धतियों/उपागमों की चर्चा कर सकेंगे। आप सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन को सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या के एक हिस्से के रूप में समझ सकेंगे तथा संबंधित विषय वस्तु के लिए पाठ योजना तैयार कर सकेंगे।

पाठ्यक्रम-509: मानचित्र

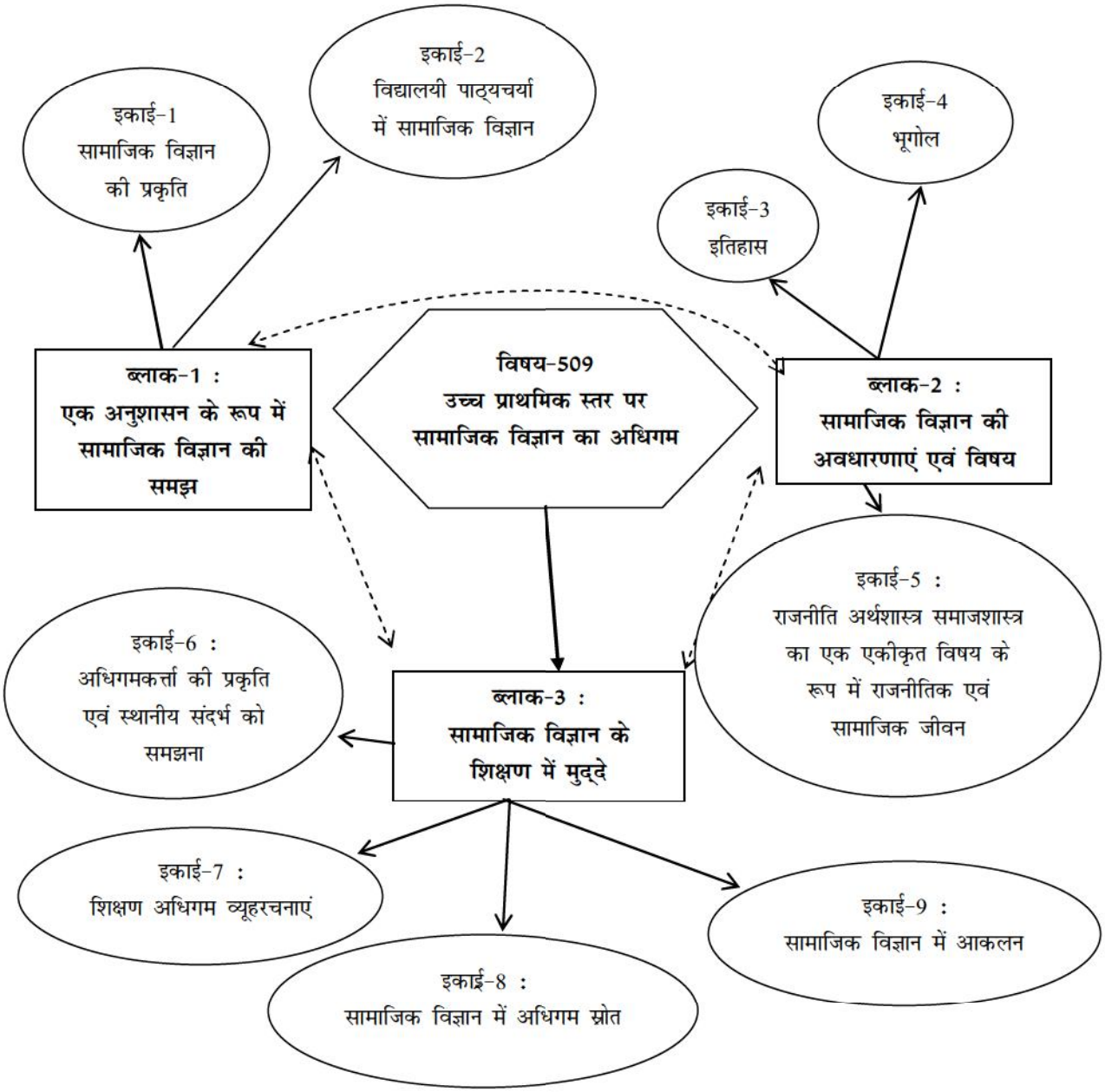

श्रेय अंक (4=3+1)

ब्लॉक	इकाई	इकाई का नाम	सैद्धान्तिक अध्ययन अवधि (घंटों में)		प्रयोगात्मक अध्ययन
			विषय-वस्तु	क्रियाकलाप	
ब्लॉक-1 एक अनुशासन के रूप में सामाजिक विज्ञान की समझ	**इकाई 1**	सामाजिक विज्ञान की प्रकृति	3	2	स्थानीय संदर्भों में वर्तमान सामाजिक घटनाओं एवं संबंधित चुनौतियों का अध्ययन
	इकाई 2	विद्यालयी पाठ्यचर्या में सामाजिक विज्ञान	4	2	μ जिला/राज्य में धर्मनिरपेक्षता से संबंधित समस्याओं का अध्ययन μ स्थानीय संदर्भों में जाति एवं जेंडर से संबंधित विभेदों का अध्ययन
ब्लॉक-2 सामाजिक विज्ञान की अवधारणाएं एवं विषय	**इकाई 3**	इतिहास	5	3	विभिन्न प्रकरणों पर अवधरकों का मानचित्रण
	इकाई 4	भूगोल	5	3	किसी एक प्रकरण पर पाठयोजना विकसित करना
	इकाई 5	राजनीति विज्ञान/अर्थशास्त्र/ समाजशास्त्र का एक एकीकृत विषय के रूप में सामाजिक और राजनीतिक जीवन	5	3	समाजिक विज्ञान के सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन पक्ष से संबंधित किसी प्रकरण पर पाठ योजना का विकास
ब्लॉक-3 सामाजिक विज्ञान के शिक्षण में मुद्दे	**इकाई 6**	अधिगमकर्त्ता की प्रकृति एवं स्थानीय संदर्भ को समझना	5	3	अपने जिले की धर्मिक एवं भाषायी विविधता का अध्ययन
	इकाई 7	शिक्षण अधिगम व्यूह रचनाएं	6	4	μ अपने सहकर्मी की सामाजिक विज्ञान की कक्षा का दौरा कीजिए एवं शिक्षण के दौरान बाल केन्द्रित विशेषताओं को सूचीबद्ध करना μ किसी एक अवधरणा पर अवधरणा मानचित्रा का विकास
	इकाई 8	सामाजिक विज्ञान में अधिगम स्रोत	6	4	ग्रापफ, चार्ट तथा कार्टून बनाना तथा उनके उपयोग से प्रदशर्नी तैयार करना।
	इकाई 9	सामाजिक विज्ञान में आकलन	4	2	कक्षा–VI के विद्यार्थियों के प्रगति विवरण की व्याख्या करना
		शिक्षण	18	&	
		योग	62	28	30
		कुल योग = 62+ 28+ 30 = 120 घण्टे			

ब्लॉक-2
सामाजिक विज्ञान की अवधारणाएं एवं विषय

इकाई 3 : इतिहास

इकाई 4 : भूगोल

इकाई 5 : राजनीति विज्ञान/अर्थशास्त्र/समाजशास्त्र का एक एकीकृत विषय के रूप में सामाजिक और राजनीतिक जीवन

विषय सूची

क्रम. सं.		*पाठ का नाम*	*पृष्ठ संख्या*
1.	इकाई 3 :	इतिहास	1
2.	इकाई 4 :	भूगोल	25
3.	इकाई 5 :	राजनीति विज्ञान/अर्थशास्त्र/समाजशास्त्र का एक एकीकृत विषय के रूप में सामाजिक और राजनीतिक जीवन	55

इकाई-3 इतिहास

संरचना

3.0 प्रस्तावना

3.1 अधिगम उद्देश्य

3.2 इतिहास का अर्थ

3.3 इतिहास की प्रकृति

3.4 प्राथमिक स्तर पर इतिहास की विषय वस्तु

3.5 सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम में इतिहास शिक्षण का महत्त्व

3.6 भूतकाल को समझने के ऐतिहासिक उपागम

3.7 प्राथमिक स्तर पर इतिहास के दो अध्यायों की अवधारणा निर्माण योजना

3.8 सारांश

3.9 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

3.10 अन्त्य इकाई अभ्यास

3.0 प्रस्तावना

पिछले अध्याय में, आप सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम का एक आवश्यक घटक-भूगोल का अध्ययन कर चुके हैं (इसी खंड के इकाई-3 से)। यह इकाई इतिहास के अर्थ और प्रकृति का वस्तुत: (मूल रूप से) वर्णन करता है। इस एकक में आगे सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या की संकल्पना में इतिहास शिक्षण के महत्त्व, विषय वस्तु का संक्षेप में वर्णन किया गया है। तदोपरान्त इस इकाई में सामाजिक विज्ञानिकों द्वारा भूतकाल को समझने के लिये अपनायी जाने वाली प्रणालियों पर प्रकाश डाला गया है और मापन तकनीक द्वारा ऐतिहासिक घटनाओं की व्याख्या किस प्रकार की जाती है, से भी आपको अवगत कराया गया है।

3.1 अधिगम उद्देश्य

इस एकक के अध्ययन के पश्चात्, आप

- इतिहास के अर्थ का वर्णन;
- इतिहास की प्रकृति का वर्णन;

- प्राथमिक स्तर पर इतिहास की विषय वस्तु का औचित्य निर्धारण;
- वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम में इतिहास के महत्त्व का वर्णन;
- भूतकाल के अनुसंधान तथा दूसरों के साथ भूतकाल की खोजों को साझा करने में इतिहासकारों की भूमिका का वर्णन; और
- संकल्पना रूपरेखा के माध्यम से ऐतिहासिक तथ्यों की सूचनाओं, विचारों और युक्तियों का वर्णन कर सकेंगे।

3.2 इतिहास का अर्थ

आपने एलेक्ज़ेन्डर के गुरु अरस्तु के बारे में अवश्य पढ़ा होगा। उस का जन्म ग्रीस में हुआ था। क्या आप जानते हैं कि ग्रीक लोग ज्ञान और बुद्धिमत्ता (विवेक) के महान जिज्ञासु थे? एक विषय जो उनके ज्ञान और विवेक में जुड़ा वह इतिहास था अंग्रेजी शब्द 'हिस्ट्री' का निर्माण ग्रीक 'संज्ञा शब्द 'हिस्टोरिया' से हुआ है, जिस का अर्थ है अन्वेषण, अनुसंधान, खोजना या जानकारी। मनुष्य के भूतकाल के बारे में अन्वेषण या अनुसंध ान द्वारा अधिगम को बाद में प्राचीन ग्रीस इतिहासकारों, हिरोडॉटस (484 B.C.-425 B.C.) और थूसिडाइडस (460 B.C. - 401 B.C.) के द्वारा एक में विकसित किया गया। हिरोडॉट्स को आमतौर से इतिहास के जनक के रूप में जाना जाता है। इन्होंने ग्रेसियो-पर्शियन युद्ध के बारे में लिखा जिसमें सूचनाओं का भंडार था विशेषत: प्राचीन मिश्र और पर्शियाा से संबंधित।

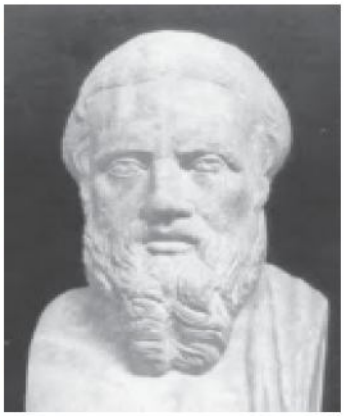

हिरोडॉटस
(484 B.C.-425 B.C.)

टिप्पणी

थुसिडाइट्स ने इस विषय पर वैज्ञानिक दिशा विकसित की। इनहोंने पेलोपनेशियन युद्ध को विशुद्ध रूप से तथ्यात्मक आधार पर लिखा और कारण और प्रभाव के संबंध को दर्शाया।

थुसिडाइडस का चित्र (ई. 460–ई. 401 ई.पू.) पेलोपनेशियन युद्ध का इतिहास, उन्होंने तथ्यों को केंद्र में रखा हैनरी जॉनसन (1969) के शब्दों में ''इतिहास घटित हुयी घटनाओं का विस्तृत विवरण है।'' इस परिभाषा से यह सुस्पष्ट हो जाता है कि इतिहास का मुख्यत: संबंध (व्यवहार) भूतकाल में घटित घटनाओं से है। इतिहास में घटनाओं का विवरण मात्र है।

थॉमस कार्लाइल (1895), फ्रांस की क्रांति का एक प्रसिद्ध इतिहासकार इतिहास को ''महान व्यक्तियों के जीवन चरित्र'' और मानव उपलब्धि, विशेषत: महान व्यक्तियों के प्रमाणिक लेखों के रूप में देखता है। किसी एक व्यक्ति का कोई एक नैतिक गुण या कार्य, कई बार एक पूरे गांव का, एक पूरे नजर का, या पूरे देश का उद्धार कर यश और कीर्ति स्थापित कर देता है।

प्रो. रेनियर (1950), जब यह कहते हैं कि इतिहास समाज में रहने वाले मानवों की कहानी है। तब वह एक नया आयाम जोड़ देते हैं। एक नई संकल्पना जिसमें सामूहिक क्रियाकलाप, सृजनात्मक विचारों और समाजानुकूलन की सामूहिक प्रतिक्रियायें और सर्वहित में सेवा की इच्छा, अधिकतर प्रमुखता प्राप्त करते हैं।

प्रोफेसर मितलैंड (1989) ने हमारे ज्ञान को यह कहकर उन्नत किया कि मानव ने जो कुछ कहा और किया और उससे अधिक उन्होंने जो कुछ सोचा, वह इतिहास है।

प्रो. घोस (2007) के शब्दों में, ''इतिहास हमारे परिपूर्ण भूतकाल का आलेख और वैज्ञानिक अध्ययन है।''

उपरोक्त सभी विद्वानों में अर्नेस्ट बर्नहेम (1889) की परिभाषा अतिमहत्त्वपूर्ण है, जो कहते हैं इतिहास एक विज्ञान है जो सामाजिक प्राणी के रूप में मानव के व्यक्तिगत, आदर्शरूप और सामूहिक क्रियाकलाप के व्युत्पत्ति के देश और काल द्वारा निर्धारित, तथ्यों को उनके मानो वैज्ञानिक–भौतिक घटनाओं के प्रसंग में अन्वेषण और प्रस्तुत करता है। यह परिभाषा ऐतिहासिक अनुसंधानों के सभी मूलभूत क्रियाकलापों को स्पर्श करती है। यह एक विज्ञान है क्योंकि यह उन घटित घटनाओं को जो मात्र कपोल कल्पित या काल्पनिक नहीं हैं, वरन् जीवन की यथार्थता पर आधारित घटनाक्रों और घटनाओं के सुव्यवस्थित ज्ञान को मूर्त रूप प्रदान करता है। दूसरे,

जीवन के तथ्यों को उन के उचित संदर्भ में सदाशय से प्रस्तुत करना इसका प्रमुख कार्य है। किन्तु इस से भी अधिक महत्त्वपूर्ण कार्य कारण की व्याख्या, समस्या ढूंढना, मुद्दे को इस की गहराई से जांचना, और तथ्यों का इसके मूल से अंतिम सिरे तक वर्णन करना है। मूल बिंदु का निर्धारण मानसिक और पदार्थिक घटकों के एक नियत समय और नियत स्थान पर संयोजन से किया जाता है। इस प्रकार अनुसंधानित तथ्यों, को व्यष्टिक क्रियाकलापों के संदर्भ में मानव की स्थिति की उन्नति या परिवर्तन से संबंधित किया जाता है।

यद्यपि भारत में इतिहास की एक मौखिक परम्परा रही है। प्राचीन भारतीय नायकों की उपलब्धियों को आख्यान और गाथाओं के रूप में सुरक्षित रखा जाता था। भाट तथा अन्य लोग लोगों के कार्यों को एवम् अन्य घटनाओं को अपने हृदय से याद रखते थे, क्योंकि पुस्तक लेखन और छपाई कला का लोगों को ज्ञान नहीं था। प्राय: ऐतिहासिक घटनायें साहित्यिक, कलात्मक, राजनैतिक और धार्मिक प्रयोजन की होती थीं। पुराण और अन्य भारतीय लेख व्यवस्थित तथा कालानुक्रमिक श्रृंखला में सुव्यवस्थित नहीं हैं। राजाओं तथा योद्धाओं की अतिश्योक्तिपूर्ण प्रशंसा की गई है। केवल ब्रिटिश शासनकाल की शिक्षा व्यवस्था के अंतर्गत भारत में इतिहास को विद्यालयी विषय के रूप में प्रस्तुत किया गया। इसलिये, बिल्कुल प्रारंभ में अधिकांश पुस्तकें ब्रिटिश विद्वानों द्वारा लिखी गयीं।

अंत में इतना कहना पर्याप्त होगा कि इतिहास मानव से संबंधित सभी सांसारिक घटनाओं से संबंध रखता है।

प्रगति जाँच-1

नोट– (i) नीचे दिये गये स्थानों में अपना उत्तर लिखिए।

(ii) अपने उत्तरों की तुलना एकक के अन्त में दिए गए उत्तरों से कीजिये।

1. दिये गये कोष्ठक में सत्य या असत्य बताइये।

   (a) अंग्रेजी शब्द 'हिस्ट्री' उत्पत्ति ग्रीक संज्ञा 'हिस्टोरिया' से हुआ है। ( )

   (b) पेलोपनेशियन युद्ध की कार्यवाहियां हेरोडोटस द्वारा लिखी गयी हैं। ( )

   (c) थुसिडाइटस को इतिहास के जनक के रूप में जाना जाता है। ( )

   (d) प्राचीन भारतीय नायकों की उपलब्धियों को आख्यानों और गाथाओं के रूप में सुरक्षित रखा जाता था। ( )

   (e) भारत में इतिहास को विद्यालयी विषय के रूप में अंग्रेजी शिक्षा व्यवस्था में प्रस्तुत किया गया था। ( )

2. इतिहास के अर्थ के संबंध में मुख्य निष्कर्षों को सूचीबद्ध कीजिए।

   .....

   .....

   .....

टिप्पणी

3. प्राचीन भारतीय उपलब्धियों को आख्यानों और गाथाओं के रूप में क्यों सुरक्षित रखा जाता था?

.....

.....

.....

3.3 इतिहास की प्रकृति

उपरोक्त विचार विमर्श के उपरान्त, इतिहास की सत्य प्रकृति को सूचीबद्ध करना हमारे लिए सरल होगा।

1. इतिहास मानवों का अध्ययन है : यह युगों से मानवों की उपलब्धियों और प्रयत्नों से सम्बद्ध है। युगों से हो रहे मानव सभ्यता के विकास की मोहक कहानी को आरेखित करता है। उदाहरण के लिये, सिंधु घाटी सभ्यता, आर्य सभ्यता, द्रविड़ सभ्यता आदि, भूतकाल में सुव्यवस्थित समाज की स्थापना के प्रयासों को प्रदर्शित करती हैं।

2. इतिहास वर्तमान की व्याख्या करता है : आपके मस्तिष्क में एक प्रश्न उभर सकता है कि भूतकाल से वर्तमान तक का विकास कैसे हुआ। अपने दैनिक जीवन से एक उदाहरण लेते हैं–वर्तमान परिवहन व्यवस्था जंगल में प्राचीन मानव के लुढ़कते लकड़ी द्वारा तथाकथित लट्ठे के क्रमिक विकास का परिणाम है। इस विकास का अध्ययन इतिहास का कार्य है। चयनित घटनाओं के बीच कारणिक संबंधों का पता लगाने पर घटनाओं की प्रकृति तथा नियमों के निर्धारण में सहायता मिलती है। इतिहासकारों का कार्य भूतकाल का वर्तमान पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना है।

3. ऐतिहासिक घटनायें सतत एवं युक्तिसंगत है : किसी भी मानवीय घटना की उत्पत्ति शून्य से नहीं हुयी है : ये सभी पहले की घटनाओं पर आधारित होती हैं। क्रमशः, नई घटनायें पूर्व में घटित घटनाओं के जीवित खंडों से अन्तर्बद्ध और परस्पर अधीन घटनाओं के साथ ही उभरती हैं और प्रगति करती हैं। उदाहरण के लिये, भारत में (1857) सैन्य विद्रोह की असफलता ने भारत में क्षेत्रीय स्तर पर विभिन्न सशस्त्र विद्रोहों को उभार दिया, जिन्होंने आगे राष्ट्रीय आंदोलन के उदय में और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के गठन में योगदान किया।

4. इतिहास भूतकाल तथा वर्तमान के मध्य कभी न समाप्त होने वाला संवाद है: जैसा कि हम जानते हैं कि हमें भूतकाल का ज्ञान नहीं था और प्रत्येक इतिहासकार अतीत का हिस्सा खोज कर या तो नई जानकारी जोड़कर या फिर एक नयी व्याख्या देकर हमें वास्तविकता के और अधिक निकट लाने का प्रयास करता है। ये सभी, इतिहासकार, जो कि वर्तमानकाल में है और घटनायें, जो कि भूतकाल में हैं, के बीच अंतरंग संवाद का समावेश करता हैं। जैसा कि वस्तुस्थिति उनके समक्ष प्रस्तुत नहीं है, तब वे या तो प्राथमिक अथवा द्वितीय स्रोतों जैसे वैयक्तिक वृतान्तों (व्यक्तिगत डायरियों), साक्ष्यों या आलेखों, या सम्बद्ध

व्यक्ति के अतिरिक्त किसी अन्य व्यक्ति द्वारा तैयार किये गये लेखों, अथवा व्यक्तियों जिन्होंने घटना विशेष में भागीदारी की हो या प्रेक्षण किया हो के माध्यम से सूचना एकत्र कर अपनी कल्पना शक्ति का प्रयोग विषय प्रकाशन के लिये करके भूतकाल से संवाद स्थापित करते हैं। भूतकाल के मृत पड़े आंकड़ों को इतिहासकारों की तर्कसम्मत और कुशग्रबुद्धि की शक्तियों के माध्यम से पुन: जीवंत किया जाता है।

5. भविष्य के अनुमान के उद्देश्य से भूतकाल की व्याख्या इतिहास है : इस अर्थ में इतिहास भविष्य की सार्थक तैयारी के रूप में भूतकाल को प्रदर्शित करता है। देश और काल के मध्य ऐतिहासिक घटनायें घटित होती हैं। ऐतिहासिक घटनाओं की प्रकृति का प्रेरक शक्तियों से अनौपचारिक संबंध मानवीय प्रकृति की भांति ही है। उदाहरण के लिये, भारत में साम्प्रदायिक स्थितियों के ज्ञान के आधार पर चर्चिल ने भविष्यवाणी किया कि ब्रिटिश शासन के समय से पूर्व देश से वापसी के परिणामस्वरूप रक्त की धारा बहेगी। और ऐसा हुआ भी। प्रत्येक देश की आधुनिक कूटनीति तथा विदेश नीति भूतकाल के अनुभवों को ध्यान में रखकर निर्धारित की जाती है।

6. ऐतिहासिक शक्तियां रेखीय होने के साथ-साथ चक्रीय होता हैं: (इतिहास अभिव्यक्ति का रेखीय दृष्टि कोण) इतिहास अज्ञात भूतकाल से ज्ञात वर्तमान में होकर अज्ञात भविष्य में जाने वाली सरल रेखा है। आगे, यह कहा जाता है कि इतिहास में सघन निरंतरता है और जो इसे एक सिरे से दूसरे सिरे तक ठोस पाइप (नली) की तरह बनाती है। इतिहास का चक्रीय दृष्टिकोण यह बताता है कि इतिहास वृत्ताकार गति करता है। इसका एक आरंभ बिंदु है, और तत्पश्चात यह उच्चतम बिंदु तक पहुंचने के लिये ऊर्ध्व गति करता है। इसके बाद यह अधोगति उस निम्नतम बिंदु तक करता है जहां पहुंच कर यह विलुप्त हो जाता है। सभी संस्कृतियों के उत्थान और पतन इस पैटर्न को स्पष्ट करते हैं। उदाहरण के लिये, सभी महान सभ्यतायें जैसे मिस्र, बेबीलोनियन, सिंधु घाटी, हड़प्पन, चीनी, ग्रीक, रोमन, इस्लामिक, यूरोपियन आदि, इस सिद्धांत का विषय रही हैं।

7. इतिहास का ज्ञान अपूर्ण है: इतिहास की प्रकृति को और भली प्रकार समझने के लिये, हमें ऐतिहासिक विधियों विशेषकर इन की कमियों का निकट से अवलोकन करना होगा। एक ऐतिहासिक घटना के बारे में सभी प्रासंगिक सूचनाओं की पहचान करने के साथ ही विधि का आरंभ होता है। क्योंकि इतिहासकार भूतकाल का अध्ययन सीधे नहीं कर सकते, इसलिये उन्हें उपलब्ध साक्ष्यों पर ही विश्वास करना चाहिये। और यहां हमें वास्तविक इतिहास और ज्ञात इतिहास में स्पष्ट भेद करना चाहिये। ऐतिहासिक घटना के अन्तर्गत देशकाल में वास्तव में घटित सभी चीजों का अध्ययन वास्तविक इतिहास है, जबकि कठिनाई से अल्पमात्रा में शेष बचे साक्ष्य ज्ञात इतिहास है। लोगों की मृत्यु के साथ ही उनकी स्मृति भी समाप्त हो जाती हैं। कुछ मानवीय शिल्पकृतियां सदियों तक जीवित रहती हैं। हमारे पास कई ऐतिहासिक कालों का कोई भी साक्ष्य नहीं है। इसलिये; वास्तविक सत्य की तुलना में ज्ञान भूतकाल अत्यल्प है।

टिप्पणी

8. इतिहास परिवर्तनशील है : इतिहास स्थिर नहीं है; नवीन खोजों के साथ-साथ नियमित रूप से हमारे इतिहास के दृष्टिकोण में परिवर्तन हो रहा है; और यह हमारे पूर्व निर्मित ज्ञान पर संदेह उत्पन्न करता है। सन् 1900 से पूर्व ट्रॉजन युद्ध को कल्पित माना जाता था; मचु पिचु और चीनी टेराकोटा सेना अज्ञात थे। ऐतिहासिक घटनाओं के प्राचीन दृष्टिकोण को चुनौती देने के लिये नवीन व्याख्यायें समय-समय पर आती रही हैं। क्या विंस्टन चर्चिल अपने युग के एक महान शासक थे या आधुनिक प्रस्तावित विचार के अनुसार, अल्प प्रशंसनीय (लोकप्रिय) व्यक्ति थे? ऐसे नवीनतर, वैकल्पिक वर्णनों को संशोधनवादी इतिहास कहा जाता है। यहां तक कि एक लोकप्रिय चलचित्र जनजागरण कर ऐतिहासिक भूतकाल के प्रति दृष्टिकोण में परिवर्तन ला सकता है।

इतिहास की प्रकृति बहुत जटिल है। यह इसकी बहुत सी व्याख्यायें करती हैं। इतिहास की कोई भी एक शाखा इस के वृहत्त प्रतियमान की एक झलक से कुछ अधिक नहीं है। फिर भी, इतिहास की गतिशील प्रकृति के संबंध में कोई विवाद नहीं है, सदैव परिवर्तनशील जीवन नाट्य से जिसका कुछ उद्देश्य और अर्थ है, से इसका सीधा संबंध है।

प्रगति जांच-2

नोट: (i) नीचे दिये गये स्थान में अपना उत्तर लिखिये।

(ii) इकाई के अंत में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर की तुलना कीजिये।

1. इतिहास की प्रकृति क्या/कैसी है?

.....

.....

.....

2. ऐतिहासिक शक्तियां रेखीय और रूप से चक्रीय कैसे हैं, वर्णन कीजिये।

.....

.....

.....

3. इतिहास के प्राथमिक तथा द्वितीयक स्रोतों में विभेद कीजिये।

.....

.....

.....

टिप्पणी

3.4 प्राथमिक स्तर पर इतिहास की विषयवस्तु

जैसा आप जानते हैं, कक्षा पंचम तथा इतिहास पर्यावरण अध्ययन का एक खंड है। पर्यावरण अध्ययन के कक्षा I-V तक के संशोधित पाठ्यक्रम ने विद्यार्थी का ध्यान देश, काल और सामाजिक जीवन तथा की ओर ध्यान आकर्षित करने का प्रयास किया है और इसे उसके चारों ओर की दुनिया को देखने और समझने के उनके तरीकों से जोड़ने का प्रयास किया है। कक्षा VI-X तक, सभी विद्यार्थी इतिहास को सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या के घटक के रूप में पढ़ेंगे।

बाल्यावस्था के अंत और किशोरावस्था के आरंभिक वर्षों में प्रवेश करते समय विद्यार्थी के बौद्धिक विकास में महत्त्वपूर्ण गुणात्मक परिवर्तन होंगे। पश्च बाल्यावस्था एक समय है जो बच्चे के आंतरिक जीवन में पारस्परिक तालमेल द्वारा प्रदर्शित होता है। बौद्धिकरूप से, अधिकांश विद्यार्थी इस काल में पियाजे की ''मूर्त संक्रिया अवस्था'' में प्रवेश करते हैं, और वे इस अवस्था में तार्किक चिंतन की प्रारंभिक अवस्था में परिवर्तनशीलता से जूझते है। इस अवस्था में विद्यार्थियों का चिंतन उत्तरोत्तर अमूर्त और बहुआयामी होता जाता है। वे आंकड़ों के विविध समूहों का तुलनात्मक विश्लेषण, विभेदाधारित व्याख्या, निगमनात्मक विश्लेषण द्वारा परिकल्पनाओं का परीक्षण और विकास तथा आंकड़ों की अभिप्राप्ति करने योग्य होते हैं। विद्यार्थियों की रुचियों तथा ध्यान को ये शक्तिशाली विश्लेषणात्मक प्रक्रियायें चुनौती देते हैं। वे भारतीय सभ्यता के विकास और उत्पत्ति का रुचिपूर्वक अनुकरण कर सकते हैं। किन्तु उन के कौशलों को, विविध मूर्त निर्देशात्मक उपकरणों, मानचित्रों, आंकड़ों की प्रस्तुत हेतु द्वि और त्रिविमीय चार्ट और समय रेखा के द्वारा समर्थन दिया जाना चाहिये। ऐसी निर्देशात्मक उपकरणों की सहायता से विद्यार्थी सूक्ष्म तुलना तथा वैद्य अनुमान लगाने योग्य बन सकेंगे।

कक्षा VI से VII तक इतिहास की विषय वस्तु प्राचीन भारतीय सभ्यता पर केंद्रित रहती है और विद्यार्थियों को उनके देश के विकास और विश्व पटल पर इसकी भूमिका के संबंध में व्यापक समीक्षा प्रदान करती है। विद्यार्थी सीखते हैं कि किस प्रकार भूतकाल के सबक का, वर्तमान और भविष्य के लिए विद्वतापूर्ण निर्णय लेने के लिए, उपयोग किया जा सकता है। यह घटक इस प्रकार विद्यार्थियों में इतिहास के महत्त्व के संबंध में ऐतिहासिक संवेदनशीलता और जागरूकता के विकास में सहायता करता है। अनुमान है कि विद्यार्थियों को भूतकाल के आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक तथ्यों के समूह के इतिहास का आवश्यक सामान्य अध्ययन ही नहीं अपितु उन्हें ऐतिहासिक चिंतन भी सीखना होगा अर्थात् ऐतिहासिक साक्ष्य आधारित चिंतन। विद्यार्थियों को प्रक्रियाओं और घटनाओं के बीच, एक स्थान के विकास से अन्य स्थान के बीच, विभिन्न समूहों और समाजों के इतिहास के बीच की कड़ी का अवलोकन करने, उनके मध्य अन्तसंबंध स्थापित करने की क्षमता ग्रहण करनी होगी। इन तीन वर्षों में (VI-VIII) आरंभिक काल से वर्तमान काल तक का भारतीय इतिहास प्राथमिक रूप में केंद्र में रहेगा। प्रत्येक वर्ष एक कालानुक्रमि समयावधि का अध्ययन किया जायेगा। उनके अन्तर्निहित सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक प्रक्रियाओं को समझने का प्रयास किया जायेगा। इस प्रकार, इतिहास अध्ययन विद्यार्थियों को सांस्कृतिक विविधता, तकनीकी, आर्थिक, राजनैतिक

टिप्पणी

और सामाजिक तीव्र परिवर्तन गुणों वाले जटिल समाज में उत्तरदायी नागरिकों के निर्माण और समाज को योगदान दे सकने के लिये तैयार करता है।

उच्चतर माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (CBSE 2006) द्वारा कक्षा VI से VIII के लिये इतिहास पाठ्यचर्या के शीर्षक तथा प्रमुख उपशीर्षक निम्न प्रकार हैं:

कक्षा-VI : हमारा अतीत

कब, कहां और कैसे

- अध्ययन के लिये समय सीमा
- भौगोलिक रूपरेखा
- स्रोत

आरंभिक समाज

- शिकार और सामूहिक जीवन, इसके निहितार्थ
- पाषाण औजारों का परिचय और उनका प्रयोग
- केस स्टडी : दक्षिणी भारत

प्रथम कृषक और चरवाहे

- कृषि और चरवाह के निहितार्थ
- फसलों, पशुओं, घरों, औजारों, बरतनों, शवाधानों आदि के पुरातात्विक प्रमाण

आदि के पुरातात्विक प्रमाण

- केस स्टडी: उत्तरी-पश्चिमी और उत्तरी-पूर्वी भारत

प्रथम (आरंभिक) नगर

- हड़प्पा सभ्यता की बस्ती के प्रतिरूप
- विशिष्ट वास्तुशिल्पीय आकृतियां
- शिल्प उत्पादन
- नगरीकरण का अर्थ
- केस स्टडी : उत्तरी पश्चिमी भारत

जीवन के विभिन्न प्रकार

- वेद और वे हमें क्या कहते हैं
- समकालीन उपनिवेश
- केस स्टडी : उत्तरी पूर्वी और दक्षिणी भारत

नवीन विचार

- उपनिषद
- जैनवाद
- बौद्धवाद

प्रथम साम्राज्य

- साम्राज्य का विस्तार
- अशोक
- प्रशासन

नगरों और गांवों में जीवन

- द्वितीय नगरीकरण
- कृषिक तीव्रीकरण
- केस स्टडी : तमिलनाडु

दूरदराज के क्षेत्रों से संबंध

- संगम पाठ और लम्बी दूरी के विनिमय
- प्रस्तावित क्षेत्र : तमिल क्षेत्र

दक्षिणी पूर्वी एशिया और पश्चिमी विस्तार

- सुदूर प्रदेशों के विजेता : उत्तरी पश्चिमी और पश्चिमी भारत
- बौद्ध धर्म का प्रसार : उत्तरी भारत से मध्य एशिया

राजनैतिक विकास

- गुप्त साम्राज्य और हर्ष वर्धन
- पल्लव वंश और चालुक्य वंश

संस्कृति और विज्ञान

- पुराणों सहित साहित्य, महाकाव्य, संस्कृत और तमिल में हुए अन्य लेखन कार्य

प्रारंभिक राज्य

- जनपदों के महाजनपद
- केस स्टडी : बिहार, मगध और वाजी संधि

कक्षा-VII : हमारा अतीत-II

टिप्पणी

कब, कहां और कैसे

- प्रायद्वीप और इसके क्षेत्र का मानचित्र तथा व्याख्या करने वाले शब्द (पद)
- काल अवधि की रूपरेखा और मुख्य विकास
- स्रोत संबंधी सूक्ष्म विचार विमर्श

नवीन राजा और राज्य

- 700–1200 B.C. के मध्य राजनैतिक विकास की रूपरेखा
- केस स्टडी : भूमि विषयक सहित चोल राजा
- तमिल क्षेत्र में विस्तार

दिल्ली के सुल्तान

- एक अवलोकन (दृष्टि में)
- दरबार, सामंतीप्रथा और भूमि नियंत्रण काम महत्त्व
- केस स्टडी : तुगलक

एक साम्राज्य का सृजन

- मुगल साम्राज्य की वृद्धि की एक रूपरेखा
- अन्य शासकों के साथ संबंध, प्रशासन और न्यायालय
- भूमि विषयक संबंध
- केस स्टडी : अकबर

शक्ति के रूप में वास्तु शिल्प : किले और पवित्र स्थल

- देश के विभिन्न भागों में स्थित विविध वास्तुशिल्पीय स्मारक
- केस स्टडी : शाहजहां का वास्तु शिल्प संरक्षण

कक्षा-VIII : हमारा अतीत-III

कब, कहां और कैसे

- मठ और मंदिर, शास्त्र, चित्रकारी (अजन्ता); विज्ञान आदि
- साहित्य वास्तुशिल्प

नगर, व्यापारी, और शिल्पकार

- नगर केंद्रों की विविधता–दरबारी नगर
- तीर्थ यात्रा केंद्र, पत्तन और व्यावसायिक नगर
- केस स्टडी : हम्पी, मसूलीपट्टम, सूरत

सामाजिक परिवर्तन : घुमन्तु और बसी हुए समुदाय (जातियां)

- जन जातियों पर चर्चा, बंजारे और भ्रमणशील समूह
- जातीय ढांचे में परिवर्तन
- केस स्टडी : गौंड, होम का राज्य निर्माण

लौकिक आस्थायें और धार्मिक विवाद

- एक दृष्टि में आस्था-तंत्र, रस्में, तीर्थयात्रायें, संक्रमित मन
- केस स्टडी : कबीर

क्षेत्रीय संस्कृति का पल्लवन (उत्थान)

- एक दृष्टि में क्षेत्रीय भाषायें, साहित्य, चित्रकारी, संगीत
- केस स्टडी : बंगाल

अठारहवीं शताब्दी में नव राजनैतिक गठन

- प्रायद्वीप में स्वायत्तशासी और स्वतंत्र राज्य-एक दृष्टि में
- केस स्टडी : मराठा

स्त्रियां और सुधार

- काल अवधि एक दृष्टि में
- नवीन भौगोलिक वर्गीकरण का परिचय
- काल क्रम की रूपरेखा
- स्रोत का परिचय

उपनिवेशिक शक्तियों की स्थापना

- वाणिज्यीकीय और व्यापारिक-युद्ध
- क्षेत्र के लिये संघर्ष, भारतीय शासकों से युद्ध
- औपनिवेशी सेना और असैन्य लोगों में वृद्धि
- प्रशासन, क्षेत्रीय केंद्र बिंदु : तमिलनाडु

ग्राम्य जीवन और समाज

- उपनिवेशी कृषि नीतियां: उनका किसानों और जमींदारों पर प्रभाव
- (नकदी) व्यावसायिक फसलों की वृद्धि
- किसान विद्रोह : केंद्र बिंदु नील विद्रोही
- क्षेत्रीय केंद्र बिंदु : बंगाल और बिहार, बाद में विकसित पंजाब से कुछ तुलनायें

टिप्पणी

उपनिवेशवाद और जनजातीय समाज

- उन्नीसवीं शताब्दी में जनजातीय अर्थव्यवस्था और समाज में परिवर्तन
- जनजातीय विद्रोह : केंद्र बिंदु बिरसा मुंडा
- क्षेत्रीय केंद्र बिंदु : छोटा नागपुर और उत्तरी पूर्वी भारत

शिल्प और उद्योग

- उन्नीसवीं शताब्दी में हस्तशिल्प का पतन
- बीसवीं शताब्दी में औद्योगिक वृद्धि का सार संक्षेप

1857-58 की क्रांति

- सेना में विद्रोह और आंदोलन का विस्तार
- अभिजात्य और कृषक वर्ग की भागीदारी की प्रकृति : क्षेत्रीय केंद्र : अवध

शिक्षा और ब्रिटिश शासन

- नवीन शिक्षा प्रणाली-विद्यालय, पाठ्यक्रम, कॉलेज, विश्व विद्यालय, तकनीकी प्रशिक्षण
- स्वदेशी तंत्र में परिवर्तन
- राष्ट्रीय शिक्षा का विकास
- केस स्टडी : बड़ौदा, अलीगढ़
- सती, विधवा विवाह, बाल-विवाह और सहमति की आयु पर विमर्श (चर्चा)
- स्त्री दशा और स्त्री शिखा पर विभिन्न सुधारकों के मत
- क्षेत्रीय केंद्र बिंदु : महाराष्ट्र और बंगाल

जाति व्यवस्था को चुनौती

- जाति सुधारों के लिये तर्क, फुले, वीरसालिंगम, श्री नारायण गुरु, पेरियार, गांधी, अम्बेडकर के विचार
- समाज सुधारकों की क्रियाओं का कुपरिणाम और विविधायें
- क्षेत्र : महाराष्ट्र और आन्ध्र प्रदेश

उपनिवेशवाद और नगरीय परिवर्तन

- शहरों का पतन और नये शहरों का अविर्भाव
- उपनिवेशीय नीतियों और संस्थाओं के कुप्रभाव–नरगपालिकायें, जन सेवाएं, योजना, रेल मार्ग, पुलिस
- केस स्टडी : दिल्ली

कलाओं में परिवर्तन : चित्रकारी, साहित्य, वास्तुशिल्प

- नई तकनीकों और संस्थाओं का प्रभाव : कला विद्यालय, छापाखाना
- पाश्चात्य सिद्धांत प्रणाली और राष्ट्रीय कला
- रंगकलाओं में परिवर्तन-लोगों बीच संगीत और नृत्य का प्रवेश
- लेखन की नवीन विधायें
- नवीन वास्तुशिल्प
- केस स्टडी : मुंबई, चेन्नई

राष्ट्रीय आंदोलन

- 1870 से 1940 के मध्य हुए राष्ट्रीय आंदोलनों पर एक दृष्टि
- आंदोलनों में विविध रूझान, और विभिन्न सामाजिक समूहों की भागीदारी
- संवैधानिक परिवर्तनों की श्रृंखला
- केस स्टडी : खिलाफत आंदोलन से असहयोग आंदोलन तक

स्वातंत्रयोत्तर भारत

- 1947 से अब तक राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय विकास
- अन्य राष्ट्रों से संबंध
- भविष्य की ओर देखना

3.5 सामाजिक विज्ञान में इतिहास का महत्त्व

प्राथमिक स्तर पर हमें इतिहास का अध्ययन सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या में क्या करते हैं? इस प्रश्न के कई उत्तर हो सकते हैं। इस प्रश्न पर विस्तृत चर्चा करने से पहले हमें सामाजिक विज्ञान के सरोकारों के वृहत स्तर सूक्ष्म दृष्टिपात करना चाहिये। जैसा कि आप जानते हैं कि सामाजिक विज्ञान मनुष्य और समाज के संबंधों के अध्ययन से संबंध रखता है। यद्यपि एक ओर इस का अध्ययन मनुष्य और समाज के संबंधों के अपेक्षित ज्ञान और बोध में सहायता करता है, वहीं दूसरी ओर, बालकों को उनके समाज और देश की उन्नति में योगदान देने के लिए तैयार करने का उत्तरदायित्व का भी निर्वाह करता है। समाज विज्ञान-इतिहास के शिक्षक के रूप में हम चाहते हैं कि हमारे विद्यार्थी सामाजिक, आर्थिक, और राजनैतिक समस्याओं की जटिलताओं को समझें। हम चाहते हैं कि वे महत्त्वपूर्ण और महत्त्वहीन के बीच विभेद करने योग्य बन सकें। सामाजिक विज्ञान अनुशासन के द्वारा प्रदत्त ज्ञान विद्यार्थियों को कालान्तर में विचारों, घटनाओं, और व्यक्तियों द्वारा परिवर्तन लाने हेतु किए गये अंतभेर्दों की सराहना करने योग्य बनाता है, साथ ही मानव समाज में सतता बनाये रखने वाली परिस्थितियों और शक्तियों को पहचानने की

टिप्पणी

योग्यता प्रदान करता है। यदि यह सामाजिक विज्ञान के सरोकार हैं, तो अब ऐतिहासिक घटनाओं का शिक्षण कैसे मानव समाज और इस के संबंधों के अध्ययन में योगदान कर सकता है?

- प्रथम, इक्कीसवीं सदी में वैज्ञानिक और तकनीकी क्रान्तियों ने विश्व को समेट कर बहुत छोटा कर दिया है। पृथ्वी पर मानवता के पोषण और शांतिपूर्ण जीवन के लिये, विश्व के छोटे-बड़े देशों के बीच परस्पर सद्भावना और सहमति होना आवश्यक है। इसलिये, लोगों में एक दूसरे को और अच्छी तरह जानने की सामान्य इच्छा है। इस धारणा से इतिहास अध्ययन उनकी आवश्यकता पूर्ण करता है।

- द्वितीय, इतिहास को एक लौकिक चित्रपटल की तरह अन्य विषयों में सीखे गये तथ्यों की व्यवस्था करने के लिये प्रयोग करना तार्किक है। बालक के मस्तिष्क में विज्ञान और गणित, इतिहास से पृथक सीखे जाने वाले विषय हैं, तब भी इतिहास का सुनियोजित पाठ्यक्रम ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में वैज्ञानिक खोजों और गणितीय तकनीकों के अविष्कार में मदद कर सकता है। उदाहरण के लिये यातायात की कहानियां, और संचार के साधन, तथा औषधि और खाद्य निर्माण के यंत्र, बालक को गणित और विज्ञान को बेहतर रूप में समझना संभव हो सकता है।

- तृतीय, इतिहास शिक्षण से छात्रों में नैतिक मूल्यों का विकास होता है। यह बाल मस्तिष्क में सही और गलत के नैतिक मूल्यों का बीजारोपण करता है। यह हमारे बालकों में देशभक्ति को बढ़ावा देता है। तेजोमयी अतीत और सांस्कृतिक संपदा की विरासत के ज्ञान से उन्हें गर्व का अनुभव होगा, जो उनमें मातृभूमि के प्रति प्रेम की भावना उत्पन्न करेगा।

- चतुर्थ, इतिहास शिक्षण महापुरुषों के कार्यों के अध्ययन में बालकों की रुचि उत्पन्न करता है। यह रुचि उन्हें महान पुरुषों और नारियों की जीवन का अध्ययन करने में सहायता देती है। इस अध्ययन से, उन की भावनायें उच्च आदर्शों और मूल्यों की ओर निर्देशित हो जाती हैं।

- पंचम, इतिहास शिक्षण, अन्य देश काल में लोगों ने सत्य, न्याय और व्यक्तिगत उत्तरदायित्वों का निर्वाह करने संबंधी मूलभूत प्रश्नों का सामना कैसे किया को समझने में मदद करता है और वर्तमान में उपस्थित इन्हीं मुद्दों पर चिंतन करने में मदद करता है। मानवता के अध्ययन से और महान विचारकों के विचारों, प्रमुख धर्मों और सिद्धांतों, दार्शनिक, परम्पराओं के परीक्षण कर, हमारे विद्यार्थी कालान्तर में लोगों द्वारा किये गये संघर्षों, नैतिक मुद्दों, पर चिंतन कर विभिन्न मार्ग प्रकाशित करेंगे, वे वर्तमान की चुनौतियों पर विचार करेंगे।

- अन्तिम, यह हमारे बालकों की स्मृति, कल्पनाशीलता, और तर्क शक्ति प्राप्त करने में सहायता करता है।

प्रगति जांच-3

नोट : (i) नीचे दिये गये स्थानों में अपना उत्तर लिखिये।

(ii) इकाई के अंत में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तरों की तुलना कीजिये।

1. इतिहास बालकों में नैतिक और चारित्रिक मूल्यों का विकास किस प्रकार करना है?

.....

.....

.....

2. प्राथमिक स्तर पर इतिहास अधिगम द्वारा तीन सामाजिक मूल्यों को बताइये।

.....

.....

.....

3. ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में विज्ञान और गणित किस प्रकार सीखे जा सकते हैं?

.....

.....

.....

3.6 भूतकाल को समझने की ऐतिहासिक पद्धति

हम सभी इतिहास का अध्ययन इसकी अपनी वजह से करते हैं। हम अतीत के बारे में जानना चाहते हैं क्योंकि यह हमें चुनौतीपूर्ण, निराशायुक्त, उत्तेजक, हर्षित करने वाला, और हतोत्साहक लगता है। और हम सभी यह विश्वास करते हैं कि विभिन्न देशों और कालों के स्त्रियों और पुरुषों के जीवन से हम अपने अनुभवों का विस्तार करते हैं, इतिहास हमें स्वयं के तथा दूसरों के बारे में बहुमूल्य चीजों से अवगत कराता है। अब आपको यह जानना रोचक लगेगा कि इतिहासकार किस प्रकार अतीत से सूचनाओं, तथ्यों, घटनाओं ादि को पुनः प्राप्त करते हैं। वे किस प्रकार अतीत की छानबीन और विश्लेषण करते हैं? जैसा कि आपको ज्ञात है कि किसी के भी समझ अतीत ठोस रूप में उपस्थित नहीं है। अतीत के विषय में जानकारी प्राप्त करने के लिये प्रायः हमें बहुत से स्रोतों पर निर्भर होना पड़ता है। उदाहरण के लिये भारत में प्रथम स्वतंत्रता संग्राम। प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के कारणों का वास्तविक क्रमिक वर्णन करने के लिये एक भी स्रोत भारत में उपलब्ध नहीं है। इसलिये, हम विभिन्न स्रोतों जैसे लोगों के बीच भेजे गये पत्र, अखबार, युद्ध में प्रयुक्त गोलियां, इसी काल में लिखी गई पुस्तकें, भाषण, और इसीकाल का विशेषज्ञ लोगों के किये गये साक्षात्कारों आदि को मान्यता देकर विचार करते हैं। आप प्रश्न कर सकते हैं कि इन सभी पर विचार किये जाने की क्या आवश्यकता है? क्योंकि

टिप्पणी

न तो हममें से कोई भी उस काल से संबंधित ही है और न ही हमारे पास कोई इन घटनाओं का चश्मदीद गवाह है। आगे, हम किसी भी स्रोत से दिये जाने वाले कारण के तर्क को अमान्य नहीं कह सकते। इसलिये, कारण के निष्कर्ष पर पहुंचने के लिये हम विभिन्न स्रोतों से प्राप्त सूचनाओं की बहुत सी व्याख्याओं और शैक्षिक अनुमानों का प्रयोग करते हैं। इसीप्रकार इतिहासकार वे लोग हैं जो बहुत से स्रोतों जैसे विभिन्न कालों में प्राचीन लोगों द्वारा लिखित प्राचीन लेखों, किसी विशिष्ट स्मारक, ढांचे, लिखित शिलालेख, प्राचीन लोककथाओं से कहानियों, भोजपत्रों पर अंकित जीवनियों, चट्टानों और गुफाओं की दीवारों पर अंकित आकृतियों की आयु पता लगाने के लिये रेडियो कार्बनडेटिंग, तकनीकी का प्रयोग करते हैं। कुछ स्रोत ऐसे है जिनके अनुसंधान से इतिहासकार अतीत हो जान पाते हैं। उपरोक्त चर्चा से यह स्पष्ट होता है कि अतीत की वस्तु स्थिति को जानने के लिये, इतिहासकार बहुत से स्रोतों का उपयोग करते हैं। यह सभी क्रियाकलाप एक वृहद पद्धत्ति अर्थात् अतीत की खोज करने वाली ऐतिहासिक पद्धति के अंतर्गत आते हैं। इसीलिये, सभी समाजिक वैज्ञानिक अतीत को समझने के लिये ऐतिहासिक पद्धति का उपयोग करते हैं।

आइये, इतिहास के विभिन्न स्रोतों की चर्चा करते हैं।

इतिहास के विभिन्न स्रोत (उपलब्धता के आधार पर): उपरोक्त चर्चा से यह स्पष्ट है कि इतिहासकार अतीत की घटनाओं की स्पष्ट जानकारी प्राप्त करने के लिये सदैव विभिन्न स्रोतों पर निर्भर करते हैं। सभी संभावित ऐतिहासिक स्रोतों अर्थात् शिल्पीय स्रोत, साहित्यिक स्रोत, मौखिक परम्पराओं पर एक सूक्ष्म दृष्टिपात करते हैं।

1. **वास्तुशिल्पीय स्रोत :** इसमें तीन प्रकार के स्रोत शामिल हैं।
   (अ) पाये गये स्मारक जिनमें शामिल इमारतें, चित्र, बरतन और भित्ती चित्र तथा अन्य प्राचीन वस्तुऐं।
   (ब) सिक्कों के अध्ययन से संग्रहीत मुद्रा विषयक साक्ष्य।
   (स) पुरालेख में शामिल पत्थरों, स्तम्भों, चट्टानों, ताम्र पत्तों, भवन की दीवारों, पक्की ईंटें, पत्थर की मोहरें और चित्र।
2. **साहित्यिक स्रोत :** इन स्रोतों को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है।
   (अ) **पवित्र और धार्मिक साहित्य :** वेद, महाकाव्य, पुराण, बौद्ध धार्मिक साहित्य, जैन धर्म की धार्मिक पुस्तकें आदि।
   (ब) **धर्म निरपेक्ष साहित्य :** इसे दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है–वैयक्तिक साहित्य और प्रामाणिक साहित्य। वैयक्तिक साहित्य में नाटक, उपन्यास, कवितायें, व्याकरण और ज्योतिष पर लिखी गई पुस्तकें, चिकित्सा और कला, जीवनियां, आत्मकथायें, डायरी, यात्रा वृत्त आदि शामिल किये जाते हैं। कार्यालयी आदेश, प्रेषित पत्र, सनदें, न्यायालयों के निर्णय भी इसी प्रामाणिक साहित्य के अंतर्गत आते हैं।
   (द) **विदेशी साक्ष्य :** इस वर्ग में आने वाले विदेशियों जैसे एफ़्-हेन, मैगस्थनीज़ द्वारा लिखित लेख।
3. मौखिक परम्परायें स्थानीय इतिहास के बारे में जानकारी देने में बहुत सहायक होती हैं। टोड के वृतान्त, दिपवम्सा, और महावंसा इसी स्रोत के अंतर्गत आते हैं।

टिप्पणी

इतिहास के विभिन्न स्रोत (साक्ष्यों के आधार पर)

यदि हम ऐतिहासिक घटनाओं के सभी स्रोतों का अभिलेखन के आधार पर वर्गीकरण करें तो, उन्हें दो मुख्य शीर्षकों के अंतर्गत ला सकते हैं–प्राथमिक स्रोत और द्वितीयक स्रोत। इन स्रोतों के बारे में विस्तार से चर्चा करते हैं।

1) **प्राथमिक स्रोत :** ये स्रोत वे अभिलेख होते हैं जो ऐसे व्यक्ति द्वारा तैयार किये जाते हैं कि जो या तो स्वयं उस घटना से सीधे जुड़े होते हैं या फिर घटना के साक्षी होते हैं। संसद और न्यायिक प्रक्रियाओं के कार्य विवरण, कानून, संधियां, राज्यों प्रमाणिक दस्तावेज, आत्मकथायें इस स्रोत के अंतर्गत आते हैं। समय से प्राप्त साक्ष्य, जैसे जनगणना, लोगों के पत्र, विडियो फिल्म फुटेज (चलचित्र खंड), रेडियो, समाचार पत्र, साक्ष्य आलेख, पुस्तकें, रंगकर्म, और भौतिक अन्वेषण अर्थात् मकबरे, युद्धों से प्राप्त गोलियां,, भी इसी स्रोत के अंतर्गत आते हैं।

2) **द्वितीय स्रोत :** ये वे स्रोत होते हैं जिन्हें किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा तैयार किया जाता है जो स्वयं वास्तविक घटना के दृश्य से दूर रहा हो किन्तु उसने घटना के साक्ष्यों की मदद से स्रोत को तैयार किया हो। विभिन्न कालों के मानक ऐतिहासिक कार्य सामान्यत: इसी वर्ग के द्वितीयक स्रोत जैसे किसी काल पर लिखी गई पुस्तक, भाषण, हाल ही के समाचार पत्र, किसी काल के विशेषज्ञों के साक्षात्कार आदि पर आधारित होते हैं।

ऐतिहासिक उपागमों संबंधी निर्देश:

ऐतिहासिक आंकड़ों की समीक्षा प्रक्रिया के द्वारा ऐतिहासिक साक्ष्य प्राप्त किये जाते हैं, जो दो प्रकार की होती हैं–बाह्य ओर आन्तरिक। इतिहासकारों द्वारा कार्यों को करते समय पालन किये जाने वाले निर्देशों का बाह्य समीक्षा और आंतरिक समीक्षा शीर्षकों के अंतर्गत संक्षिप्त वर्णन निम्न प्रकार है।

- **बाह्य समीक्षा : (प्रामाणिकता और शुद्धता)**

  बाह्य समीक्षा आंकड़ों की प्रमाणिकता और शुद्धता की स्थापना करती है। क्या अवशेष या दस्तावेज़ वास्तविक हैं या जाती हैं? शुद्धता के लिये कई परीक्षण किये जा सकते हैं। उदाहरण के लिये–कौटिल्य द्वारा लिखित अर्थशास्त्र की शुद्धता की जांच के लिये, हमें दस्तावेज के लेखन प्रमाण या आयु ज्ञात करने के लिये हस्ताक्षर, हस्तलेखन, शैली, प्रकार, वर्तनी, प्रयुक्त भाषा, प्रमाणिक लेख, तत्काल उपलब्ध ज्ञान, और पूर्व उपलब्ध ज्ञान के साथ संगतता के लिये जटिल परीक्षणों की आवश्यकता होती है। इसमें स्याही, कागज के रंग आदि संबंधी भौतिक एवं रासायनिक परीक्षण शामिल हैं। क्या जिस काल में अवशेष या लेख की उत्पत्ति हुयी है, व्यक्ति से संबंधित ज्ञात तथ्यों, उपलब्ध ज्ञान और काल विशेष की तकनीकी के संगत हैं?

- **आंतरिक समीक्षा : (ऐतिहासिक विश्वसनीयता)**

  ऐतिहासिक दस्तावेज या अवशेष की प्रमाणिकता की स्थापना के पश्चात, उनके मूल्य और विशुद्धता के मूल्यांकन की समस्या बनी रहती है। यद्यपि वे शुद्ध हो सकते हैं, परन्तु क्या वे सत्य को उद्भासित (चित्रित) कर सकते हैं? क्या वे सक्षम, ईमानदार, निष्पक्ष और वास्तविकता में तथ्यों से परिचित थे या उनका स्पष्ट व्यवस्था से भटकाने संबंधी कोई

टिप्पणी

उद्देश्य था? घटना के कितने समय बाद तक, उन्हें यह शुद्ध रूप में याद रहा कि क्या घटित हुआ, और क्या उन्होंने अपनी गवाही कहीं दर्ज कराई? क्या वे अन्य घटक साक्ष्यों से सहमत थे?

3.7 प्राथमिक स्तर पर इतिहास के दो अध्यायों की अवधारणा निर्माण योजना

अवधारणा निर्माण योजना एक प्रकार रेखाचित्रीय संगठक होता है जिसका प्रयोग विद्यार्थियों को किसी विषय के प्रस्तुतीकरण और व्यवस्था करने में मदद करता है। सही और पूर्ण रूप से निर्मित अवधारणा निर्माण योजना आपके विद्यार्थियों के ज्ञानात्मक प्रदर्शन को उच्च स्तर पर पहुंचाने में शक्तिशाली यंत्र का कार्य करती है। अवधारणा चित्रण केवल एक अधिगम उपकरण मात्र नहीं है अपितु आपके लिये आदर्श मूल्यांकन उपकरण भी है। आप इकाई/अध्याय के अंत में विद्यार्थियों का मूल्यांकन करते हेतु इसका प्रयोग कर सकते हैं। विद्यार्थी जब अवधारणा मानचित्र बनाते हैं, तब वे विचारों को अपने शब्दों में दोहराते हैं और अशुद्ध विचारों और अवधारणाओं की पहचान लेते हैं। इस स्थिति में आपको पता चल जाता है कि विद्यार्थियों की समझ में क्या नहीं आया है, उन क्षेत्रों का मूल्यांकन जिनमें विद्यार्थियों ने अवधारणा को पूर्ण रूप से ग्रहण नहीं किया है करने हेतु एक शुद्ध वस्तुनिष्ठ मार्ग प्रशस्त करता है। अवधारणाचित्रण के विस्तार की प्रक्रिया की चर्चा आगे की जा रही है– इतिहास में अवधारणाचित्रण का निर्माण कैसे किया जाता है :

अवधारणाचित्रण पारम्परिक रूप में वर्गीकृत, उच्चस्थ (मुख्यस्थ) मुख्य अवधारणा और विचार से अधीनस्थ अवधारणाओं की उत्पत्ति होती है। इस प्रकार का रेखाचित्र संगठक, यदाकदा, सदैव नयी अवधारणाओं को जोड़ने और परिवर्तन करने की अनुमति देता है:

- **मुख्य विचार, विषय या मुद्दे से शुरुआत :** एक केंद्रीय प्रश्न का चयन–कुछ ऐसा जिसका समाधान करने की जरूरत है या किसी निष्कर्ष पर पहुंचना है, आपके अवधारणाचित्रण के संदर्भ का निर्धारण करने में सहायक मार्ग होता है। एक बार प्रश्न निर्धारित हो जाता है, तब अवधारणाचित्रण का वर्गीकृत रूपरेखा निर्माण सरल हो जाता है।
- **अधीनस्थ अवधारणाओं का निर्धारण :** आपके मुख्य विषय संबंधित और जुड़े हुए कम महत्त्वपूर्ण (अधीनस्थ) अवधारणाओं को पहचान कर उनका पदानुक्रम, अति सामान्य, अवधारणा के साथ पहले आने वाला, तदोपरान्त उससे जुड़े छोटे और अधिक निश्चित अवधारणाओं निर्धारण कीजिये।
- अवधारणाओं को परस्पर जोड़ते हुए समापन मुहावरों और शब्दों को शृंखला बद्ध जोड़ने हेतु प्रयोग : एक बार जब अवधारणाओं के बीच आधारभूत शृंखला निर्मित हो जाती है, आड़ी तिरछी शृंखला बनाइये, जो मानचित्र की विभिनन अवधारणाओं को परस्पर जोड़ती है, विषय संबंधी छात्रों के ज्ञान और समझ के रिश्ते को और प्रगाढ़ और शक्तिशाली बनाने के लिये और उदाहरणों का उल्लेख कीजिये।

कक्षा VII की समाज विज्ञान पाठ्यक्रम की इतिहास की पुस्तक से एक उदाहरण लेते हैं।

शीर्षक : 1857 के पश्चात जनविद्रोह के कारण
इतिहास में concept mapping

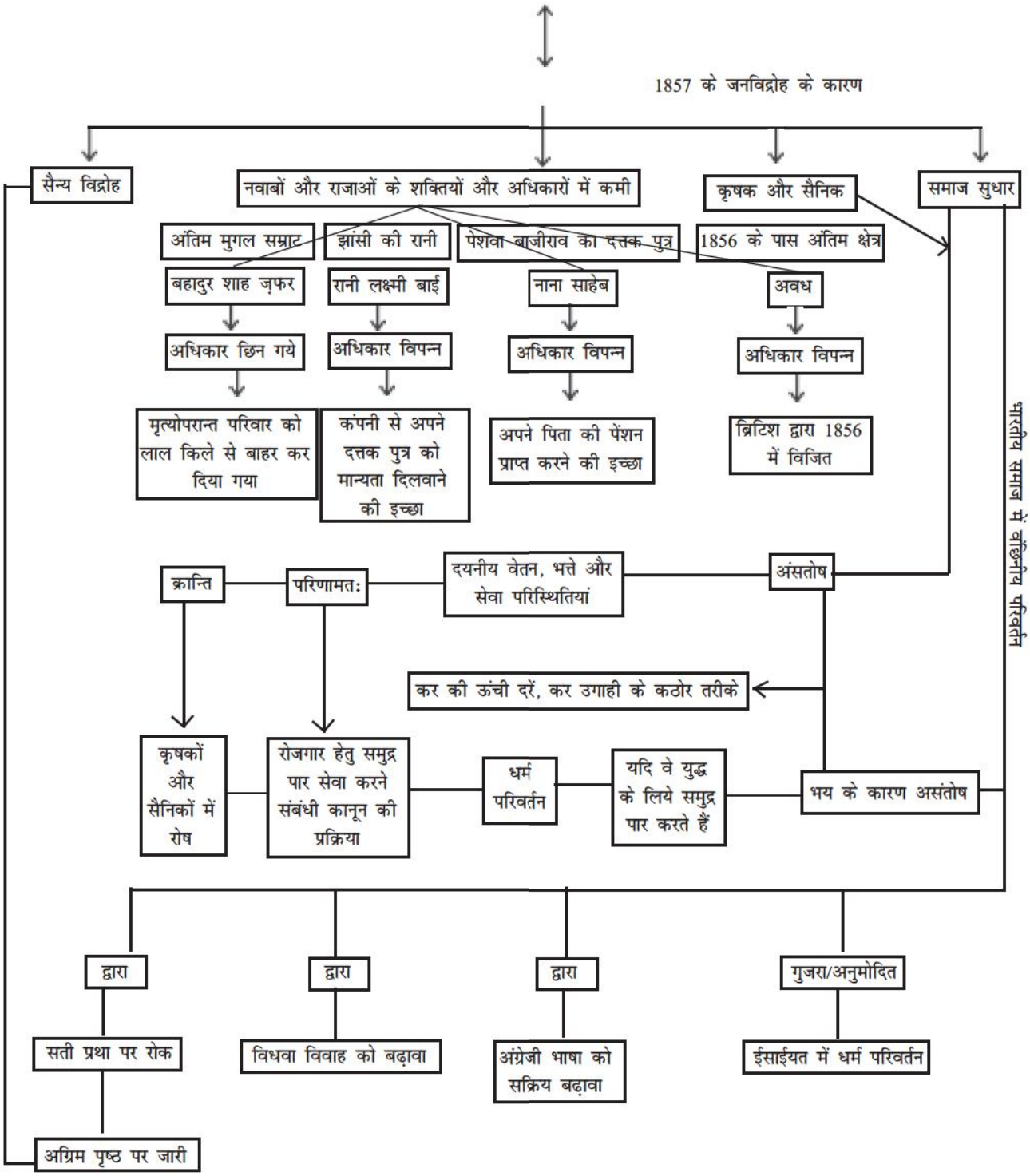

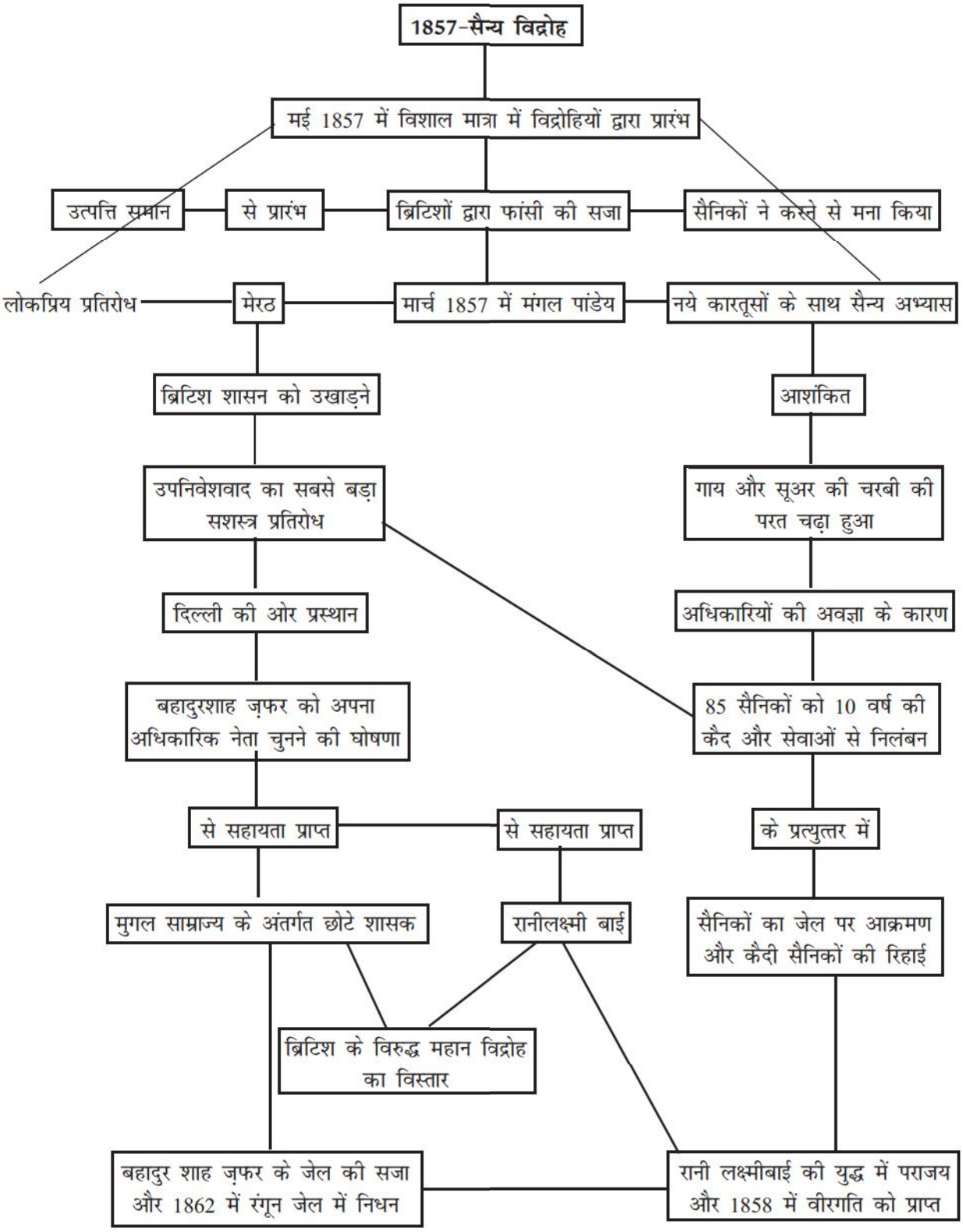

नोट : लाल रंग से लिखित सामग्री उपसिद्धांतों के योजक हैं।

3.8 सारांश

इतिहास मानवों का अध्ययन है। इसका सरोकार कालान्तर में मनुष्य द्वारा किये गये प्रयासों और उपलब्धियों से है। यह किसी नियत समय बिंदु पर, भौतिक एवं भौगोलिक पर्यावरण में घटित घटनाओं की शृंखला से संबंधित है। ऐतिहासिक घटनाएं निरंतर और परस्पर जुड़ी हुयी होती हैं। निर्वात से किसी भी मानवीय घटना का जन्म नहीं होता; यह पूर्व में घटित घटनाओं की नींव से उदित होती हैं। इतिहास भविष्य के अनुमान के उद्देश्य से की जाने वाली अतीत की व्याख्या है। इस में समय क्रम होता है और यह वर्तमान तथा अतीत के मध्य चलने वाला अंतहीन संवाद है। यह विपरीत क्रम में की जाने वाली भविष्यवाणी हैं, जो भविष्य की संभावनाओं के बारे में एक सीमा तक ज्ञान प्राप्त करने में सहायक होती हैं। यह कुछ लोगों के अनुसार रेखीय तथा कुछ के अनुसार चक्रीय है। कई ऐतिहासिक कालों से संबंधित साक्ष्यों की अल्पमात्रा या अनुपलब्धता के कारण यह अपूर्ण है। इसलिये, ज्ञात अतीत अज्ञात अतीत की अपेक्षा छोटा है। इतिहास स्थिर नहीं है; नवीन खोजों द्वारा पुरातन ज्ञान के संदेह किये जाने से हमारे विचार इतिहास के संबंध में निरंतर परिवर्तिन होते रहते हैं। फिर भी, इतिहास की गतिशील प्रकृति पर कोई विवाद नहीं है जिसका सरोकार उद्देश्यपूर्ण और सार्थक, निरंतन परिवर्तनशील जीवन नाटिका से है। कक्षा VI से कक्षा VIII के इतिहास के विषय शीर्षक और मुख्य उपशीर्षक केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (CBSE, 2006) द्वारा निर्धारित किये जाते हैं। इस विषय वस्तु से प्राप्त होने वाला ज्ञान छात्रों को 'कालान्तर में परिवर्तन लाने में कैसे विचारों, घटनाओं और व्यक्तियों ने अंतर्भेद किया' की सराहना करने, साथ ही साथ मानव समाज में सत्तता बनाये रखने वाली परिस्थितियों को पहचानने की योग्यता प्रदान करता है। इतिहासकार वे लोग हैं जो बहुत से स्रोतों जैसे विभिन्न कालों में प्राचीन लोगों द्वारा लिखित प्राचीन लेख, किसी विशिष्ट स्मारक, ढांचे, लिखित शिलालेख, प्राचीन लोककथाओं की कहानियों, भोजपत्रों पर अंकित जीवनियों, चट्टानों और गुफाओं की दीवारों पर अंकित आकृतियों की आयु जानने के लिये रेडियो कार्बनडेटिंग जैसी तकनीकों का प्रयोग करते हैं। इतिहासकार अतीत को जानने के लिये इन्हीं कुछ स्रोतों का अन्वेषण करते हैं।

3.9 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. मार्था सी. हॉवेल और वाल्टर प्रिवेनियर (2001) From Reliable Sources : ऐतिहासिक विधियों का परिचय कॉर्नेल यूनिवर्सिटी प्रैस

2. एन्थनी ब्रुनडेज (2002) Going to the sources : ऐतिहासिक अनुसंधान और लेखन संबंधी निर्देशिका हर्लन डेविडसन

3. अब्राम्स, राबर्ट, कोथे, डेनिस, लुली, रिक "A callabarative Literature Review of concept Mapping" The Meaningful Learning Reasearch Group Home Page. http://www2.ucsc.edu/mlrg/clr/conceptmapping.html (18 January 2002)

टिप्पणी

Main land Fredric William in Venn, J. & J.A., Alumni Canta brigieneses, Cambridge University Press 10 Vols. 1922-1958

Hale Steven. "Concept Mapping Handout" Handouts from Geargia Perimeter College.

http://www.dc.peachnet.edu/ shale/humanities/composition/handouts/concept.html (18 January 2002)

Navak, Joseph D. "The Theary Underlying Concepts Maps and How to construct them." Institute for Human Machine Imaging. http://cmap.coginst.uwf.edu/info/printer.html (18 January 2002)

Ghosh, Papiya (2007). Partition and the South Asian diaspara : Extending the Subcontinent. New York : Routledge. ISBN 0-415-42409-7

Bernheim, E. (1889). Lehrbuch der historischen Methodc. leipzig : Verlag von Duncker & Humblot B. Charles and S.P. Harter (1980). Research Methods in Librarianship: techniques and interpretations. Academic Press: New York, NY.

माध्यमिक शिक्षा आयोग की रिपोर्ट, 1964-66, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली

दस वर्षीय विद्यालय के लिये पाठ्यक्रम: एक रूपरेखा, 1975, NCERT, नई दिल्ली

प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा के लिये राष्ट्रीय पाठ्यक्रम, 2000, NCERT, नई दिल्ली

सामाजिक विज्ञान शिक्षण में Position Paper (2006), राष्ट्रीय पाठ्यक्रम रूपरेखा, NCERT, नई दिल्ली

http://www.newsofyesteryear.com/archives/1049

http://en.wikipedia.org/wiki/Henry Johnson % 28 Medal_of_Honar%29

http://en.wikipedia.org/wiki/Historiography_of_the_French_Revolution

3.10 अन्त्य इकाई अभ्यास

1. ''इतिहास'' से क्या तात्पर्य है?
2. इतिहास को वैज्ञानिक उपागम किसने बताया?
3. इतिहास की परिभाषायें भिन्न क्यों होती हैं? अपने उत्तर के पक्ष में तर्क दीजिये।

टिप्पणी

4. क्या आप सहमत हैं कि मानव जाति से संबंधित सभी सांसारिक घटनाओं से इतिहास का संबंध है? व्याख्या कीजिये।

5. ''इतिहास की गतिशील प्रकृति से किसी का विवाद नहीं हो सकता जिसका सरोकार स्वयं जीवन के परिवर्तनशील नाटक से है।'' इस कथन के प्रकाश में इतिहास की प्रकृति की चर्चा कीजिये।

6. क्या आप CBSE द्वारा सामाजिक विज्ञान में प्रस्तावित इतिहास का पाठ्यक्रम प्राथमिक कक्षा के छात्रों के लिये उपयुक्त है? यदि कुछ कमी है तो इंगित कीजिये। इनहें दूर करने के लिये अपने सुझाव दीजिये।

7. सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या के एक हिस्से के रूप में इतिहास के महत्त्व की चर्चा कीजिये।

8. एक इतिहास शिक्षक के रूप में आप अपने छात्रों को प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों का प्रयोग करते हुये इतिहास सीखने को किस प्रकार निर्देशित करेंगे?

इकाई-4 सामाजिक विज्ञान के एक घटक के रूप में भूगोल

संरचना :-

4.0 प्रस्तावना

4.1 अधिगम उद्देश्य

4.2 भगोल के शिक्षण-अधिगम का प्रयोजन

4.3 भूगोल का चिन्तन

4.4 भूगोल शिक्षण के उपागम

4.5 भूगोल का प्रभाव क्षेत्र

4.6 उच्च प्राथमिक स्तर पर भूगोल का शिक्षण

4.6.1 मूलाधार और उद्देश्य

4.6.2 विषय वस्तु की रूपरेखा

4.7 पाठ-योजना : परिवहन

4.8 सारांश

4.9 शब्दावली/संकेताक्षर

4.10 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

4.11 अन्त्य इकाई अभ्यास

4.0 प्रस्तावना

इस समय तक आप अवश्य समझ चुके हैं कि सामाजिक विज्ञान पाठ्येतर क्षेत्रों में से एक है जो समाज की विवेचनात्मक समझ विकसित करने में विद्यार्थियों को समर्थ बनाता है। आप यह भी अवश्य समझ चुके हैं कि कैसे सामाजिक विज्ञान इतिहास, भूगोल, राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र और समाज शास्त्र जैसे विषयों के विस्तृत विषय वस्तुओं को शामिल करते हुए समाज के विभिन्न मामलों को आवृत कर लिया है। एक शिक्षक के रूप में आपको सामाजिक विज्ञान के सभी घटकों के शिक्षण का अनुभव हो सकता है, यद्यपि हो सकता है आपने इन विषयों के बारे में अपने विद्यालय के दिनों में पढ़ा हो और इन घटकों का संचालन करते समय निश्चित अवसरों पर आप असहज महसूस कर सकते हैं। इसको ध्यान में रखते हुए सामाजिक विज्ञानों के प्रमुख घटकों के प्रदर्शन के द्वारा आपको एक प्रयास उपलब्ध कराया जा रहा है। पूर्व की इकाई में आपको सामाजिक विज्ञान के एक घटक के रूप में इतिहास को प्रदर्शित किया गया

था। उस इकाई के माध्यम से आपने जाना कि इतिहास में क्या घटित हुआ था, कैसे इतिहासकार अपना कार्य करते हैं और क्यों हमें अपने विद्यालयों में इतिहास पढ़ाना जरूरी है। वर्तमान इकाई में आप सामाजिक विज्ञान के एक दूसरे महत्वपूर्ण घटक के बारे में परिचित होंगे, जो है-भूगोल। आप दो महत्वपूर्ण प्रश्नों के बारे में अधिक जानने में सक्षम होंगे, भूगोल क्या है? और हमें क्यों भूगोल सीखना और पढ़ना चाहिए? इस इकाई के माध्यम से आप यह भी जान सकेंगे कि भूगोल के उपागम और विषय वस्तु सामाजिक विज्ञान के घटकों की अपेक्षा कितने भिन्न हैं। आगे आप सीखेंगे कि भूगोल के विषय वस्तु और सामाजिक विज्ञान के अन्य घटकों के बीच कोई समानता है या नहीं। फिर आप उच्च प्राथमिक स्तर पर भूगोल शिक्षण के महत्व को समझने में समर्थ होंगे। आप उच्च प्राथमिक स्तर पर भूगोल के विषय-वस्तु की रूपरेखा पर टिप्पणी करने के अवसर का उपयोग भी कर सकेंगे। आगे इस इकाई में आप के समक्ष परिवहन विषय पर एक नमूना पाठ-योजना प्रदर्शित होगा।

4.1 अधिगम उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप सक्षम हो सकेंगे:-

- भूगोल के अध्ययन की आवश्यकता पर विचार विमर्श करने में।
- भूगोल की प्रकृति की व्याख्या करने में।
- भूगोल के विषय वस्तु का विश्लेषण करने में।
- भूगोल की शाखाओं का वर्गीकरण करने में।
- सामाजिक विज्ञान में भूगोल के स्थान का मूल्यांकन करने में।
- उच्च प्राथमिक स्तर पर भूगोल शिक्षण के मूलाधार को तर्कसंगत सिद्ध करने में।
- भूगोल में पाठ-योजना बनाने में।

4.2 भूगोल शिक्षण-अधिगम का प्रयोजन

उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक अध्ययन का शिक्षण करते समय आप अवश्य जान चुके हैं कि प्राय: इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र, नागरिक शास्त्र (अब राजनीति विज्ञान के रूप में जाना जाता है) के लिए पृथक पुस्तकें हैं। जबकि यह हो सकता है कि इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र के निश्चित पाठों के साथ एक पुस्तक हो और कुछ दूसरे मामलों में सामाजिक विज्ञान की एकमात्र पुस्तक हैं जहाँ इतिहास भूगोल, राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र की सीमाये आसानी से दृश्य नहीं हैं। इन विषयों से लिये गये विषय वस्तु निश्चित सामाजिक परिदृश्य और प्रक्रियाओं के अध्ययन के लिए घुलमिल गये हैं। हमारे देश के बहुत से राज्यों में सामाजिक विज्ञान की बहु पाठ्य-पुस्तकें हैं और जहाँ एक मात्र शिक्षक है जिससे उन पाठ्य पुस्तकों को कक्षाकक्ष में पढ़ाना अपेक्षित है। एक ऐसी स्थिति में यह बिल्कुल संभव है कि

टिप्पणी

अपने विद्यालय या कॉलेज के दिनों के दौरान आपने भूगोल का अध्ययन नहीं किया हो। किन्तु आपके अनुभव और विवशता के साथ आप अपने विद्यार्थियों को भूगोल शिक्षण भी कर सकते हैं। शिक्षण के समय आप विश्व में भौगोलिक प्रकृति के कुछ परिदृश्यों से संबंधित विविध विषयों और उनके विभिन्न अंगों के पार अवश्य जा सकते हैं।

क्रियाकलाप-1

विविध विषयों की सूची बनायें जिसे आप भूगोल के अन्तर्गत पढ़ा चुके हैं।

.....

.....

.....

आपने अपने विद्यार्थियों को पृथ्वी, सौर प्रणाली, वायुमंडल, जल मंडल, स्थल मंडल, भूसतह, जलवायु, मौसम, प्राकृतिक एवं मानवीय संसाधनों, क्षेत्रों, देशों महाद्वीपों, आर्थिक गतिविधियों, कृषि, उद्योगों, परिवहन, संचार, विविध वैश्विक मुद्दों जैसे-जलवायु परिवर्तन, वैश्विक तापन, मरूस्थलीकरण, अल नीनो, जल संसाधनों, प्राकृतिक आपदाओं, गरीबी, बेरोजगारी, पर्यावरणीय क्षति और ऐसी ही अन्य समस्याओं को अवश्य पढ़ाया है। आप एक संगत प्रश्न उठा सकते हैं कि विद्यार्थियों को इन विषयों को पढ़ाया जाना क्यों जरूरी है? दूसरे शब्दों में आपका प्रश्न हो सकता है-हम भूगोल क्यों पढ़े? एक मानव होने के नाते आप इस तथ्य से सहमत हो सकते हैं कि हम मानव और अन्य प्रकार के जीवों के निवास स्थल के रूप में पृथ्वी के बारे में जानने के लिए उत्सुक हैं। भूगोल का अध्ययन हमारे ग्रहों और इसकी प्रणालियों की साकल्यवादी समझ प्रदान कर सकता है। वे जो भूगोल का अध्ययन करते हैं वे हमारी पृथ्वी को प्रभावित करने वाले मुद्दों को अच्छी प्रकार समझने को तैयार होते हैं। वे जो भूगोल का अध्ययन करते हैं वे देशों, संस्कृतियों, शहरों एवं उनके भीतरी भागों तथा देशों के भीतरी क्षेत्रों के बीच उत्पन्न वैश्विक राजनीतिक मुद्दों को समझने और व्याख्यायित करने की अच्छी स्थिति में होते हैं। हम अवगत हैं कि हमारी जिन्दगियाँ कई प्रकार से हमारे परिवेश से प्रभावित होती हैं। किस प्रकार मानव प्रकृति के संबंधों के साथ-साथ पर्यावरण का अध्ययन महत्व प्राप्त कर लेता है। अपने आप को बनाये रखने में हम आसपास के क्षेत्रों में स्थित संसाधनों पर निर्भर होने की ओर प्रवृत हो रहे हैं। हमे इन प्राकृतिक एवं मानवीय संसाधनों के वितरण को जानना जरूरी है। हमें क्षेत्र, राज्य और देश को वैश्विक सन्दर्भ में जानना जरूरी है। हमें धारणीय विकास के लिए विविध क्षेत्रों और देशों की अन्त: निर्भरता को समझना जरूरी है। हमे विविध परिदृश्यों को समझना जरूरी है जो स्थान-दर-स्थान परिवर्तित होते हैं। हमें विविध भूमियों एवं लोगों के बारे में जानना जरूरी है। हमे उन परिवर्तनों को जानना जरूरी हैं जो काफी लम्बे समय से हो चुके हैं। भूगोल हमारे दैनिक जीवन के लगभग प्रत्येक निर्णय में भूमिका अदा करता है जेसे-स्थान चुनने, बाजार क्षेत्र लक्षित करने, वितरण नेटवर्क की योजना करने, आपातकाल का सामना करने में। चूँकि भूगोल हमें विभिन्नताओं का आकलन करने और लम्बे समय में ऐसी विभिन्नताओं को उत्पन्न

करने वाले उत्तरदायी कारकों को जाँचने और अंतरिक्ष की जानकारी से सुसज्जित करता है अत: हमें सामाजिक विज्ञान के इस महत्वपूर्ण घटक का अध्ययन करना जरूरी है।

4.3 भूगोल का चिन्तन

पूर्ववर्ती खण्ड में 'हम भूगोल क्यों पढ़ते हैं'? के बारे में आप सीख चुके हैं। अगला प्रश्न आप पूछना पसन्द कर सकते हैं–भूगोल क्या है? भूगोल वेता कैसे कार्य करते हैं? इस खण्ड में आप भूगोल की विशेषता से परिचित होंगे। आपको अवगत हैं कि सामाजिक विज्ञान का विषय विविध घटकों से विषय-वस्तु लेता है। ऐसा ही एक घटक भूगोल है। विषय का लम्बा विकास इतिहास है। भूगोल लगभग 2200 वर्षों से अधिक से जाना जाता है जिसकी पूर्व तिथि यूनानियों तक जाती है जब इरेस्टोस्थनीज (276-194 BC) ने भूगोल शब्द कल्पित किया। व्युत्पत्ति के दृष्टिकोण से भूगोल शब्द यूनान के दो शब्दों geo (पृथ्वी) और graphos (वर्णन) से हुआ है। एक साथ रखने पर इनका अर्थ है पृथ्वी का वर्णन। पूर्ववर्ती खण्ड में यह कहा गया था कि हमें पृथ्वी को हमारे निवास के रूप जानना जरूरी है। क्या आपने कभी ध्यान दिया है कि पृथ्वी की सतह पर विविधतायें इसके भौतिक पर्यावरण के साथ साथ सांस्कृतिक पर्यावरण में आती है?

क्रियाकलाप-2

पृथ्वी की सतह पर इसके भौतिक एवं सांस्कृतिक पर्यावरण में उत्पन्न विविधाताओं की सूची बनायें।

भौतिक पर्यावरण

.....

.....

.....

सांस्कृतिक पर्यावरण

.....

.....

.....

आपने पृथ्वी की सतह पर इसके भौतिक एवं सांस्कृतिक पर्यावरण में उत्पन्न विविध विविध ताओं की सूची बनाई है। आपने अवश्य नोट किया होगा कि विविध परिदृश्य समान हैं जबकि बहुत से दूसरे असमान हैं। आपने यह भी नोट किया होगा कि ये परिदृश्य स्थान-दर-स्थान परिवर्तित होते हैं या दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं उनकी स्थलाकृति, जलवायु, मिट्टी,

टिप्पणी

वनस्पति, प्राकृतिक और मानवीय संसाधनों तथा संस्कृति में क्षेत्र-दर-क्षेत्र परिवर्तन होता है। क्या अब आप तर्क प्रस्तुत कर सकते हैं कि भूगोल 'क्षेत्रीय विभेदीकरण' का अध्ययन है? भूगोल में हम केवल पृथ्वी की सतह के ऊपर के परिदृश्य में विभिन्नताओं का अध्ययन नहीं करते जिन्हें हम अंतरिक्ष के रूप में उल्लिखित करते हैं बल्कि अन्य कारकों के साथ संबंधों का भी अध्ययन करते हैं जो इन विभिन्नताओं को उत्पन्न करते हैं। उदाहरण के लिए जनसंख्या की सघनता क्षेत्र-दर क्षेत्र भिन्न होती हैं किन्तु जनसंख्या की सघनता में यह विभिन्नता एक परिदृश्य के रूप में भौतिक लक्षणों, जलवायु, मिट्टी, प्राकृतिक वनस्पति, खनिज की उपलब्धता, धर्म, दान की आदतें, संस्कृति, लोगों की शैक्षिक स्तर की उपलब्धि में विभिन्नता से संबंधित है। इस प्रकार भूगोल का संबध दो परिदृश्यों या एक से अधिक परिदृश्य के बीच अनौपचारिक संबंध का पता लगाने से है। अब NCERT की कक्षा VI-VII की भूगोल की पाठ्य पुस्तकों से लिये गये निश्चित उदाहरणों को देखें–

- अमेजन घाटी में वनों के नाश बहुत विस्तृत उलझन है। मिट्टी की ऊपरी सतह वर्षा से धुल गयी है और हरेभरे जंगल बंजर भूमि में बदल गये हैं। (कक्षा-VII पाठ - VIII मानव-पर्यावरण अंत: क्रिया) क्या आपने इस केस में कारण और प्रभाव के संबंधों को नोट किया?
- विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न फसलें पैदा होती है (कक्षा VIII पाठ-4, कृषि)। भूगोल में हम कारणों की पहचानने की प्रवृति रखते हैं। एक भूगोलवेता परिदृश्यों की व्याख्या कारण और प्रभाव के संबंधों के ढाँचे में करता हैं, यह अर्थ निर्धारण में सहायता नहीं करता है किन्तु भविष्य के परिदृश्य का पूर्वानुमान भी कर लेता है।

आपने अवश्य ध्यान दिया होगा कि हम लोग गतिशील, नित् परिवर्तित संसार और समाज में रहते हैं। भौतिक एवं मानवीय दोनों भौगोलिक परिदृश्य स्थिर नहीं हैं बल्कि अत्यधिक गतिशील हैं। वे बदलती रहती हैं, बदलाव की गति तीव्र या मन्द हो सकती है।

क्रियाकलाप-3

बदलावों की सूची बनायें जिन्हें आपने दो दशकों में अपने पड़ोस में अवलोकित किया है।

राहत में.....

तापमान.....

वर्षा.....

मिट्टी की गुणवत्ता.....

वन्य जीव.....

लोग.....

भोजन आदतें.....

पहनावा.....

तकनीक.....

परिवहन सुविधायें.....

संचार सुविधायें.....

व्यापार.....

आपने अवश्य नोट किया होगा कि ये परिदृश्य बहुत अधिक समय तक एक समान नहीं रहते, दो दशकों के विस्तार में वे बदल चुके होते हैं। क्या अब आप इस पर टिप्पणी करने में सक्षम होंगे कि ये परिवर्तन क्यों होते हैं? क्या यह नित परिवर्तित पृथ्वी और अथक एवं सक्रिय मानवीय संबंधों के बीच अन्त:क्रिया के कारण है? या इसके कोई अन्य दूसरे कारण है? आपने अवश्य जाना होगा कि इस कारण प्रकृति ने मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित किया है। इसकी छाप भोजन, पहनावा, आश्रय और व्यवसाय पर नोटिस की जा सकती है। मानवीय सत्ता अनुकूलन और आधुनिकीकरण के माध्यम से प्रकृति का सामना करता है। इस प्रकार ये वैशिष्टय भूगोल के दूसरे पहलू हैं। अब हम टिप्पणी कर सकते हैं कि भूगोल मानवीय सत्ता और इनके पर्यावरण के बीच अन्त: क्रियात्मक संबंध का अध्ययन करता है।

भूगोल का विषय वस्तु अन्य सामाजिक विज्ञानों से भिन्न है। एक विषय के रूप में भूगोल अंतरिक्ष से संबंधित है और इस प्रकार इसे आकाशीय विज्ञान के रूप में भी जाना जाता है। भूगोल परिदृश्य के क्या, कहाँ, क्यों को संबोधित करता है। हम पृथ्वी की सतह पर पायी जाने वाली लक्षणों, परिदृश्यों और प्रक्रियाओं के बारे में जाँच करें। हम पृथ्वी की सतह पर पाये जाने वाली इन लक्षणों, परिदृश्यों और प्रक्रियाओं के वितरण के बारे में भी जानने को इच्छुक हैं। क्या और कहाँ ये दोनों प्रश्न प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य के विस्तारित एवं स्थानीय पहलुओं का जवाब देने की कोशिश करते हैं। ये प्रश्न कौन से लक्षण हैं और वे कहाँ स्थित हैं कि सूचना की सूची प्रदान करते हैं। औपनिवेशिक काल के दौरान यह सबसे लोकप्रिय उपागम था। ये दो प्रश्न भूगोल को एक वैज्ञानिक विषय नहीं बनाते। तीसरा प्रश्न क्यों व्याख्या प्रदान करता है या परिदृश्यों के लक्षणों और प्रक्रियाओं के बीच औपचारिक संबंध प्रदान करता है। क्यों के इस प्रश्न ने भूगोल को वैज्ञानिक पहचान दिया है। इन दिनों विकासशील तकनीकों जैसे भौगोलिक सूचना प्रणाली सुदूर संवेदी और कम्प्यूटर सहायक मानचित्रण ने स्पष्टीकरण तथा लक्षणों, प्रक्रियाओं और परिदृश्यों के बीच औपचारिक संबंधों का पता लगाने में विषय की सहायता की है। किस प्रकार भूगोल आंकिक दुनिया में चला गया है और स्पष्टीकरण का पता लगा रहा है और संबंधों को समझ रहा है।

Richard Hartshorne -" भूगोल पृथ्वी की सतह के क्षेत्रीय विभेदन के वर्णन और स्पष्टीकरण से संबद्ध है।''

Hettnex-" भूगोल परिदृश्यों के अन्तरों का अध्ययन करता है जो प्राय: पृथ्वी की सतह के विभिन्न अंगों से संबंधित है।''

टिप्पणी

Peter Monaghan-" एक विषय जिसके क्षेत्र अंतरिक्ष स्थल और अन्य कोई चीज जो उसके अन्दर परिचालित होती है या उनके लाक्षणिक पहलुओं या उनमें प्रवाहित होने वाले लोग, पानी, विश्वास आंकिक डाटा केवल विशाल एवं विषम हो सकते है।

जब हम भूगोल की विशेषता बताते हैं तो निश्चित लक्षण प्रकट होते हैं। हमलोग कुछ एक महत्वपूर्ण लक्षणों पर प्रकाश डालेंगे।

भूगोल में एक विशेष पर्यावरण का ध्यान या सतर्क अवलोकन/परीक्षण/वर्णन विशेषत: महत्वपूर्ण है। तब तक हाल ही में अधिकांश भौगोलिक कार्यों में यथेष्ट मैदानी कार्य सम्मिलित हैं। स्थान की स्थिति महत्वपूर्ण हो जाती हैं। स्थान की स्थिति का अध्ययन निरपेक्ष और सापेक्ष की शब्दावली में किया जाता है। हम स्थान की विशेषता का अध्ययन उसकी भौतिक एवं मानवीय पहलुओं के संदर्भ में भी करते हैं।

भूगोल में, हम जीवमण्डल, वायु मण्डल और जलमण्डल की प्रक्रियाओं और प्रतिमानों पर लक्षित करने की ओर प्रवृत होते हैं। प्राय: लक्ष्य होती है भू-आकृति और किस प्रकार प्राकृतिक एवं मानवीय शक्तियाँ इसे प्रभावित करती हैं।

भूगोल में हम मानव और पर्यावरण की अन्त:क्रियाओं को समझने की ओर प्रवृत होते हैं और देखते हैं कि कैसे पर्यावरण मानवीय गतिविधि को आकार देता है तथा कैसे मानवीय गतिविधि पर्यावरण को आकार देती है। दूसरे शब्दों में, हम कह सकते हैं कि कैसे लोग प्राकृतिक पर्यावरण के साथ अन्त क्रिया करते हैं। क्या मानव सत्ता पर्यावरण का अनुकूलन करती है या इसे रूपान्तरित करती हैं या पर्यावरण पर निर्भर रहती है? लोगों और वस्तुओं की गति भी महत्वपूर्ण है। क्षेत्र का अध्ययन एक विशेष क्षेत्र के गुणों पर लक्षित करता है, अद्वितीय गुणों को देखता है और एक क्षेत्र की दूसरे क्षेत्र से तुलना करता है कि क्षेत्र कैसे बने हैं और कैसे वे रूचियों को बनाये रखे हैं। क्षेत्रों के अध्ययन में सामान्य लक्षण हो सकते हैं जैसे सूखे क्षेत्र या एक विशेष क्षेत्र जैसे दक्षिण पूर्व एशियाई क्षेत्र।

आकाशीय विश्लेषण, भौगोलिक वितरण और प्रतिमानों के रूप में तत्वों के बीच संबंधों को देखते हैं। यह आकाश में गति का भी अध्ययन करता है। यह समझने की कोशिश करता है कि कैसे लोग, वस्तुएँ और विचार स्थानों के बीच घूमते हैं।

अब हम निम्न प्रकार से भूगोल के लक्षणों को चित्रित कर सकते हैं:-

- भूगोल आकाश से संबंधित एक विषय है जो आकाशीय लक्षणों और विशेषताओं पर टिप्पणी देता है।
- यह आकाश के परे परिदृश्यों के वितरण, स्थान और सान्द्रण के प्रतिमान का अध्ययन करता है, उन्हें प्रतिपादित करता है और इन प्रतिमानों की व्याख्या निकालता है।

यह मानवीय सत्ता एवं उनके भौतिक पर्यावरण के बीच गत्यात्मक अंत: क्रिया से उत्पन्न परिदृश्यों के बीच अन्त: सम्बन्धों और संसर्ग पर टिप्पणी करता है।

प्रगति जाँच-1

नोट:- (a) आपके जवाब के लिए स्थान नीचे दिया गया है।

(b) अपने जवाबों की तुलना इकाई के अन्त में दिये गये जवाबों से करें।

1. भूगोल क्या है?

.....

.....

.....

2. भूगोल के अध्ययन के कारणों की व्याख्या करें।

.....

.....

.....

3. अपनी भूगोल की पाठ्य पुस्तक से दो उदाहरणों को चित्रित करो जो प्रत्येक भूगोल के लक्षणों को प्रदर्शित करते हैं।

(i) भूगोल आकाश से संबंधित विषय है जो आकाशीय लक्षणों और विशेषताओं पर टिप्पणी करता है।

.....

.....

(ii) यह आकाश से परे परिदृश्यों के वितरण, स्थान और सान्द्रण के प्रतिमान का अध्ययन करता है, उन्हें प्रतिपादित करता है और इन प्रतिमानों की व्याख्या करता है।

.....

.....

(iii) यह मानवीय सत्ता एवं उनके भौतिक पर्यावरण के बीच गत्यात्मक अंत: क्रिया से उत्पन्न परिदृश्यों के बीच अन्त: सम्बन्धों और संसर्ग पर टिप्पणी करता है।

.....

.....

टिप्पणी

4.4 भूगोल शिक्षण के उपागम

भूगोल का शिक्षण करते समय आपने अवश्य स्वीकार किया होगा कि बहुत सी विषय वस्तुएँ हैं जिन्हें दूसरे विषयों में भी पढ़ाया जाता है। उदाहरण के लिए 'लोग और समाज' समाजशास्त्र में भी लिये गये हैं। पौधों का अध्ययन वनस्पति विज्ञान द्वारा भी किया जाता है। पृथ्वी का अध्ययन भूविज्ञान के द्वारा भी किया जाता है। भूगोल के विषय वस्तु पर ध्यान देने पर यह पता चलता है कि इसके विषय वस्तु न केवल भौतिक या प्राकृतिक विज्ञानों बल्कि सामाजिक विज्ञानों और तकनीकी विज्ञानों से भी लिये गये हैं। इस प्रकार भूगोल मिला हुआ/मिश्रित या एकीकृत विज्ञान है और ज्ञान का संश्लेषण है। भूगोल में प्रत्येक विशिष्ट क्षेत्र विज्ञान की अन्य संबंधित शाखाओं से अतिव्याप्त है। हम आगे आने वाले खण्ड में भूगोल के क्षेत्रों पर विचार विमर्श करेंगे।

पूर्ववर्ती खण्ड में हमने विश्लेषित किया और समझा है कि भूगोल अपना विषय वस्तु भूविज्ञान, मौसम विज्ञान, जल विज्ञान, शैल विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, प्राणि विज्ञान और सामाजिक विज्ञानों जैसे अर्थशास्त्र, जनसांख्यिकी, राजनीति विज्ञान, इतिहास, दर्शन शास्त्र, मानव शास्त्र और समाज शास्त्र जैसे विषयों से लेता है। यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि भूगोल का अध्ययन अन्तर्विषयी और बहुविषयी है। प्रत्येक विषय का अध्ययन एक या अन्य उपागम के द्वारा किया जायें। जब भूगोल के अध्ययन का समय आता है तो इसके दो मुख्य उपागम हैं।

- **व्यवस्थित उपागम:**- व्यवस्थित उपागम में एक परिदृश्य का अध्ययन सम्पूर्णता में किया जाता है। यह प्रासंगिक उपागम के रूप में भी जाना जाता है जिसके माध्यम से हम विशेष परिदृश्य का दिये गये क्षेत्र में विस्तार और साकल्यवादी तरीके से अध्ययन करते हैं। उदाहरण के लिए यदि कोई जलवायु का अध्ययन करना चाहता है तो वह जलवायु के विभिन्न पहलुओं जैसे जलवायु की संकल्पना, प्रभावित करने वाले कारक, जलवायु के तत्व, जलवायु के प्रकार और विश्व के जलवायविक क्षेत्रों का अध्ययन करेगा।
- **क्षेत्रीय उपागम:**- क्षेत्रीय उपागम में, विश्व को विभिन्न श्रेणीवद्ध स्तरों पर क्षेत्रों में बाँटा जाता है और फिर एक विशेष क्षेत्र के सभी भौगोलिक परिदृश्यों का अध्ययन किया जाता है। ये क्षेत्र प्राकृतिक, राजनीतिक या गणित के क्षेत्र हो सकते है। एक क्षेत्र में परिदृश्यों का अध्ययन साकल्यवादी तरीके से विभिन्नता में एकता ढुढ़ने के लिए किया जाता है। उदाहरण के लिए जब हम एक क्षेत्र का चुनाव करते हैं उदाहरणार्थ अपने राज्य का भूगोल तब हम भू-आकृति, अपवहन, जलवायु, मिट्टी, प्राकृतिक वनस्पति, खनिजों, मानव संसाधनों, आर्थिक गतिविधियों, व्यापार, परिवहन और हमारे राज्य की संचार व्यवस्था का अध्ययन करने की ओर प्रवृत होते हैं। इस मामले में प्रयुक्त उपागम क्षेत्रीय उपागम है।

4.5 भूगोल का प्रभाव क्षेत्र

भूगोल का प्रभाव क्षेत्र काफी विशाल है। भूगोल के विषय वस्तु का अध्ययन विशिष्ट शाखाओं

के माध्यम से किया जाता है। ये शाखायें दो उपागमों व्यवस्थित एवं क्षेत्रीय पर आधारित हैं। वह शाखा जो प्राकृतिक विज्ञान से प्रभावित है को भौतिक भूगोल के रूप में जाना जाता है, जबकि सामाजिक विज्ञानों से प्रभावित शाखा को मानवीय भूगोल के रूप में जाना जाता है। अब हम इन शाखाओं के बारे में अधिक जानकारी लेते हैं।

1. **भौतिक भूगोलः**- यह भू-विज्ञान और अन्य प्राकृतिक विज्ञानों से विकसित है। वास्तव में यह एक सामाजिक विज्ञान की अपेक्षा एक प्राकृतिक विज्ञान अधिक है। भौतिक भूगोल इन पर्यावरणीय चरों से सम्बद्ध है:-

   - जलवायु
   - भू आकृतियाँ, शैल के प्रकार और व्यवस्था, भू आकृति और अपवहन से परिपूर्ण
   - प्राणि-समूह और वनस्पति
   - वन्य वनस्पति
   - इन चरों के बीच संबंध

   (i) भू आकृति विज्ञान पृथ्वी की सतह के प्राकृतिक गुणों, उनके विकास और संबंधित प्रक्रियाओं को समर्पित है।

   (ii) जलवायु-विज्ञान वायुमण्डल की संरचना, मौसम के तत्वों जलवायु और जलवायु के प्रकार तथा क्षेत्रों को आवृत करता है।

   (iii) जल मौसम विज्ञान समुद्रों, झीलों, नदियों और अन्य जल स्थलों को सम्मिलित करते हुए पृथ्वी की सतह के जल क्षेत्र का अध्ययन करता है और मानव जीवन और उसकी गतिविधियों को शामिल करते हुए विभिन्न जीव प्रकारों पर इसके प्रभाव का अध्ययन करता है।

   (iv) मृदा भूगोल; भू-निर्माण की प्रक्रियाओं, मिट्टी के प्रकारों, उनकी उत्पादकता की स्थिति वितरण और उनके उपयोग के अध्ययन को समर्पित है।

2. **मानव भूगोलः** मानव भूगोल समाज के स्थानीय संघटन से संबद्ध है। प्रारंभ में लक्ष्य था स्थानों का वर्णन जहाँ लोग रहते थे। हाल ही में संसाधनों और आर्थिक गतिविधियों के क्षेत्रीय वितरण पर कुछ बल प्रदान करने के साथ आर्थिक गतिविधियों ने अधिक ध्यान प्राप्त की है। पर्यावरणीय मुद्दों ने भी ध्यान खींचा है किन्तु इसके विपरीत बड़ा लक्ष्य है कि कैसे पृथ्वी की सतह के गुण लोगों को प्रभावित करते है।

   (i) सामाजिक/सांस्कृतिक भूगोल समाज और इसके स्थानिक गतियों के साथ-साथ समाज द्वारा प्रदत्त सांस्कृतिक तत्वों का अध्ययन करता है।

   (ii) जनसंख्या और बस्ती भूगोल (ग्रामीण और शहरी) यह जनसंख्या वृद्धि एवं वितरण, घनत्व, लिंगानुपात, स्थानान्तरण आयु संरचना, व्यावसायिक संरचना आदि का अध्ययन करता है। बस्ती भूगोल ग्रामीण एवं शहरी बस्तियों के लक्षणों का अध्ययन करता है।

टिप्पणी

(iii) आर्थिक भूगोल लोगों की आर्थिक गतिविधियों के साथ-साथ कृषि, उद्योग, पर्यटन, व्यापार, परिवहन, आधारभूत संरचनायें और सेवाओं आदि का अध्ययन करता है।

(iv) ऐतिहासिक भूगोल ऐतिहासिक प्रक्रियाओं का अध्ययन करता है जिसके माध्यम से स्थान संघटित होते हैं। वर्तमान स्थिति को प्राप्त करने से पहले प्रत्येक क्षेत्र ने कुछ ऐतिहासिक अनुभवों को भोगा है। भौगोलिक लक्षणों ने सांसारिक परिवर्तनों और ऐतिहासिक भूगोल से संबद्ध इन रूपों का भी अनुभव किया है।

(v) राजनीतिक भूगोल स्थान को राजनीतिक घटनाओं के दृष्टिकोण से देखता है और सीमाओं, पड़ोसी इकाईयों के बीच स्थानिक संबंधों, चुनाव-क्षेत्रों के सीमा निर्धारण, चुनाव परिदृश्य का अध्ययन करता है और जनसंख्या के राजनीतिक व्यवहार को समझने के लिए सैद्धान्तिक ढाँचा विकसित करता है।

3. प्राणि-भूगोल

भौतिक भूगोल और मानव भूगोल के बीच अंत: पृष्ठ में प्राणि-भूगोल का विकास स्थित है जिनमें सम्मिलित हैं:-

(i) पादप भूगोल प्राकृतिक वनस्पति के स्थानिक प्रतिमान और उनके अधिवास का अध्ययन करता है।

(ii) प्राणि भूगोल जानवरों के भौगोलिक लक्षणों और स्थानिक प्रतिमानें तथा उनके अधि वासों का अध्ययन करता है।

(iii) पारिस्थितिकी/परिस्थितिक तंत्र अधिवासों और जातियों के लक्षणों के वैज्ञानिक अध्ययन का सामना करता है।

(iv) पर्यावरणीय भूगोल पर्यावरणीय संबद्धों और मुद्दों का सामना करता है।

क्षेत्र-भुगोल

(i) क्षेत्रीय अध्ययनों/क्षेत्र का अध्ययन: वृहत मध्य एवं सूक्ष्म क्षेत्रीय अध्ययनों को समाविष्ट करता है।

(ii) क्षेत्रीय योजना:- देश/ग्रामीण और शहरी योजना को समाविष्ट करता है।

(iii) क्षेत्रीय विकास

(iv) क्षेत्रीय विश्लेषण

इन मुख्य शाखाओं के अतिरिक्त दो पहलु है जो प्रत्येक विषय में उपस्थित हैं, ये हैं:-

(i) दर्शन शास्त्र

(a) भौगोलिक विचार

(b) भूमि एवं मानव अंत क्रिया/मानव पारिस्थितिकी

(ii) विधियाँ और तकनीकें

(a) कम्प्यूटर चित्रकारी के साथ मानचित्रण

(b) मात्रात्मक तकनीकें/सांख्यिकीय विधियाँ

(c) क्षेत्र सर्वेक्षण विधियाँ

(d) भू-सूचनातंत्र तकनीकों जैसे सुदूर संवेदी GIS, GPS आदि को समाविष्ट करता है।

व्यवस्थित उपागम पर आधारित भूगोल का विषय क्षेत्र चित्र 4.1 में प्रदर्शित है।

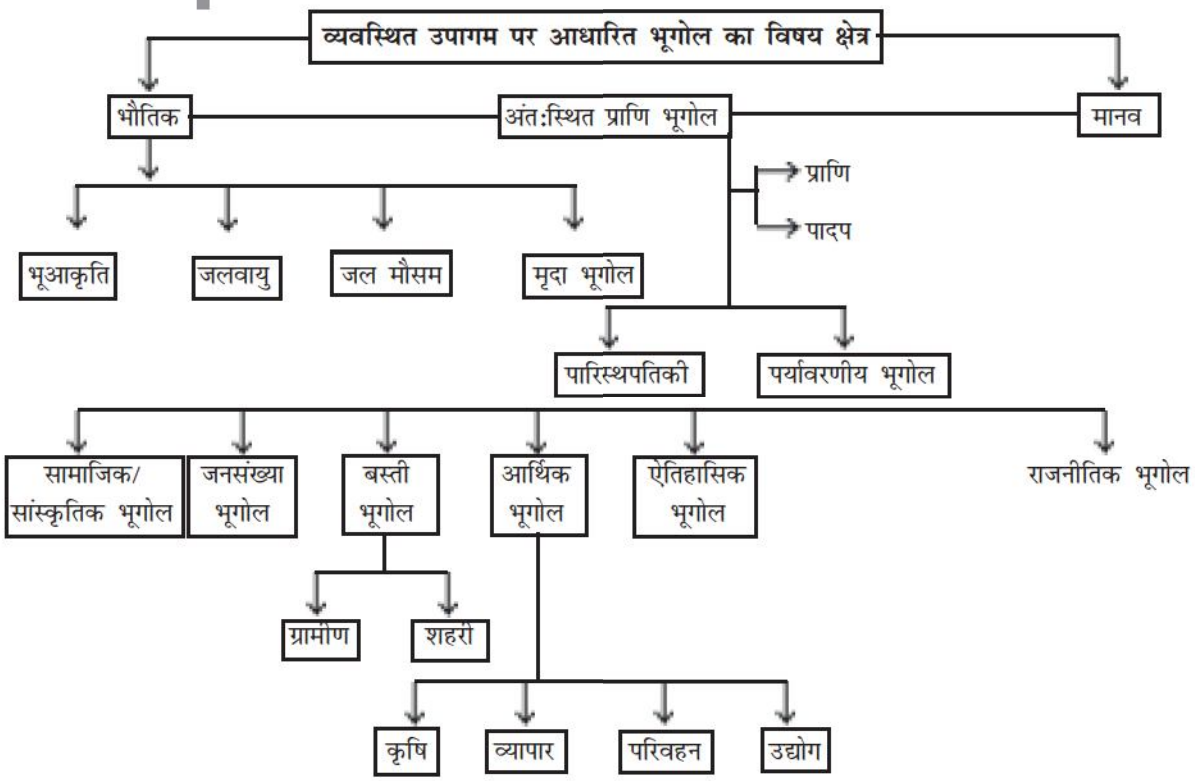

चित्र 4.1 व्यवस्थित उपागम पर आधारित भूगोल का विषय क्षेत्र

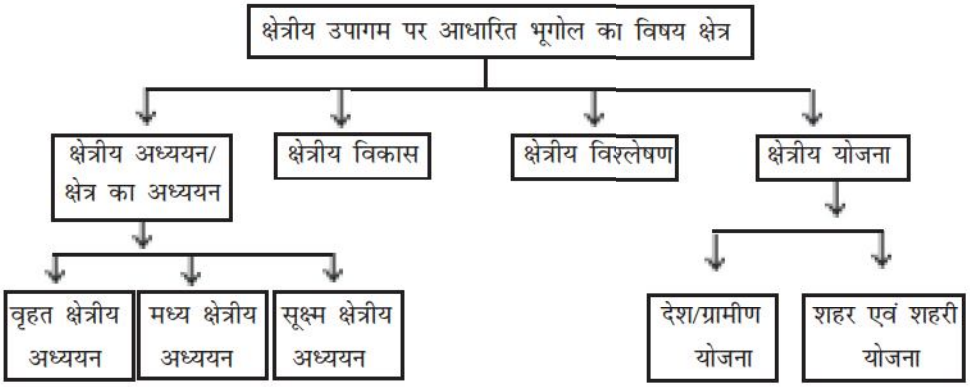

चित्र 4.2 क्षेत्रीय उपागम पर आधारित भूगोल का विषय क्षेत्र

चिन्तन एवं विधियों पर आधारित भूगोल

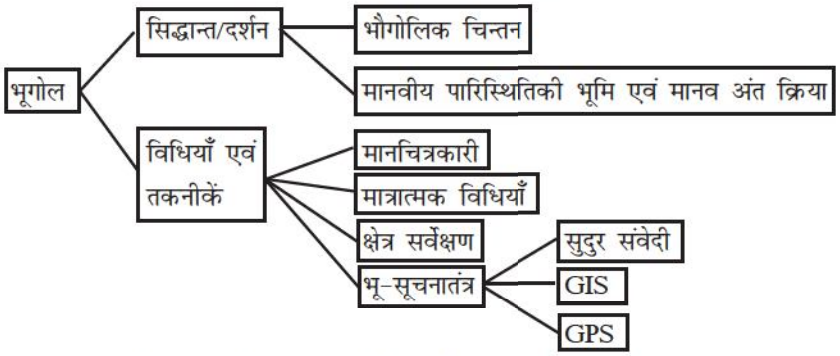

चित्र 4.3 चिन्तन एवं विधियों पर आधारित भूगोल

प्रगति जाँच-2

नोट- (a) आपके जवाब के लिये स्थान नीचे दिया गया है।

(b) इकाई के अन्त में दिये गये जवाब से अपने जवाब की तुलना करें।

1. भूगोल के शिक्षण-अधिगम में क्षेत्रीय एवं व्यवस्थित उपागम के लक्षणों को प्रदर्शित करें।

.....

.....

.....

2. अपनी भूगोल की पाठ्यपुस्तक का एक अवलोकन करें और भूगोल का सामना करने में अपनाये गये उपागम को समझने की कोशिश करें।

.....

.....

.....

टिप्पणी

4.6 उच्च प्राथमिक स्तर पर भूगोल का शिक्षण

अब तक हमने भूगोल का अध्ययन सामाजिक विज्ञान के एक घटक के रूप में किया है। अब हमारे पास भूगोल की जरूरत, प्रकृति, विषय वस्तु, उपागमों और शाखाओं के बारे में स्पष्ट ध ारणा है। इस खण्ड में हम उच्च प्राथमिक स्तर पर भूगोल शिक्षण के विशिष्ट मूलाधार का सामना करेंगे और इस स्तर पर भूगोल शिक्षण के उद्देश्यों से अपने आप को परिचित भी करेंगे। आप को जानकारी हैं कि सामाजिक विज्ञानों का शिक्षण अधिगम पाठ्यसहगामी क्षेत्रों का एक अनिवार्य अंग है। इस पाठ्य सहगामी क्षेत्र के महत्व को विद्यालयी शिक्षा के सभी स्तरों पर अनुभूत किया जा सकता है जैसे- प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक। निस्सन्देह प्रकृति, विषय वस्तु और उपागम बदलते रहते हैं। प्राथमिक स्तर पर कक्षा V तक यह विषय पर्यावरण विज्ञान के रूप में पढ़ाया जाता है। सम्पूर्ण प्राथमिक स्तर पर यह एक एकीकृत पाठ्यचर्या क्षेत्र के रूप में अनुभूत किया जाता है। इस स्तर पर पर्यावरण विज्ञान का पाठ्यक्रम बच्चों के जीवन के नजदीक छः सामान्य विषयों जैसे परिवार और वस्त्र, भोजन और आश्रय, पानी, यात्रा और वस्तुएँ जो हमने बनाई हैं के इर्द-गिर्द बुना गया है। क्या आप सम्बद्ध कर सकते हैं कि कैसे भूगोल पर्यावरण से बहुत अधिक सम्बन्धित है? निम्न प्राथमिक कक्षा 1-II स्तर पर पर्यावरण विज्ञान के घटक भाषा और गणित के साथ एकीकृत हैं। इसका अर्थ है, पर्यावरण विज्ञान निम्न प्राथमिक स्तर पर पाठ्यक्रम का भी एक अंग है। पर्यावरण विज्ञान का पाठ्यक्रम राष्ट्रीय पाठ्यचर्या ढाँचा 2005 के आधार पर बनाया गया है जो बच्चे का ध्यान समय, स्थान और समाज मे जीवन के विस्तृत विस्तार की ओर खींचने का प्रयास करता हैं, उन तरीकों से एकीकृत करता है जिनमें वह अपने आसपास के संसार का अवलोकन करता है और समझता है। उच्च प्राथमिक स्तर पर यह प्रक्रिया जारी रहती है किन्तु अधिक ध्यान विशिष्ट विषयों और उन विषयों जिसके माध्यम से सामाजिक विज्ञान के परिप्रेक्ष्यों का विकास हुआ है की ओर होता है।

4.6.1 मूलाधार और उद्देश्य

इस उपखण्ड में हम आपको राष्ट्रीय पाठ्यचर्या ढाँचा 2005 के आधार पर बनाये गये उच्च प्राथमिक स्तर पर भूगोल शिक्षण के मूलाधार से परिचित कराते हैं। हम जानते हैं कि भूगोल सामाजिक विज्ञान का एक अनिवार्य घटक है। इस स्तर पर अधिगमकर्ता जिस संसार में रहते हैं उसको समझने के लिए आवश्यक मूल अवधारणाओं से परिचित होते हैं। भूगोल विविध क्षेत्रों और देशों की अन्तः निर्भरता की समझ बढ़ाने में प्रवर्तित करता है। बच्चा समकालीन मुद्दों जैसे आर्थिक संसाधनों का वैश्विक वितरण, लिंग, पार्श्व समूह, पर्यावरण और वैश्वीकरण की जारी प्रक्रियाओं से परिचित होता है। इस स्तर पर पाठ्यक्रम मानव जाति के अधिवास के रूप में पृथ्वी, पर्यावरण का अध्ययन, संसाधनों और विभिन्न स्तर पर विकास स्थानीय, क्षेत्रीय/राष्ट्रीय और विश्व को समाविष्ट करता है।

अब हम राष्ट्रीय पाठ्यचर्या ढाँचा 2005 के आधार पर भूगोल शिक्षण के उद्देश्यों को जानते हैं। पाठ्यक्रम के मुख्य उद्देश्य निम्न हैं:-

टिप्पणी

- मानवजाति के अधिवास के रूप में पृथ्वी और जीवन के अन्य रूपों के बारे में समझ विकसित करता है।
- अधिगम कर्त्ता को वैश्विक सन्दर्भ में उनके अपने क्षेत्र राज्य और देश के अध्ययन में प्रवर्तित करता है।
- आर्थिक संसाधनों के वैश्विक वितरण और वैश्वीकरण की जारी प्रक्रियाओं को प्रवर्तित करता है।
- विविध क्षेत्रों और देशों की अन्त: निर्भरता की समझ प्रोन्नत करता है।

4.6.2 विषय वस्तु की रूपरेखा

इस उपखण्ड में हम उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान के भूगोल घटक के अन्तर्गत पढ़ायी जाने वाली विषय वस्तु की रूपरेखा प्रदान करते हैं। पाठ्यक्रम संरचना की रूपरेखा राष्ट्रीय पाठ्यचर्या ढाँचा 2005 पर आधारित है। आओ हम पाठ्यक्रम अभिकल्पकों द्वारा गठित अधिगम उद्देश्यों से परिचय प्राप्त करते हैं।

कक्षा VI : पृथ्वी हमारा अधिवास

विषय (प्रसंग)	उद्देश्य
ग्रह सौर प्रणाली में पृथ्वी ग्लोब: पृथ्वी, अक्षांश, देशान्तर, पृथ्वी की गतियाँ, धूर्णन और परिक्रमण।	सौर प्रणाली में पृथ्वी का अद्वितीय स्थान समझने में जो कि मानव सत्ता को सम्मिलित करते हुए जीवन के सभी रूपों की आदर्श स्थिति प्रदान करता है।
मानचित्र : मानचित्र के अनिवार्य घटक, दूरी, निर्देश और चिहन।	पृथ्वी की दो गतियों और उनके प्रभाव को समझने में। मानचित्र अध्ययन के मूल कौशलों की विकसित करने में।
पृथ्वी के चार क्षेत्रों :- स्थल मण्डल, जल मण्डल, वायु मण्डल और जैव मण्डल: महाद्वीप और समुद्र।	पृथ्वी के क्षेत्रों के अन्त: सम्बन्धों को समझने में।
पृथ्वी के मुख्य भू आकृति की विशेषतायें।	पृथ्वी, जलवायु, वनस्पति और वन्य जीव का मानव जीवन पर प्रभाव समझने में।
भारत और विश्व: भारत का भौगोलिक विभाजन पर्वत, पठार, मैदान, जलवायु, प्राकृतिक वनस्पति और वन्य जीव: उनके संरक्षण की जरूरत।	प्राकृतिक वनस्पति और वन्यजीव के संरक्षण के लिए जरूरत का मूल्यांकन करने में।

कक्षा VII हमारा पर्यावरण

विषय (प्रसंग)	उद्देश्य
अपनी सम्पूर्णता में पर्यावरण; प्राकृतिक एवं मानवीय पर्यावरण।	विविध घटकों प्राकृतिक एवं मानवीय दोनों को सम्मिलित करते हुए पर्यावरण को इसकी सम्पूर्णता में समझने में।
प्राकृतिक पर्यावरण : भूमि-भूगर्भ, चट्टानें तथा खनिज, पृथ्वी की गतियाँ और प्रमुख भू-आकृतियाँ। (भूकम्प से संबंधित एक केस अध्ययन होना चाहिए)	प्राकृतिक पर्यावरण के घटकों को व्याख्यायित करने में। हमारे जीवन में इन घटको और उनके महत्व की अन्त: निर्भरता का प्रोत्साहन करने में।
वायु- संघटन, वायुमंडल की संरचना, मौसम और जलवायु के तत्व- तापमान, दाब, आर्द्रता, और हवायें। (चंक्रवात से संबंधित एक केस अध्ययन हो)	पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता विकसित करने को प्रोत्साहित करना।
जल - स्वच्छ, नमकीन, प्रमुख जलाशयों का वितरण समुद्री जल और उनका परिसंचरण। (सुनामी से संबंधित एक केस अध्ययन हो)	वायुमंडल और इसके तत्व को समझने में। पृथ्वी पर पानी के वितरण को जानने में।
प्राकृतिक पर्यावरण: व्यवस्था, परिवहन और संचार व्यवस्था	विविध वनस्पति और जीव-जन्तुओं की प्रकृति का पता लगाने में।
मानव- पर्यावरण अंत : क्रिया : केस अध्ययन-मरूस्थल में	प्राकृतिक पर्यावरण और मानवीय आवास के बीच संबंधों को व्याख्यायित करना।
जीवन- सहारा, लद्दाख; उष्णकटिबंधी और उपोष्ण क्षेत्रों अमेजन और गंगा-ब्रह्मपुत्रा; शीतोष्ण क्षेत्र - प्रेयरी और वेल्ड।	समकालीन संसार को बनाने के लिए परिवहन और संचार की जरूरत को प्रोत्साहित करने में जो कि मानव सत्ता और उनके पर्यावरण के बीच अंतक्रिया का एक बाहय स्रोत है।

कक्षा-VIII संसाधन और विकास

विषय (प्रसंग)	उद्देश्य
संसाधन; संसाधन और उनके प्रकार-प्राकृतिक और मानवीय।	संसाधनों, उनके प्रकार, स्थिति और वितरण के अर्थ को जानना।
प्राकृतिक संसाधन; उनकी उपयोगिता एवं संरक्षण, भूमि एवं मिट्टी, जल, प्राकृतिक वनस्पति, वन्य जीव, खनिज और शक्ति संसाधन (विश्व का नमूना, भारत के विशेष संदर्भ में)।	हमारे जीवन में संसाधनों के महत्व को समझना। धारणीय विकास के लिए संसाधनों के न्याससंगत उपयोग को प्रोत्साहित करना।
कृषि; खेती के प्रकार, प्रमुख फसलें, फाइबर, पेय, कृषि का विकास, दो केस अध्ययन-एक भारत से और दूसरा एक विकसित देश से- अमेरिका,	संसाधनों के संरक्षण के प्रति जागरूक करना और संरक्षण प्रक्रिया के प्रति पहल करना।

टिप्पणी

नीदरलेंण्ड, आस्ट्रेलिया का एक फार्म। उद्योग: आकार, कच्ची सामग्री, मालिकाना के आधार पर उद्योगों का वर्गीकरण; प्रमुख उद्योग और वितरण आधारभूत संरचना और विकास। लौह एवं इस्पात (जमशेदपुर एवं अमेरिका में डेट्रायट का तुलनात्मक अध्ययन) वस्त्र उद्योग (अहमदाबाद और ओसाका) सूचना तकनीक (बैंगलोर और सिलिकान घाटी) मानवीय संसाधनों:- संघटन, जनसंख्या परिवर्तन वितरण और घनत्व)	दो विभिन्न क्षेत्रों में खेती के प्रकार और कृषि के विकास के बारे में जानना। विनिर्माण उद्योगों के महत्वपूर्ण प्रकारों को समझना। राष्ट्र की अर्थव्यवस्था के विकास में मानवीय संसाधनों की भूमिका को समझना।

4.7 पाठ योजना : परिवहन

पूर्वालोकन

इन खण्ड में हम 'परिवहन' पर इसके भौगोलिक परिप्रेक्ष्य में एक मुद्दे के रूप में मिलेंगे। शिक्षण बिन्दुओं अधिगम उद्देश्यों को बताने और शिक्षा के साथ उपयुक्त शिक्षण विधियों को ग्रहण कर आपको एक पाठ योजना बनाने का प्रयास करना है। प्रारूप में यद्यपि कुछ राज्यों के उदाहरण दिये गये हैं, विद्यार्थियों को परिहवन के बारे में समझ बनाने में सहायता के लिए आप अपने राज्य या पड़ोसी राज्य का उदाहरण लेने के लिए मुक्त हैं। यह भी आवश्यक है कि विद्यार्थियों को पाठ्य पुस्तक के इंतर जाने और उनके अनुभवों को समृद्ध करने का अवसर दिया जाये।

उद्देश्य:-

इस पाठ योजना का अध्ययन कर आप सक्षम होंगे:-

- परिवहन के विषय वस्तु का विश्लेषण करने में।
- अधिगम को सुसाध्य करने के लिए विषय वस्तु को क्रमबद्ध करने में।
- अध्याय के अधिगम उद्देश्यों को तैयार करने में।
- अधिगम को सुसाध्य करने के लिए रणनीतियों का सुझाव देने में।
- शिक्षण अधिगम संसाधनों का उपयोग करने और पहचानने में।
- अधिगम उद्देश्यों को प्राप्त करने में गतिविधियों को कार्यन्वित करने और लिखने में।
- प्रवाह चार्ट और आरेख खींचने में।
- अध्याय के सभी स्तरों पर मानचित्रों का उपयोग करने में।

टिप्पणी

शिक्षण बिन्दु

परिवहन की पद्धतियाँ–सड़क यातायात, रेलवे, जलयातायात और हवाई यातायात।

एक दिये गये स्थान पर परिवहन की पद्धतियों की उपलब्धता के लिए उत्तरदायी कारक।

जनसंख्या वितरण, आर्थिक विकास और सांस्कृतिक परिवर्तन का परिवहन पर प्रभाव।

शिक्षण-अधिगम संसाधन

मानचित्र–भौतिक, एक शहर का यात्री मानचित्र, परिवहन की पद्धतियों।

तस्वीरें–यातायात के साधन, मानव व्यवस्थापन, भूभाग, भूस्खलन, सड़क अवरोध, जीवन के अनुभवों।

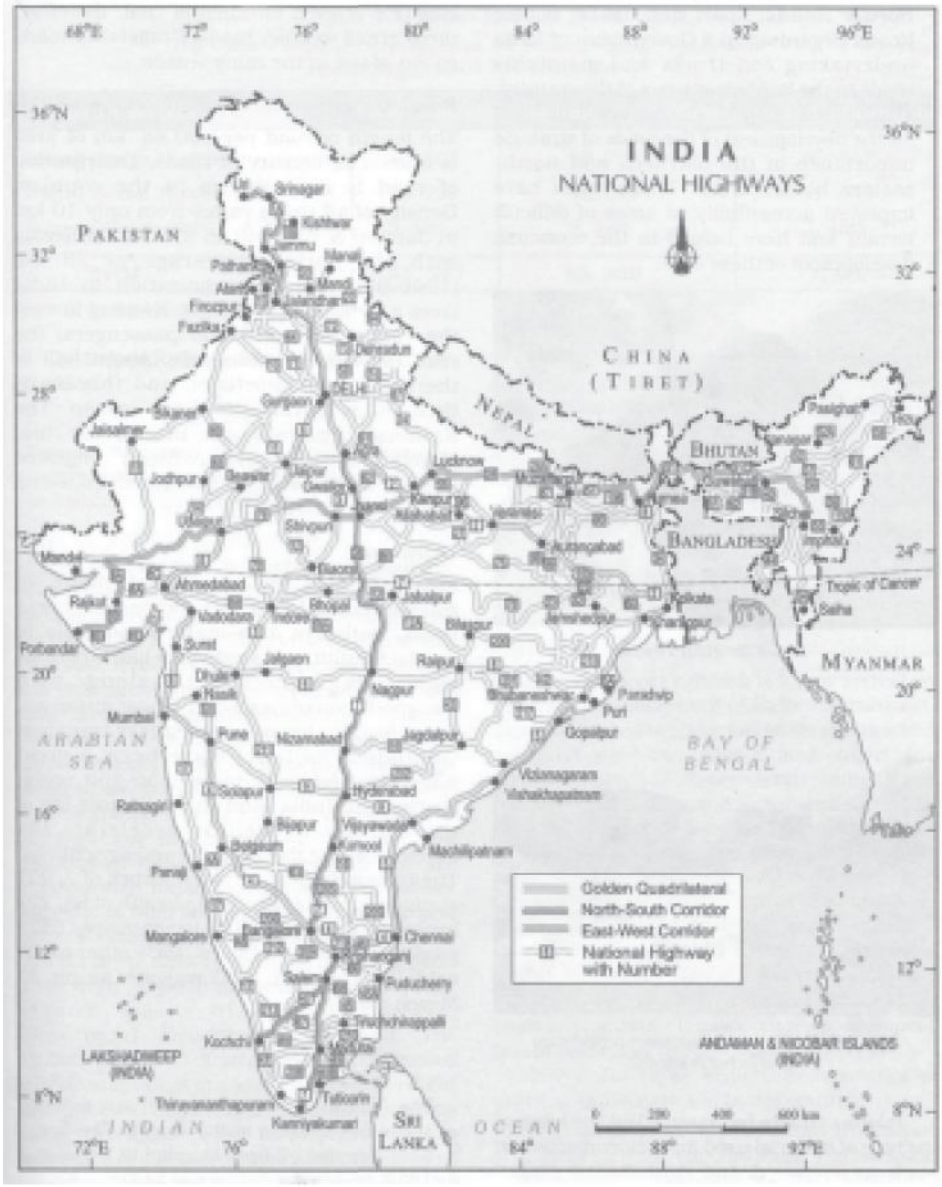

तस्वीर-1-भारत : राष्ट्रीय राजमार्ग

टिप्पणी

तस्वीर - 2- भारतः हवाई यातायात

टिप्पणी

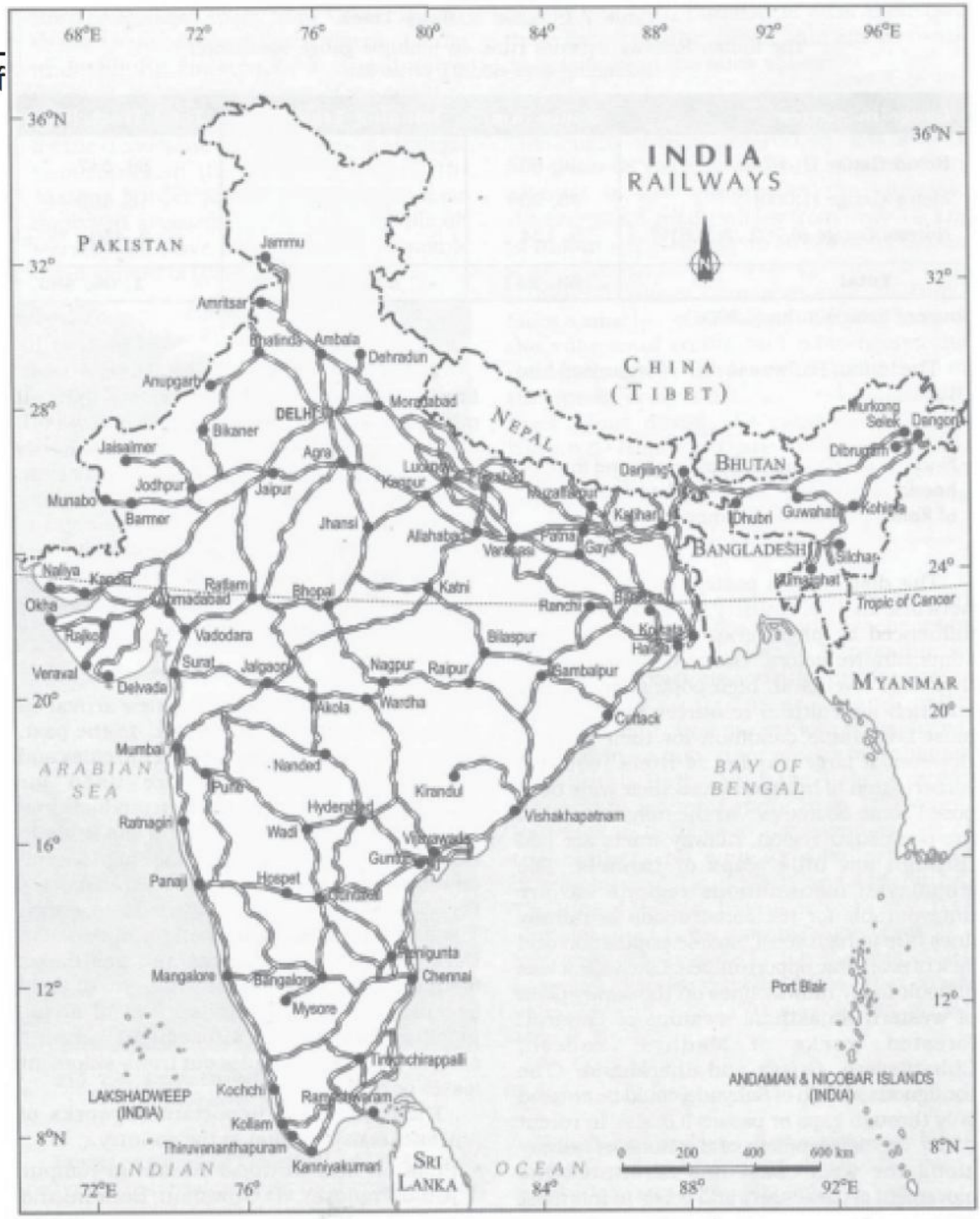

तस्वीर - 3- भारतः रेल यातायात

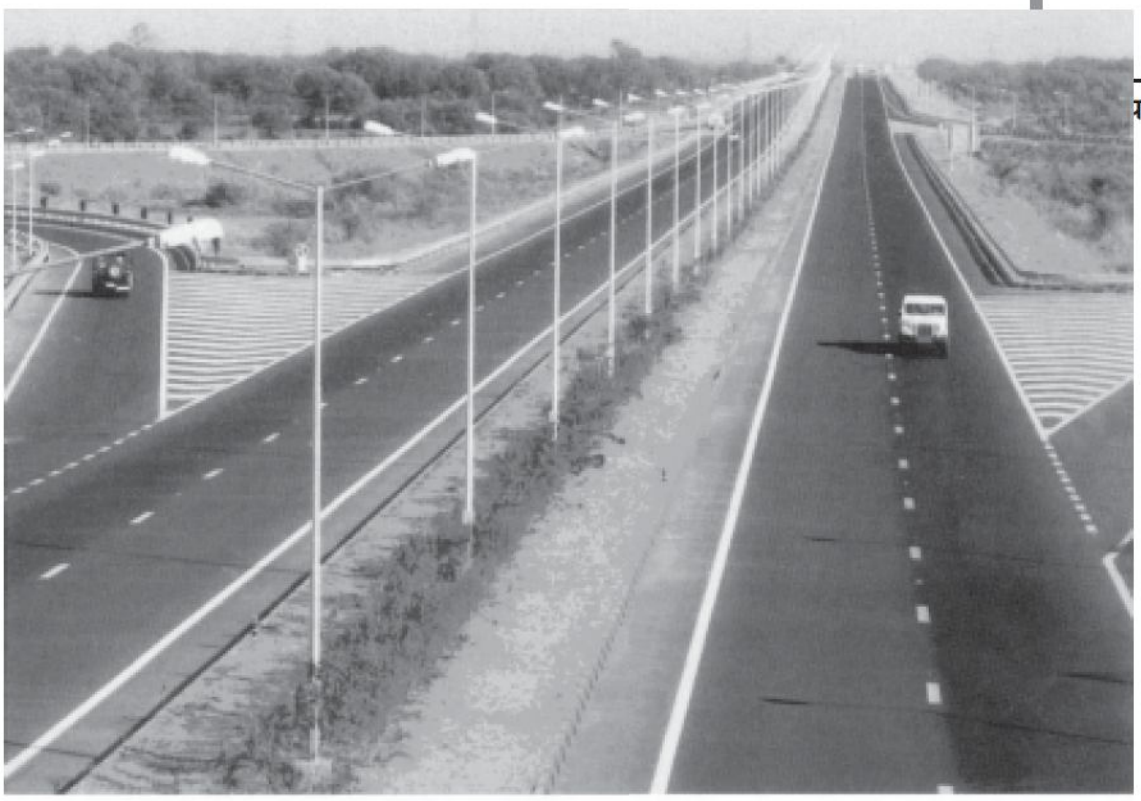

तस्वीर - 4- एक्सप्रेस राजमार्ग

तस्वीर-5- पर्वतीय प्रदेशों को दिखाता

टिप्पणी

गतिविधियों का क्रमः-

प्रायः प्रत्येक शिक्षक कॉफी तैयारी के बाद कक्षा में जायेंगे। एक अध्याय की योजना उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि एक अध्याय का शिक्षण। कृपया अध्याय में परिवहन को देखें और केन्द्रीय बिन्दुओं को पहचानें। इनमें से कुछ नीचे दिये गये हैं:-

- परिवहन हमारे दैनिक जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- परिवहन की उपलब्धता विविध कारकों पर निर्भर करता है।
- परिवहन के विभिन्न साधन और तरीके हैं।
- उत्तर-पूर्वी राज्यों में परिवहन का सामान्य साधन सड़क यातायात है।
- सड़क यातायात के विभिन्न तरीके हैं–अंतर्राष्ट्रीय राजमार्ग, राष्ट्रीय राजमार्ग, राज्य राजमार्ग, जिला स्तरीय सड़के और ग्रामीण सड़कें।

अब आप अध्याय से अन्य केन्द्रीय बिन्दुओं को पहचानें और उन्हें नीचे दिये गये बॉक्स में लिखें:-

शिक्षण बिन्दुओं को पहचानने के बाद शिक्षण के उद्देश्य के लिए उनको क्रमबद्ध करना अपेक्षित है। ऊपर लिखे गये सभी शिक्षण बिन्दुओं को देखें और नीचे दिये गये स्थान में उन्हें क्रमबद्ध करें।

टिप्पणी

विषय वस्तु के बिन्दुओं को पहचानते और क्रमबद्ध करते हुए विषय वस्तु पर आधारित अधिगम उद्देश्यों को बताना आवश्यक है, जो कि इस प्रकार है:-

परिवहन के महत्व का अन्वेषण करना।

परिवहन की विभिन्न पद्धतियों को पहचानना।

सड़कों के प्रकार को पहचानना।

आशा है अब आप अधिगम उद्देश्यों को सूत्रबद्ध करना जान गये हैं। क्या आप परिवहन विषय के शेष भाग से कुछ अधिगम उद्देश्यों को ढाँचा बद्ध करना चाहेंगे? आप उन्हें नीचे दिये गये बॉक्स में लिख सकते हैं:-

अब हम अधिगम से संबंधित गतिविधियों को ढाँचा बद्ध करते हैं और विद्यार्थियों को परिवहन की जानकारी प्राप्त करने में सुसाध्य करते हैं।

कक्षा में किसी विषय पर विचार विमर्श करने से पूर्व विषय से संबंधित विद्यार्थियों के अनुभवों का उपयोग करने की सलाह दी जाती है। आओं देखें उनके अनुभव का उपयोग कर कैसे विचार विमर्श उत्पन्न करते है।

विद्यार्थियों के पास भूस्खलन के कारण सड़क अवरोध या अन्य मानवीय गतिविधियों की अनुभूति होनी चाहिए। उनसे इसके कारणों और सड़क अवरोध के प्रभाव के बारे में बात करें।

सड़क अवरोध की तस्वीर

विचार विमर्श कुछ प्रश्नों से शुरू हो सकता है। कुछ उदाहरण नीचे दिये गये हैं:-

सड़क अवरोध की अनुभूति किसे है?

सड़क अवरोध कहाँ था?

कितना लम्बा था यह?

सड़क अवरोध क्यों हुआ?

इसने आपकी गति को कैसे प्रभावित किया?

यह लोगों के नियमित कार्य को कैसे प्रभावित करता है?

उपर्युक्त प्रश्नों का जवाब देने के पश्चात् विद्यार्थियों से एक अच्छे अनुमान को बनाना अपेक्षित है। अत: उनसे पूछे–'मानो सड़क अवरोध एक सप्ताह तक चलता है तो लोगों के दैनिक जीवन में क्या होगा?'

किन तरीकों से हम सड़क अवरोध से पार पाते हैं?

उपर्युक्त गतिविधि विद्यार्थियों को परिवहन का महत्व समझने में समर्थ बनायेंगी।

अब हम विद्यार्थियों को दैनिक जीवन में प्रयुक्त होने वाली सामग्रियों का नाम लिखने को कहें। इन्हें श्यामपट्ट पर सूचीबद्ध करें। इन्हें स्थानीय एवं अस्थानीय वृद्धि में वर्गीकृत करें। उनसे कहें वे उन वस्तुओं को कहाँ से प्राप्त करते हैं? वे उन्हें कैसे प्राप्त करते है? वे वस्तुएं दुकानों तक और आगे कैसे पहुँचती है? ये प्रश्न विद्यार्थियों से परिवहन को व्याख्यायित करने की शब्दावली में प्राप्त करने के उद्देश्य से पूछे, जाने चाहिए।

परिवहन के मानचित्रों (भारत के सड़क मार्ग, रेल मार्ग, जल मार्ग और वायु मार्ग) को प्रदर्शित करें। उन्हें उत्तरपूर्वी भारत, जम्मू और कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड आदि राज्यों में उपलब्ध यातायात की पद्धतियों का पता लगाने को कहें। उन्हें श्यामपट्ट पर सूची बद्ध करें। परिवहन की पद्धतियों पर पर्याप्त विचार विमर्श के बाद आप आरेख खींचने में विद्यार्थियों की सहायता कर सकते हैं।

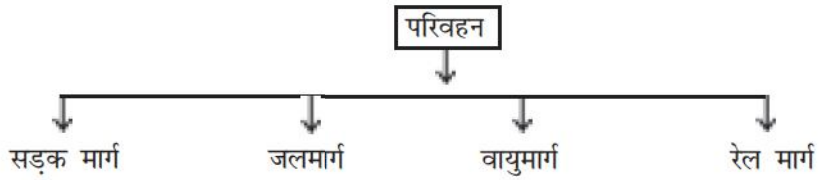

तस्वीर - 6 परिवहन की पद्धतियाँ

उन्हें यातायात की विभिन्न पद्धतियों से जुड़े महत्वपूर्ण स्थानों का नाम लिखने को भी कह सकते हैं।

एक बार अधिगमकर्ता परिवहन की पद्धतियों से परिचित हो जाता है तो उन्हें 'भारत के परिवहन' पर विचार विमर्श और अन्वेषण की योजना की स्वीकृति दे सकते हैं। विद्यार्थियों के प्रत्येक समूह में लगभग विद्यार्थियों की समान संख्या के साथ परिवहन की चार पद्धतियों पर कार्य करने के लिए उनके समूह बनाने को कह सकते हैं। परिवहन के एक तरीका को चुनने

टिप्पणी

में उन्हें पर्याप्त समय एवं स्वतंत्रता दें। विद्यार्थियों को उनके द्वारा चुनी गयी परिवहन की पद्धति की उपलब्धता को दिखाने वाली सूचना तस्वीरे और मानचित्रों का संग्रह करने को कहें। उपयुक्त समयान्तरालों पर आप उन्हें दिशा निर्देश देंगे। अनुसंधान के अन्त में प्रत्येक समूह उनके द्वारा संग्रहित की गई सामग्रियों को व्यवस्थित करेंगे और विचार विमर्श के द्वारा कक्षा में प्रस्तुत करेंगे।

मस्तिष्क को झकझोर देने वाले सत्र के आयोजन के द्वारा अब आप यातायात के फायदे बता सकते हैं। प्रत्येक विद्यार्थी से कम से कम परिवहन का एक फायदा बताने को कहें। श्यामपट्ट पर उन्हें सूची बद्ध करें। आप श्यामपट्ट पर तीन-चार फायदों को रेखांकित कर सकते हैं जो कि आर्थिक विकास (जैसे खनिजों, उपभोक्ता वस्तुओं का परिवहन) का मार्गदर्शन करते हैं और विद्यार्थियों को बतायें कि कैसे परिवहन देश के विकास में योगदान करता है। आओ विद्यार्थियों जाने कि सभी स्थान विभिन्न वस्तुओं के उत्पादन में स्वयं में पर्याप्त नहीं होते। वे हमेशा अन्त निर्भर होते हैं। अन्त निर्भरता किसी भी अन्य स्थानीय, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय) पर हो सकती है। आओ विद्यार्थियों पता लगायें कि कौन सी वस्तुएं इस स्थान से बाहर भेजी जाती हैं और कौन सी वस्तुएँ अन्य स्थानों से इस स्थान पर खरीदी जाती हैं। इसे विद्यार्थियों को एक सर्वेक्षण के द्वारा बताया जा सकता है जो नीचे वर्णित हैं:-

सड़क पर वाहनों का सर्वेक्षण:-

कक्षा को समूहों में विभाजित किया जा सकता है और आप विभिन्न स्थानीय क्षेत्रों का लेखाचित्र आवंटित कर सकते हैं। प्रत्येक समूह में प्रत्येक विद्यार्थी 10 मिनट के लिए विभिन्न प्रकार के वाहनों (पशुगाड़ी, दो-पहिया, तिपहिया, हल्के वाहन, कार, भारी वाहन/ट्रक और बसों) को गिन सकते हैं। उन वाहनों की पंजीकरण संख्या भी नोट करें जो अन्य राज्यों के है। ट्रकों द्वारा भेजी गयी वस्तुओं के बारे में बड़े लोगों से सूचना एकत्र कर सकते हैं।

विद्यार्थियों द्वारा सर्वेक्षण पूरा करने के पश्चात् उन्हें समूहों में बैठाये और उनके प्रेक्षणों को वाहनों की संख्या और उनके प्रकार के आधार पर नीचे दी गयी सारणी में समेकित करें।

स्थानीय परिवहन की भूमिका:-

समूह संख्या :-

प्रेक्षण स्थल :-

समय:-

अवधि : 10 मिनट

वाहन के प्रकार	प्रेक्षित किये गये वाहनों की संख्या	पंजीकरण (राज्य के वाहन)	अन्य राज्यों के पंजीकरण वाले वाहन
पशु गाड़ी			
दो-पहिया			
ती पहिया			
हल्के वाहन/कारे			
भारी वाहन/बसें			
भारी वाहन/ट्रकें			

सर्वेक्षण से प्राप्त डाटा संपूर्ण कक्षा के लिए समेकित किया जा सकता है और लोगों तथा सामानों के परिवहन के संदर्भ में चर्चा की जा सकती है। प्रदूषण कम करने के सलाह देने के लिए विभिन्न वाहनों से उत्पन्न प्रदूषण पर भी चर्चा हो सकती है।

उपर्युक्त सर्वेक्षण डाटा आर्थिक विकास में परिवहन की भूमिका पर चर्चा के लिए भी प्रयुक्त किया जा सकता है। कुछ अग्रणी प्रश्न बनायें जिन्हें आप कक्षा में चर्चा शुरू करने के लिए पूछ सकेंगे स्थान नीचे दिया गया है:-

भारत के परिवहन मानचित्र का प्रयोग करें। विद्यार्थी अपने राज्य में परिवहन के प्रकार को पहचानें। परिवहन के विभिन्न तरीकों की उपलब्धता अनुपलब्धता/अभाव के कारणों का पता लगायें। पाठ्य पुस्तक में दी गयी सूचना के अतिरिक्त सूचना और दृश्यों की सहायता से कक्षा में एक चर्चा की जा सकती है। कुछ प्रश्न जो चर्चा प्रारंभ करने के लिए पूछे जा सकते हैं:-

सिक्किम में रेलवे क्यों नहीं है?

सभी उत्तर पूर्वी राज्यों में अन्य साधनों की अपेक्षा सड़क का अधिक जाल है क्यों?

कुछ स्थानों पर परिवहन के लिए पशुओं का प्रयोग किया जाता है क्यों?

टिप्पणी

दिये गये स्थान पर परिवहन के विभिन्न साधनों की उपलब्धता, अनुपलब्धता के लिए उत्तरदायी कुछ कारकों को समझने में विद्यार्थियों की सहायता के लिए यह चर्चा अपेक्षित है।

अब आप अपने राज्य का उदाहरण ले सकते हैं विद्यार्थी को समझा सकते हैं कि क्यों राज्य के प्रत्येक भाग में परिवहन के सभी साधन उपलब्ध नहीं हैं। आप इसे कैसे करेंगे? कृपया नीचे दिये गये बॉक्स में व्याख्या करें।

पाठ्य-पुस्तक में दी गयी जानकारी की अपेक्षा विद्यार्थी हमेशा अधिक जानना पसंद करते हैं। आप उन्हें घर या पड़ोस के बड़े लोगों से बात करने को कह सकते हैं और उनके प्रारंभिक दिनों के दौरान के परिवहन के बारे में पता लगाने को कहें। अधिगमकर्ताओं को चिन्तन करने की अनुमति दे कि ऐसा क्यों था? अब यह भिन्न क्यों है? परिवहन के संदर्भ में उन्हें भूत एवं वर्तमान की तुलना करनेके लिए उन्हें प्रोत्साहित करें और क्षेत्र में की गई प्रगति के लिए उन्हें सम्मान दें। भूतकाल के परिवहन की चर्चा के पश्चात् अधिगमकर्ताओं को 'भारत में परिवहन' से परिचित कराना होगा। परिवहन के मानचित्र प्रदर्शित करने के लिए विद्यार्थियों की सहायता के लिए आप प्रमुख प्रश्न पूछ सकते हैं। कुछ प्रश्न जो पूछे जा सकते हैं नीचे सूचीबद्ध हैं:-

- गंगा नदी का कौन सा भाग नौ वहन योग्य है?
- गंगा नदी का संपूर्ण भाग नौ वाहन योग्य क्यों नहीं है?
- जम्मू और काश्मीर तथा उत्तर पूर्वी क्षेत्र में रेलयातायात एवं वायु यातायात के जाल का प्रेक्षण करें। आपने क्या विभिन्नता अवलोकित किया? ऐसा क्यों है?
- राष्ट्रीय कोरिडोर और स्वर्णिम चतुर्भुज को पहचानें/ राज्यों की सूची बनाये जिनसे ये गुजरते हैं। इन मार्गों के क्या लाभ है?

ऊपर दिये गये प्रश्नों के समान आप कुछ अधिक प्रश्न पूछ सकते हैं और विद्यार्थियों से उनके अनुभवों के आधार पर जवाब प्राप्त करें।

आप मानवीय व्यवस्थापनों का चित्र प्रदर्शित कर सकते हैं (सड़कों को दिखाने वाले)-सुसम्बद्ध और बिखरा हुआ।

सुसम्बद्ध व्यवस्थापन	बिखरा हुआ व्यवस्थापन

विद्यार्थियों को तस्वीरों का अवलोकन करने को कहें और ऐसे व्यवस्थापनों के लिए उदाहरण दें। परिवहन की उपलब्धता के कारण लोगों के एक जगह से दूसरी जगह स्थानान्तरण का कारण बतायें। कृपया कुछ स्थानीय उदाहरणों को दें जहाँ जनसंख्या का असमान वितरण है–सघन एवं विरल और जनसंख्या के ऐसे वितरण के लिए विद्यार्थियों से कारण जानने का प्रयास करें। इसे विद्यार्थियों की समझ में सहायता करना चाहिए कि परिवहन जनसंख्या वितरण को प्रभावित करता है। जैसा आप जानते हैं। कि परिवहन एक स्थान को संस्कृति को भी परिवर्ति करता है। विद्यार्थियों की इस समझ को बनाने में आप कक्षा में किन गतिविधियों को करने का सुझाव देंगे। कृपया इसे नीचे दिये गये बॉक्स में लिखें।

4.8 सारांश

इस इकाई में आपने सामाजिक विज्ञानों के एक महत्वपूर्ण घटक को प्रदर्शित किया था। यह अपेक्षित है कि आपने इस विशेष घटक की अपनी समझ को निश्चय ही विस्तृत कर लिया होगा। आपने अनुभव किया होगा कि भूगोल एक स्थानीय विज्ञान है जिसके माध्यम से हम पृथ्वी की सतह पर चालित विविध आयामों (प्राकृतिक एवं मानवीय) का अध्ययन करते हैं। हमने इसके बारे में यह भी सीखा है कि भूगोल कैसे व्यवस्थित एवं क्षेत्रीय उपागमों की सहायता से पढ़ा जाता है। इसके पश्चात् आप भूगोल के विविध चिन्हनों से परिचित हुएथे और सीखा कि एक विषय के रूप में भूगोल अंतरिक्ष से संबंधित है और क्षेत्रीय लक्षणों तथा विशेषताओं पर नोट लिया है। यह अंतरिक्ष के परिदृश्यों के वितरण स्थिति और सान्द्रता के नमूनों का अध्ययन करता है और इन नमूनों के लिए स्पष्टकरणों की व्याख्या करता है। यह मानवीय सत्ताओं औश्र उनके भौतिक पर्यावरण के बीच गतिक अंत:क्रिया के परिणामस्वरूप परिदृश्यों के बीच साहथर्य और अंत:सम्बन्धों पर टिप्पणी करता है। इस इकाई में हमने भूगोल की बहुत सी विशिष्ट शाखायें हैं जो विविध प्राकृतिक और सामाजिक विज्ञानों के विषय से ली गयी हैं। इस इकाई में आपने उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान पाठचर्या में भूगोल के स्थान को जाना है। आप उच्च प्राथमिक स्तर पर भूगोल शिक्षण के उद्देश्यों और विषय की रूपरेखा से परिचित हुए थे। आपने अवश्य ध्यान दिया होगा कि इस स्तर पर भूगोल का विषय

टिप्पणी

क्षेत्र तीन प्रमुख प्रसंगों-हमारी पृथ्वी, हमारा पर्यावरण और संसाधनों तथा विकास के चारो ओर घूमता है जो अलग-अलग क्रमश कक्षा VI, VII और VIII में लिये गये हैं। आगे की इकाई में आप इस विषय का सामना करने की रणनीतियों के बारे में सीखकर अपने ज्ञान को समृद्ध करेंगे।

4.9 शब्दावली/संकेताक्षर

मानचित्रकारी:- मानचित्र निर्माण का कला, विज्ञान और तकनकी।

सुदूर संवेदन:- वस्तु को बिना शारीरिक स्पर्श किए वस्तु या परिदृश्य के बारे में सूचना प्रदान करता है।

आधुनिक उपयोगों से यह शब्द सामान्यत पृथ्वी पर वस्तुओं को वर्गीकृत करने और पता लगाने के लिए हवाई संवेदी तकनीकी हैं (सतह और वायुमण्डल तथा समुद्र में प्रसारित सिग्नलों के द्वारा) उदाहरणार्थ हवाई जहाज या उपग्रहों से उत्सर्जित वैद्युत चुम्बकीय विकिरण)

भौगोलिक सूचना प्रणाली (GIS):- यह एक प्रणाली है जो सभी प्रकार के भौगालिक आकड़ों को पकड़ने, संग्रह करने, प्रभावित करने, विश्लेषित करने और व्यवस्थित करने के लिए डिजाइन किया गया है। साधारण शब्दों में यह मानचित्रकारी, सांख्यिकीय विश्लेषण और डाटा संग्रह तकनीक को विलीन करता है। भूगोल में बेहतर क्षेत्रीय स्पष्टीकरण प्राप्त करने में प्रयुक्त यह एक आधुनिक तकनीक है।

वैश्विक स्थिति प्रणाली (GPS): यह एक अंतरिक्ष आधारित वैश्विक मार्गनिर्देशन उपग्रह प्रणाली है जो सभी मौसम में पृथ्वी के पास और दूर कहीं भी जहाँ चार या अधिक GPSउपग्रहों से एक अबाधित क्षेत्र हो सब की स्थिति और सूचना प्रदान करता है।

मात्रात्मक तकनीकें :- ये तकनीकें सांख्यिकीय, गणितीय या संगणकीय तकनीकों के द्वारा सामाजिक परिदृश्यों के व्यवस्थित अनुभवजन्य अन्वेषण से संबंधित है।

स्थानीय विज्ञान:- मैदानों को समावेशित करता हुआ यह एक शैक्षिक विषय है जैसे- सर्वेक्षण, भौगोलिक सूचना प्रणालियों, जल सर्वेक्षण और मानचित्रकारी। स्थानीय विज्ञान विशेष रूप से मापन, व्यवस्थापन, विश्लेषण तथा पृथ्वी तथा उसके भौतिक लक्षणों का वर्णन करते हुए स्थानीय सूचना का प्रदर्शन और पर्यावरण निर्माण से सम्बद्ध है।

हवाई विभेदीकरण :- यह भूगोल के अध्ययन का एक उपागम है, यह स्पष्ट करता है कि कैसे पृथ्वी की सतह के क्षेत्र भिन्न-भिन्न हैं, कैसे पृथ्वी की सतह के ऊपर मानवीय एवं भौतिक परिदृश्य परिवर्तित होते हैं, जो व्यवस्थित विश्व के लक्षण में विविधताओं की व्याख्या करने पर लक्षित है।

मृदा विज्ञान:- मिट्टी के अध्ययन का विज्ञान।

4.10 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

Adhikari, Sudeepta(2004): *Fundamentals of Geographic Thought,* Chaitanya, Allahabad.

Dikshit, R.D.(2000) : *Geographical Thought : A Contextual History of Ideas*, Prentice Hall,

Hartshorne, Richard (1959): *Perspectives on the Nature of Geography,* Rand, McNally and Co.,Chicago.

Minshull, R.(1970) : *The Changing Nature of Geography,* Hutchinson University Library, London.

NCERT (2005): National Curriculum Framework, NCERT, New Delhi.

NCERT (2006): Class VI Social Science; *the Earth our Habitat,* NCERT, New Delhi.

NCERT (2006): Class XI, Geography Text Book, Fundamentals of Physical Geography, NCERT, New Delhi.

NCERT (2006): Position Paper, National Focus Group on Teaching of Social Sciences, NCERT, New Delhi

NCERT (2007): Class VII, Social Science; Our *Environment,* NCERT, New Delhi.

NCERT (2008): Class VIII, Social Science; *Resources and Development,* NCERT, New Delhi.

Spellman, Frank. R. (2010): Geography for Non Geographers, Published by Government Institutes, Plymoth, United Kingdom

4.11 अन्त्य इकाई अभ्यास

- आपके राज्य में भूगोल/सामाजिक विज्ञान की उपलब्ध पाठ्यपुस्तक पर आधारित निम्नलिखित बिन्दुओं के सम्बन्ध में अपने अवलोकन लिखें:-
  - (a) भूगोल के शिक्षण और अधिगम की जरूरत
  - (b) भूगोल का विषय वस्तु
  - (c) सामाजिक विज्ञानों/भूगोल शिक्षण के उपागम
- कक्षा VII को भूगोल पढ़ाने के लिए एक पाठ-योजना तैयार करें। आपको आपके अधि गम उद्देश्यों, अधिगम संसाधनों, क्रमिक अधिगम और मूल्यांकन की विधि को विशेष रूप से स्पष्ट करने की जरूरत है।

टिप्पणी

इकाई-5 राजनीति विज्ञान/अर्थशास्त्र/समाजशास्त्र का एक एकीकृत विषय के रूप में सामाजिक और राजनीतिक जीवन

संरचना

5.0 प्रस्तावना

5.1 अधिगम उद्देश्य

5.2 प्रारम्भिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान में सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन की विषय-वस्तु

5.2.1 सामाजिक और राजनीतिक जीवन-प्रारम्भिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान का एक घटक

5.2.2 सामाजिक और राजनीतिक जीवन - राजनीति विज्ञान/अर्थशास्त्र/समाजशास्त्र का एक एकीकृत विषय

5.2.3 सामाजिक और राजनीतिक जीवन की विषय वस्तु का सामाजिक विज्ञान को योगदान

5.3 राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र, एवं समाजशास्त्र में समाज वैज्ञानिकों द्वारा अपनायी गयी विधियाँ/उपागम

5.3.1 राजनीति विज्ञान को समझने में समाज वैज्ञानिकों द्वारा अपनायी गयी विधियाँ/उपागम

5.3.2 अर्थशास्त्र को समझने में समाज वैज्ञानिकों द्वारा अपनायी गयी विधियाँ/उपागम

5.3.3 समाजशास्त्र को समझने में समाज वैज्ञानिकों द्वारा अपनायी गयी विधिया/उपागम

5.4 सामाजिक विज्ञान के पाठ्यक्रम के भाग के रूप में सामाजिक और राजनीतिक जीवन का महत्व

5.4.1 सामाजिक विज्ञान के पाठ्यक्रम के भाग के रूप में सामाजिक और राजनीतिक जीवन का महत्व

5.4.2 सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन अधिगम के शैक्षणिक सिद्धांत: सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम

5.5 सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम के सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन पहलू पर शिक्षण के लिए पाठ-योजना विकसित करना

5.6 सारांश

5.7 प्रगति जाँच के उत्तर

5.8 शब्दावली/संकेताक्षर

5.9 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

5.10 अन्त्य इकाई अभ्यास

5.0 प्रस्तावना

उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम मूलभूत रूप से तीन मुख्य घटकों को अपने में सम्मिलित करता है–'इतिहास', 'भूगोल' एवं 'सामाजिक तथा राजनीति जीवन'। इस ब्लॉक की दो इकाइयों (इकाई-3 तथा इकाई-4) में, आने उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम के मुख्य क्षेत्रों 'इतिहास' एवं 'भूगोल' के बारे में कुछ विस्तृत रूप से पढ़ा था। इस इकाई में, आप, उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम के एक मुख्य क्षेत्र 'सामाजिक और राजनीतिक जीवन' के बारे में सीखेंगे। इस इकाई में मुख्य रूप से आपके लिए निम्न बिन्दु है– प्रारम्भिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान में सामाजिक और राजनीतिक जीवन की विषयवस्तु; राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र और समाज शास्त्र में समाज वैज्ञानिकों द्वारा अपनायी गयी विधियाँ/उपागम; सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम के भाग के रूप में सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन का महत्व; तथा सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम के पहलू पर सामाजिक और राजनीतिक जीवन शिक्षण के लिए पाठ योजना विकसित करना। इस इकाई में, सामाजिक विज्ञान के एकीकृत अधिगम क्षेत्र के रूप में, सामाजिक और राजनीतिक जीवन को प्रस्तुत करने के लिए, सैद्धान्तिक चर्चा के साथ-साथ परियोजना आधारित अनुभवों का उदाहरण दिया गया है।

5.1 अधिगम उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप इस योग्य हो सकेंगे–

- सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम के घटक 'इतिहास' और 'भूगोल' से सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन के घटकों का अन्तर कर सकेंगे।
- 'सामाजिक एवं राजनैतिक जीवन' को राजनीति विज्ञान/अर्थशास्त्र/समाजशास्त्र के एक एकीकृत विषय के रूप में न्यायोचित सिद्ध कर सकेंगे।
- सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम में 'सामाजिक और राजनीतिक जीवन' के विषयवस्तु क्षेत्रों की पहचान कर सकेंगे।
- राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र को समझने में समाज वैज्ञानिकों द्वारा अपनायी गयी विधियों/उपागमों का वर्णन कर सकेंगे।
- सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम के एक घटक के रूप में सामाजिक और राजनीतिक जीवन को सम्मिलित करने के महत्व को न्यायोचित सिद्ध कर सकेंगे।

टिप्पणी

- सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम में सामाजिक और राजनीतिक जीवन अधिगम के शैक्षणिक सिद्धांतो की उदाहरण सहित व्याख्या कर सकेंगे।
- सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम में सामाजिक और राजनीतिक जीवन के शिक्षण के लिए पाठ योजना निर्माण कर सकेंगे।

5.2 प्रारम्भिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान में सामाजिक और राजनीतिक जीवन की विषय-वस्तु

सामाजिक विज्ञान का अधिगम उतना ही पुराना है जितनी की मानवता अपने आप में पुरानी है। प्राचीन समाज में सामाजिक विज्ञान का अधिगम अनौपचारिक, व्यक्तिगत एवं प्रकृति से किया जाता था। औपचारिक तथा व्यवस्थित अधिगम नहीं किया जाता था। सामाजिक विज्ञान अधिगम प्रकृति में बिल्कुल अनौपचारिक, वैयक्तिक तथा ऐच्छिक था। लेकिन, समकालीन संसार में सामाजिक विज्ञान का अधिगम जटिल सामाजिक व्यवस्था, ज्ञान के प्रसार, आवश्यकताओं एवं माँगों की गुणात्मक वृद्धि आदि के कारण, और अधिक औपचारिक तथा संगठित हो गया है।

प्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान को हमारे विद्यालय पाठ्यक्रम में 'पर्यावरण अध्ययन' के रूप में शामिल किया गया और उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान को हमारे विद्यालय पाठ्यक्रम में 'सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम' के रूप में शामिल किया गया है।

उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम को तीन मुख्य अधिगम क्षेत्रों के रूप में शामिल किया गया है जैसे- 'इतिहास', 'भूगोल' और 'सामाजिक एवं राजनीति जीवन'।

5.2.1 सामाजिक और राजनीतिक जीवन – प्रारम्भिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान का एक घटक

प्रारम्भिक स्तर पर (विशेष कर उच्च प्राथमिक स्तर पर), सामाजिक विज्ञान एक औपचारिक विद्यालयी विषय जैसे भाषा, गणित आदि के रूप में पढ़ाया जाता है। उच्च प्राथमिक स्तर पर, सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम में तीन मुख्य अधिगम क्षेत्र जैसे 'इतिहास', 'भूगोल' एवं सामाजिक तथा राजनीतिक जीवन' को सम्मिलित किया जाता है। उच्च प्राथमिक स्तर पर सामान्यता VI कक्षा से VIII कक्षा तक को शामिल किया जाता है, इन सभी अधिगम क्षेत्रों जैसे- इतिहास, भूगोल और सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन को कक्षा VI से कक्षा VIII तक के सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम में समाविष्ट किया गया है। उच्च प्राथमिक स्तर पर देने वाले एक एकीकृत रूप में गणित किया गया है। दूसरे शब्दों में, इसका तात्पर्य है, कि उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम को विभिन्न विषय क्षेत्रों (जैसे-इतिहास, भूगोल और सामाजिक और राजनीतिक जीवन) के बीच तथा ग्रेडो (कक्षा VI से कक्षा VIII) के बीच एकीकृत किया गया है।

उच्च प्राथमिक स्तर पर इतिहास का अधिगम – इतिहास का अधिगम विद्यार्थी को समय के संदर्भ में भारत एवं विश्व के विभिन्न भागों के घटनाक्रम के बारे में परिचित कराता है।

उच्च प्राथमिक स्तर पर भूगोल का अधिगम – भूगोल का अधिगम विद्यार्थी को स्थान के संदर्भ (स्थानीय स्तर से लेकर वैश्विक स्तर तक) सामग्री संसाधन, पर्यावरण, प्रकृति आदि मुद्दों के साथ परिचित कराना है।

उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन का अधिगम–

उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन, राजनीति विज्ञान/अर्थ शास्त्र/समाज शास्त्र के एक एकीकृत विषय के रूप में कार्य करता है। सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन राजनीति विज्ञान/अर्थ शास्त्र/समाज शास्त्र के एक एकीकृत विषय के रूप में कैसे कार्य करता है, नीचे दिया गया है।

5.2.2 सामाजिक और राजनीतिक जीवन–राजनीति विज्ञान/अर्थशास्त्र/समाज शास्त्र का एक एकीकृत विषय

सामाजिक और राजनीतिक जीवन (SPL) उच्च प्राथमिक स्तर पर पूर्व अधिगम क्षेत्र 'नागरिक शास्त्र' के स्थान पर सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम का एक नया अधिगम क्षेत्र है। NCF (2005) ने टिप्पणी की है कि "Civics appeared in the Indian School curriculum in the colonial period against the background of incrasing 'disloyalty' among Indians towards the Raj. Emphasis on obedience and loyalty wee the key features of civies."

SPL वास्तविक जीवन की परिस्थितियों पर आधारित है, जिसका उपयोग अवधारणा को व्यवहारिक परिस्थितियों में पढ़ाने में होता है क्योंकि यह पहचानता है कि बच्चे मूर्त अनुभवों के माध्यम से श्रेष्ठ अधिगम को प्राप्त करते हैं। यह माध्यमिक विद्यालय के छात्रों द्वारा कक्षा में लाई जा रही पारिवारिक तथा सामाजिक मुद्दों की व्यावहारिक समझ में निर्मित (पर आधारित) सामग्रियों का प्रयोग करता है।

SPL के अपने अधिगम अनुभव अधिकांशतया राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र पर आधारित है। राजनीति विज्ञान बच्चों को प्रजातांत्रिक विधियों एवं सहभागिता से परिचित कराता है। अर्थशास्त्र, बच्चे को आर्थिक क्रियाकलापों जैसे उत्पादन, उपयोग, वितरण, आदान-प्रदान आदि से परिचित होने के योग्य बनाता है। समाज शास्त्र बच्चे को जाति, वर्ग, धर्म आदि बाधाओं को दूर कर, बालक को सभ्य समाज का महत्वपूर्ण सदस्य बनाता है। सभ्य समाज का महत्वपूर्ण सदस्य बनाता है-जाति, वर्ग, धर्म आदि बाधाओं को मिटाकर है।

5.2.3 सामाजिक और राजनीतिक जीवन की विषय वस्तु का सामाजिक विज्ञान को योगदान

उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम के 'सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन' को पूर्व में 'नागरिक शास्त्र' के रूप में पढ़ाया जाता था। 'सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन' ने 'नागरिक शास्त्र' को कैसे स्थानांतरित किया इसकी चर्चा ऊपर पहले ही की जा चुकी है। आइये, ईश्वर भाई पटेल कमेटी (1977) के द्वारा प्रस्तावित तथा सामाजिक विज्ञान के शिक्षण

टिप्पणी

पर आधारित राष्ट्रीय अभिकेन्द्रित समूह (2006) द्वारा प्रस्तावित आदर्श पाठ्यवस्तु की विषय वस्तु के बीच जाँच तथा विभेद करें।

उच्च प्राथमिक स्तर (कक्षा VI, VII एवं VIII) पर सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम के 'नागरिक शास्त्र' के क्षेत्र के लिए ईश्वर भाई पटेल कमेटी (1977) के द्वारा निम्नांकित आदर्श कोर्स विषयवस्तु को निम्नांकित तरीके से प्रस्तुत किया है।

नागरिक शास्त्र (कक्षा VI-सभ्य जीवन)

1. सामुदायिक योजना का विकास, सहकारिता, सामुदायिक विकास।
2. स्थानीय सरकार (ग्रामीण): आवश्यकता, संरचना एवं कार्य।
3. स्थानीय सरकार (शहरी) : संरचना एवं कार्य।
4. जिला प्रशासन: कानून एवं व्यवस्था, नागरिक सुविधाएं।
5. समुदायिक संपत्ति का संरक्षण: सार्वजनिक संपत्ति संपत्ति, इसका संरक्षण, ऐतिहासिक स्मारक।
6. परियोजना कार्य: ऐसी योग्यताओं के विकास के अवसर देना जो भारत में किसी सक्रिय नागरिक के लिए आवश्यक है, समस्याएं।

नागरिक शास्त्र (कक्षा-VII-हमारा या भारतीय संविधान)

1. हमारे संविधान की मुख्य विशेषताएं: मौलिक सिद्धांत, राष्ट्रीय सरकार, राज्य सरकार, अधिकार, कर्त्तव्य, निर्देशक सिद्धांत, राष्ट्रीय प्रतीक।
2. विधि निर्माण की प्रक्रिया: संसद, राज्य परिषद, कानून कैसे बनाये जाते हैं?
3. विधि कानूनों का क्रियान्वयन: राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री एवं मंत्रीमंडल एवं मंत्री मंडल, राज्यपाल, मुख्यमंत्री एवं मंत्री मंडल, लोक सेवा।
4. विधि/कानून की व्याख्या – सर्वोच्च न्यायालय, उच्च न्यायालय एवं न्यायालय।
5. परियोजना कार्य।

नागरिक शास्त्र (कक्षा - VIII–स्वतंत्र भारत-उपलब्धियां एवं चुनौतियाँ

1. हमारे राष्ट्रीय लक्ष्य: प्रजातंत्र, समाजवाद एवं धर्म निरपेक्षता, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग।
2. हमारे प्रजातंत्र का सशक्तिकरण; प्रजातंत्र में नागरिकता, भारत में साक्षरता।
3. सामाजिक एवं आर्थिक पुर्नरचना: गरीबी, जनसंख्या, बेरोजगारी, जातिवाद।
4. पंचवर्षीय योजनाएं:- उपलब्धियाँ एवं असफलताएँ: कृषि, उद्योग, ग्रामीण जीवन
5. देश की सुरक्षा: सैन्य बल, क्षेत्रीय सेना, सीमा सुरक्षा बल, एन.सी.सी, ए सी सी, नागरिक एवं सुरक्षा।
6. भारत एवं विश्व: सहयोग के लिए आवश्यकता, सह-अस्तित्व, संयुक्त राष्ट्र संघ।
7. परियोजना कार्य।

उच्च प्राथमिक स्तर (कक्षा VI, VII एवं VIII) पर सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम के 'सामाजिक एवं राजनीति जीवन' क्षेत्र के लिए, सामाजिक विज्ञान के शिक्षण पर राष्ट्रीय अभिकेन्द्रित समूह (2006) के द्वारा निम्नलिखित आदर्श कोर्स विषयवस्तु प्रस्तावित किया गया।

कक्षा -VI(विविधता एवं पारस्परिक निर्भरता)

इकाई–1 विविधता

इकाई – 2 सरकार

इकाई – 3 स्थानीय सरकार

इकाई – 4 जीवन निर्माण

कक्षा – VII (प्रजातंत्र एवं समानता)

इकाई – 1 प्रजातंत्र

इकाई – 2 राज्य सरकार

इकाई – 3 संचार माध्यमों की समझ

इकाई – 4 लिंगभेद दुर्भावना दूर करना (उन्मूलन)

इकाई – 5 हमारे चारो ओर का बाजार

कक्षा VIII (विधि का शासन एवं सामाजिक न्याय)

इकाई – 1 संविधान

इकाई – 2 संसदीय सरकार

इकाई – 3 न्याय पालिका

इकाई – 4 सामाजिक न्याय एवं वंचित लोग

इकाई – 5 सरकार की आर्थिक उपस्थिति

प्रगति की जाँच–1

(नोट:- नीचे दिये गये स्थान पर अपना उत्तर लिखिए तथा इस इकाई के अन्त में दिये आदर्श उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए)

- 'सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन', राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र एवं समाज शास्त्र से कैसे संबंधित है?

टिप्पणी

.....

.....

.....

.....

.....

5.3 राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र एवं समाज शास्त्र में समाज वैज्ञानिकों द्वारा अपनायी गयी विधियाँ उपागम

इसकी पहले ही चर्चा की जा चुकी है कि 'सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन', राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र एवं समाज शास्त्र का एकीकरण है यद्यपि राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र एवं समाजशास्त्र तीनों स्वतंत्र विज्ञान/पृथक विषय हैं, जिनकी विषय वस्तु को अधिगमित करने तथा समझने की उनकी अपनी विधियाँ/उपागम हैं। इन सभी तीनों विषयों की विषयवस्तु, प्रकृति एवं क्षेत्र आपस में एक दूसरे से कई प्रकार से भिन्न हैं। इसलिए, समाज वैज्ञानिक इन सभी तीनों विषयों को समझने के लिए एक समान उपागम/विधि का अनुकरण नहीं करते; अपितु, वे उन विषयों की प्रकृति के अनुसार ही उनकी समझ के लिए उपागम/विधि का अनुकरण करते है। हम राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र एवं समाज शास्त्र में समाज वैज्ञानिकों द्वारा अपनायी गयी विधियों/ उपागमों, की चर्चा निम्नलिखित उप-खंड में करेंगे।

5.3.1 राजनीति विज्ञान को समझने में समाज वैज्ञानिकों द्वारा अपनायी गयी विधियाँ/उपागम

यद्यपि राजनीति विज्ञान को समझने की विधियों को विभिन्न प्रकार से वर्गीकृत किया गया है, लेकिन, राजनीति विज्ञान को समझने की पारंपरिक तथा आधुनिक विधियों का मुख्य वर्गीकरण है, जो (पूर्णत: प्रबल हो चुका हे। सुकरात, प्लेटो, और अरस्तु के योगदान से पारंपरिक विधियों का उदगम हुआ, और जिन्होंने अपना प्रभुत्व 19वीं शताब्दी के आरंभ तक बनाए रखा। आधुनिक उपागम 15वी 16वीं सदी में शुरू हुए और बीसवीं सदी में सामाजिक विज्ञान को समझने में प्रभावी बने। पारम्परिक उपागमों एवं आधुनिक के बीच कुछ सामान्य अन्तर नीचे दिये गये है।

पारम्परिक उपागम	आधुनिक उपागम
सामाजिक विज्ञान को इसके राज्य एवं इसके सरकारी संस्थानों के अध्ययन के रूप में परिभाषित करता है।	सामाजिक विज्ञान को शक्ति एवं राजनीतिक व्यवहार की निर्णय करने के अध्ययन के रूप में परिभाषित करता है।

राजनीति के औपचारिक उपकरण जैसे–सरकार, संस्थान, संविधान आदि पर ध्यान केन्द्रित करना।	राजनीति को एक क्रियाकलाप या एक प्रक्रिया की सेवा के रूप में देखना।
प्राकृतिक रूप से अधिक दार्शनिक।	प्राकृति रूप से अधिक विश्लेषणात्मक।
राजनीति विज्ञान को बिना अवलोकन के एवं मूल्यों से लदे हुए विषय के रूप में देखना।	राजनीति विज्ञान को अवलोकन के रूप में एवं मूल्यों से मुक्त विषय के रूप में देखना।
अच्छे समाज के निर्देशात्मक एवं मानक संबंधी उद्देश्यों को उपलब्धि।	गुणनात्मक एवं आगमनात्मक उपागम पर बल देना। राजनीति के उद्देश्य को ज्ञान के वैज्ञानिक भाग के रूप में बनाना।
सामाजिक परिवर्तन एवं नियंत्रण के मुख्य औजार के रूप में मुख्य रूप से वर्गीकरणात्मक एवं संस्थानों पर केन्द्रित होना।	अतिरिक्त राजनीतिक तथ्यों एवं शर्तो पर केन्द्रित होना जो राजनीतिक घटनाओं के व्यवहार तथा संस्थानों को प्रभावित करते है।

ऊपर दिये गये पारम्परिक उपागम एवं आधुनिक उपागमों के बीच सभी अन्तर प्राकृतिक रूप से हमेशा सही नहीं है। पारम्परिक एवं आधुनिक उपागम के बीच का संबंध अनेक संदर्भो में सातत्य हैं सामाजिक विज्ञान को समझने के लिए अनेको पारम्परिक उपागम एवं आधुनिक उपागम है। यहाँ हम राजनीति विज्ञान को समझने के लिए दो महत्वपूर्ण पारम्परिक उपागम (दार्शनिक उपागम तथा विधि-संस्थानिक उपागम) तथा दो महत्वपूर्ण दार्शनिक उपागमो की चर्चा करते है।

दार्शनिक उपागम – यह उपागम सामान्य रूप से काल्पनिक/चिंतन तथा मानदंड संबंधी उपागम है। अधिकांश पारंपरिक राजनीतिक दर्शन केवल पराअनुभव कटौतियों से संबंधित था, अर्थात अन्य अवलोकन के द्वारा निष्कर्षित यह उपागम प्राकृतिक रूप से अतिव्यापक है। प्लेटो रिपब्लिक, होब्स लेवीथन की राज्य की स्थिति, यदि आदर्श नहीं को एक अमूर्तावस्था में प्रदर्शित करने के लिए प्रवृत्त थे। अन्य अनेको राजनीतिक दर्शनिको ने भी राज्य, न्याय, विधि, उदारता, प्रजांतत्र आदि की अवधारणा को निगमनात्मक तार्किकता के सोचने की प्रक्रिया का उपयोग करके स्पष्ट किया है। निगमनात्मक तार्किकता के द्वारा ये राजनीति के दार्शनिक राजनीतिक व्यवहार, सरकार के निर्माण आदि के बारे में जाँच न करने योग्य स्व प्रमाणिक निष्कर्ष तक पहुँचे। लेकिन आधुनिक वैज्ञानिक उपागम के अनुगामी आलोचना करते है कि ये दार्शनिक कदाचित ही वस्तुनिष्ठ ढंग अध्ययन करते हैं और मानव स्वभाव को यथावत मानते हैं। यद्यपि इस राजनीतिक दर्शन की आधुनिक विचारकों के द्वारा आलोचना की गयी, फिर भी इसकी राजनीति के अध्ययन में महत्वपूर्ण उपयोगिता है। राजनीतिक दार्शनिक लोके, अरस्तु, चाणक्य, प्लेटो और अन्यो की आज भी महत्वपूर्ण प्रासंगिकता है।

संवैधानिक उपागम – संवैधानिक उपागम समकालीन राजनीति में एक पूर्व-प्रभावी उपागम है, और इस उपागम की जड़ें ग्रीक नगर के संविधान की अरस्तु द्वारा की गई व्याख्या के काल तक है। यह उपागम राजनीति के औपचारिक उपकरण–सरकार, संस्थान, संविधान एवं राज्य आदि पर ध्यान केन्द्रित करता है। इस उपागम के अनुसार, " a description and analysis of legal rules and conventions governing the operation and relationships between formal

टिप्पणी

institutions, based on the readily accessible official sources and records, will provide valuable insight to make general conclusions about political activity." भारत के केन्द्र एवं राज्य सरकारों की कार्यशैली तथा संवैधानिक संबंध और उनके बीच कार्यशैली का अध्ययन इस उपागम के द्वारा अच्छी प्रकार से किया जा सकता है। इस उपागम की आलोचना स्थैतिक या निर्जीव के रूप में की जाती है। चूंकि यह सरकार की विशेषता की एक नियतकाल पर बल देता है और उस तथ्य को नकारती है कि राजनीति एक प्रक्रिया या क्रिया है। यह उपागम अविकसित तथा पिछड़े समुदायों के अध्ययन के लिए असफल है जिनकी औपचारिक संस्थान और राजनीतिक व्यवहार नहीं है। यह उपागम अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के अध्ययन में असफल है क्योंकि अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में अधिकतर औपचारिक संस्थानों की कमी है और हिंसा के द्वारा इसे वर्गीकृत किया गया है।

व्यवहारात्मक उपागम– अध्ययन के एक उपागम के रूप में व्यवहारात्मकवाद राजनीति विज्ञान के क्षेत्र रूप में 1940 में परिचित हुआ और आज तक यह उपागम राजनीति विज्ञान के क्षेत्र में प्रभावी है। जहाँ पारम्परिक उपागम घटनाओं, संरचनाओं, संस्थान, विचारधारा आदि पर केन्द्रित है। वही व्यवहारवाद व्यक्तिगत और या संबंद्ध छोटे समूहों के विश्लेषण की मूल इकाई के व्यवहार पर केन्द्रित होता है। रॉबर्ट ढल यह स्पष्ट करते है कि व्यवहारवाद राजनीति विज्ञान में एक आंदोलन के रूप में है जो राजनीति के कलाकारों के केवल अवलोकनिय व्यवहार का केवल विश्लेषण के रूप में परबल करता है। यह उपागम अनुभवजन्य जाँचयोग्य आँकड़ों पर आधारित सारांश है। इस उपागम के आलोचक कहते हैं कि मानव व्यवहार प्रयोगात्मक पूछताछ का विषय नहीं है तथा राजनीति विज्ञान में सामान्यीकरण को गणितीय समीकरण की कोटि की सटीकता के स्तर मुश्किल से प्राप्त किया जा सकता है। आलोचक आगे और कहते है कि प्रत्यक्ष व्यवहार का अवलोकन किया जा सकता है जो एक कहानी के भाग के बारे में बताता है। छद्म का व्यवहार का अध्ययन करना बहुत कठिन है जिसमें स्वयं कहानी का भाग भी है।

मनोवैज्ञानिक उपागम– ग्राहम वालास की 'राजनीति में मानव प्रकृति' (1908) के प्रकाशन के बाद राजनीति विज्ञान के क्षेत्र में मनोवैज्ञानिक उपागम प्रभाव में आया जिसने सामाजिक विज्ञान के सामाजिक-मनोवैज्ञानिक फाउंडेशन पर बल दिया। इस उपागम के समर्थकों ने राजनीतिक विषय को निर्माण एवं संरचना की अपेक्षा मनोवैज्ञानिक घटकों के रूप में परिभाषित किया। इस उपागम के अनुसार–मानव के राजनीतिक कार्य पूर्ण रूप से कारण एवं तार्किकता के द्वारा मार्गदर्शित नहीं होते इसकी अपेक्षा वे अनेकों मनोवैज्ञानिक तथ्यों जैसे– व्यक्तित्व, भाव, प्रेरणा आदि के द्वारा मार्गदर्शित होते है। इसलिए अनेको राजनीतिक वैज्ञानिक लोक इच्छा, वोटिंग के व्यवहार आदि के अध्ययन में व्यक्तित्व, भाव, रूचि, स्व प्रेरणा आदि शोध के निर्धारित तथ्यों/चरों के रूप में अध्ययन करते हैं। इस उपागम के आलोचक कहते है कि राजनीतिक प्रतिभागियों के व्यक्तित्व एवं अन्य मनोवैज्ञानिक रूझानों का अध्ययन बहुत कठिन है क्योंकि मनोविज्ञान एक नितान्त अनुभव जन्य विज्ञान नहीं है।

उपरोक्त चर्चा किये गये उपागमों के अतिरिक्त, यहाँ अन्य अनेकों उपागम है जैसे–तुलनात्मक उपागम, व्यवस्था विश्लेषण उपागम, संरचनात्मक क्रियात्मक विश्लेषण उपागम आदि है जो राजनीति विज्ञान के इस क्षेत्र में राजनीतिक व्यवहार और राजनीतिक घटनाओं के अध्ययन में अधिक चर्चित है।

5.3.2 अर्थशास्त्र को समझने के लिए समाज वैज्ञानिको के द्वारा अपनायी गयी विधियाँ/उपागम–

अर्थशास्त्र ज्ञान का एक भाग है जिसका कोई स्पष्ट अर्थ नहीं है। स्पष्ट शब्दों में अर्थशास्त्र को परिभाषित करना कठिन है, इसको समय-समय पर विभिन्न अर्थशास्त्रियों/समाज वैज्ञानिकों द्वारा विभिन्न प्रकार से समझा गया है। 'अर्थशास्त्र' विषय के रूप में वृद्धि एवं विकास की एक प्रक्रिया है। यद्यपि अर्थशास्त्र को समझने में अर्थशास्त्रियों द्वारा अपनाये गये अनेकों उपागम है, लेकिन, उनमें कुछ उपागम महत्वपूर्ण है तथा आपको समझाने के लिए उन्हीं की चर्चा यहाँ की गयी है।

एडम स्मिथ का धन संपत्ति उपागम–

अर्थशास्त्र के पिता एडम स्मिथ ने अर्थशास्त्र को 'संपत्ति का विज्ञान' कहकर परिभाषित किया है। 1776 में, एडम स्मिथ ने एक पुस्तक "An Enquiry in to the nature and causes of wealth of nation" के नाम से प्रकाशित की। इस पुस्तक में, एड्म स्मिथ ने अर्थशास्त्र की विषय वस्तु के रूप में संपत्ति के उत्पादन एवं खर्च पर बल दिया है। एड्म स्मिथ के अनुसार, अर्थशास्त्र, धन एवं संपत्ति के उत्पादन वितरण तथा उपभोग से संबंधित है। स्मिथ कहते है,'' economics enquires into the factors that determine the wealth and riches of a country and their growth." अर्थशास्त्र की विषय वस्तु के रूप में उपभोग एवं खर्च की एड्म स्मिथ ने व्याख्या की है, लेकिन इस परिभाषा के आलोचकों ने दावा किया है कि मानव मात्र का उद्देश्य धन की प्राप्ति करना है, पूर्ण रूप से आधारहीन है। एक सभ्य समाज में, मानव क्रियाकलापों के धन को प्राप्त करने के अतिरिक्त अन्य अनेकों और भी कारण है। आगे, आलोचक ये भी खुलासा करते है कि एड्म स्मिथ की संपत्ति परिभाषा ने अधिक बल धन पर दिया है ना कि मानव कल्याण पर। दूसरे शब्दों में, संपत्ति उपागम, अर्थशास्त्र के मुख्य उद्देश्य मानव कल्याण को सिद्ध करने में असफल है।

एलफ्रेड मार्शल का कल्याणकारी उपागम – 1890 में एल फ्रेड मार्शल ने एक पुस्तक ''अर्थशास्त्र के सिद्धांत'' नाम से प्रकाशित की। उनकी इस ''अर्थशास्त्र के सिद्धांत'' नाम की पुस्तक में मार्शल ने 'कल्याणकारी विज्ञान' के रूप में अर्थशास्त्र की अवधारणा प्रस्तुत की है। एड्म स्मिथ की दृव्य परिभाषा की आलोचना करते हुए, मार्शल ये सुस्पष्ट करते है कि, अर्थशास्त्र के लिए संपत्ति अन्तिम नहीं है बल्कि केवल अन्त का अर्थ है, मानव कल्याण की उन्नति। मार्शल कहते है–'economics is the study of manking in the ordinary business of life; it examines that part of individual and social action which is most close by connected with the attainment and with the use of the material requirites of well being'. मार्शल की अर्थशास्त्र की परिभाषा मुख्य रूप से तीन बिन्दुओं को सूचित करती है। पहला, अर्थशास्त्र मनुष्यों का अध्ययन है जो सभी आर्थिक क्रियाकलापों के केन्द्र में शेष रहते है। अन्य शब्दों में, यह मनुष्यों के कार्य का अध्ययन जो इस बात से संबंधित है कि वे धन को कैसे कमाते है एवं कैसे खर्च करते है। दूसरा, अर्थशास्त्र, मानव जीवन के विशिष्ट पहलू जैसे–जीवन का सामान्य व्यापार, से संबंधित है। जीवन के सामान्य व्यापार से तात्पर्य है

टिप्पणी

कि मनुष्य अपनी आजीविका कैसे प्राप्त करता है तथा इस को कैसे खर्च करता है। जीवन के इस सामान्य व्यापार की तरह ही मानव जीवन के अन्य अनेकों पहलू हैं जैसे सामाजिक, राजनीतिक आदि। तीसरा, अर्थशास्त्र का प्राथमिक अन्त सामग्री के कल्याण की प्रोन्नति है। इसकी ये आवश्यकताएं नोट करने योग्य है कि अर्थशास्त्र मानव कल्याण की पूर्णता से संबंधि त नहीं है बल्कि पूर्णता के एक भाग जैसे-पदार्थ कल्याण (पदार्थ के उपयोग से संबंधित कल्याण) से संबंधित है। कुछ अर्थशास्त्री मार्शल के उपागम की 'अनिश्चितता' के रूप में आलोचना करते है क्योंकि उसने उन चीजों/क्रियाकलापों को स्पष्ट नहीं किया है जिनको 'जीवन के सामान्य व्यापार' के रूप में शामिल किया गया है। मार्शल की अर्थशास्त्र की अवधारणा केवल भौतिक चीजों से संबंधित है। लेकिन रोबिन्स जैसे आलोचक सूचित करते है कि मार्शल की अर्थशास्त्र की अवधारणा में अनावश्यक चीजों के लिए कोई स्थान नहीं है, वह चीजें भी जो अर्थशास्त्र के अध्ययन के अन्तर्गत आती है। आगे रोबिन्स और आलोचना करते है कि अर्थशास्त्र कल्याण का अध्ययन नहीं है, क्योंकि, सभी आर्थिक क्रियाकलाप कल्याण को नहीं बढ़ा सकते। नुकसान दायक चीजें जैसे सिगरेट, शराब आदि का अध्ययन अर्थशास्त्र के अन्तर्गत आता है लेकिन वे हमेशा उस संदर्भ में कल्याण को नहीं बढ़ा सकते जैसे कि कल्याण एक संदर्भित अवधारणा है जो व्यक्ति विशेष एवं स्थिति विशेष के अनुसार परिवर्तन शील है।

लिओनेल रोबिन्स का दुर्लभता एवं चुनाव उपागम

अर्थशास्त्र के अध्ययन का लिओनेल रोबिन्स का उपागम एडम स्मिथ और मार्शल के उपागम से अधिक निर्मल एवं सुस्पष्ट है। रोबिन्स ने 1931 में एक पुस्तक "An Essay on the Nature and Significance of Economics Science" प्रकाशित की। रोबिन्स के अनुसार, "economics is the science which studies human behaviour as a relationship between ends and scarce means which have alternative uses."

इस पुस्तक में, रोबिन्स ने परिभाषित किया कि अर्थशास्त्र 'दुर्लभता एवं चुनाव का विज्ञान है। रोबिन्स का उपागम निम्नलिखित सिद्धांतो पर आधारित है।

1. मनुष्यों की इच्छाएं असीमित है।
2. संसाधन इच्छाओं की तुलना में सीमित। दुर्लभ है।
3. संसाधनों के विभिन्न वैकल्पिक उपयोग है।
4. ''यो तो वस्तुएं और सेवाएं कल्याण को बढ़ावा देगी या नहीं'' ये अर्थशास्त्र से संबंधित नहीं है। अर्थशास्त्र को इनका अध्ययन (वस्तुएं एवं सेवाएं) करना चाहिए यदि वे मानवीय इच्छाओं को संतुष्ट करती है।
5. समाज के संसाधन विभिन्न इच्छाओं को संतुष्ट करने के लिए किस प्रकार से बँटे होने चाहिए, अर्थशास्त्र इनसे संबंधित है।

रोबिन्स के उपागम की अनेक प्रकार से आलोचना की गयी हैं रोबिन्स ने मार्शल के कल्याण की परिभाषा की आलोचना की, लेकिन रोबिन्स की परिभाषा के लाभदायक विश्लेषण से, यह

पाया गया है कि कल्याण का विचार रोबिन्स की परिभाषा में उपस्थित है। रोबिन्स की परिभाषा का मतलब है कि संसाधनों का बँटवारा इस तरीके से किया जाना है कि ताकि अधिकतम संतुष्टि प्राप्त किया जा सकेगा। अनेक स्थितियों में अधिकतम संतुष्टि अधिकतम कल्याण को उत्पन्न करती है। आगे, रोबिन्स का उपागम आर्थिक वृद्धि एवं विकास को समावेशित नहीं करता जो वर्तमान वर्षों में बहुत महत्वपूर्ण माना गया है।

सैमुअल्सन का वृद्धि उपागम – आधुनिक अर्थशास्त्री सैमुअल्सन ने आगे एक 'वृद्धि केन्द्रित परिभाषा' दी है। उनके अनुसार, " economics is the study of how people and society end up choosing with or without the use of money, to employ scarce productive resources that would have alternative uses, to produce various commodities and distribute them for consumption now or in future,among various persons and groups in society. It analyses the costs and benifits of improving patterns of re-sources allocaeations."

इस परिभाषा से, निम्नलिखित विशेषताएं बनायी जा सकती है।

1. उत्पादक संसाधनों की कमी को सैमुअल्सन ने महत्व दिया है, जिनका आम आदमी के जीवन पर प्रभाव पड़ता है।
2. विभिन्न दुर्लभ संसाधनों के उपभोग एवं वितरण से जुड़ी संबंधित समस्याओं का अर्थशास्त्र विश्लेषण करता है।
3. सैमुअल्सन की परिभाषा रोबिन्स की परिभाषा की अपेक्षा, इस संदर्भ में कि यह कमी एवं वृद्धि दोनों को स्पर्श करता है, अधिक विस्तृत है।
4. इसमें धन के अतिरिक्त, अर्थशास्त्र के चुनाव के संदर्भ में मनुष्यों की समस्याओं के विश्लेषण में विनियम व्यवस्था दोनों शामिल है।

5.3.3 समाज शास्त्र को समझने में समाज वैज्ञानिको द्वारा अपनायी गयी विधियाँ/उपागम

समाज शास्त्र समाज का अध्ययन है। समाज शास्त्र अध्ययन में समाज के विभिन्न पहलू है जैसे–सामाजिक मान्यताएं, नीतियां, प्रक्रियाएं, मूल्य, संरचना, कार्यक्रम आदि। लेकिन, इसकी कोई एक विधि उपागम नहीं है जिनका उपयोग समाज के अध्ययन में समाज वैज्ञानिकों के द्वारा किया गया हो, इसकी अपेक्षा, समाज वैज्ञानिकों ने समाज के अध्ययन में अनेकों विधियों का उपयोग किया है। यहाँ आप समाज शास्त्र को समझने में समाज वैज्ञानिकों के द्वारा उपयोग की गयी कुछ महत्वपूर्ण विधियों/उपागमों के बारे में सीखेंगे।

एतिहासिक उपागम – समाज शास्त्र के जनक कहे जाने वाले अगस्त काम्टे, हर्बट स्पेन्सर, और कार्ल मार्क्स ने समाज का अध्ययन करने में इस विधि का जोशीले ढंग से उपयोग किया। आधुनिक समय में, समाजशास्त्री जैसे- होथाऊज, वेस्टरमार्क और एफ.ओपेन हाईमर, मजबूती से इस विधि का समर्थन करते है। एतिहासिक विधि के अनुसार, "The study of events]

टिप्पणी

processes and institutions of past societies, for the purpose of finding the origins or antecedents of contemporary social lfie and thus understanding its nature and working." एतिहासिक समाजशास्त्र (एतिहासिक विधियों पर आधारित समाज शास्त्र) दूर-दराज के समाजों के अतिरिक्त, भूतकाल एवं वर्तमान काल के समाजों का अध्ययन उनकी उत्पत्ति जानने के लिए करते है, और हमारे वर्तमान जीवन के तरीकों के लिए अर्थ प्राप्त करते है। समाज के अध्ययन के लिए एतिहासिक उपागम मूलरूप से दो तरीकों का अनुकरण करता है– (i) ऐतिहासिक उपागम विकास के जीव विज्ञानी सिद्धांत के द्वारा प्रभावित है, और (ii) एतिहासिक उपागम, अर्थशास्त्र की व्याख्या के द्वारा प्रभावित है। पहला उपागम समाज के विकास एवं उत्पत्ति से संबंधित विचारों पर केन्द्रित है। कोम्टे एवं स्पेन्सर ने समाज के अध्ययन में इस उपागम का उपयोग किया है। दूसरे उपागम का उपयोग मूलरूप से मेक्स वेबर जो अपने पूँजीवाद के उत्पत्ति के अध्ययन में आधुनिक नौकरशाही के विकास, और संसार के धर्मो के आर्थिक प्रभाव में किया।

तुलनात्मक उपागम– तुलनात्मक उपागम जो तथ्य आवश्यक नहीं है उन तथ्यों को छोड़ने के क्रम में सामाजिक घटना पर तर्कपूर्ण सिद्धांत उपयोग करता है। और उन तथ्यों तक पहुँचता है जो आवश्यक है। समाज शास्त्र के क्षेत्र में तुलनात्मक उपागम में एक उचित सामान्यीकरण तक पहुँचने के क्रम में चुनाव, तुलना और विलुप्तीकरण की प्रक्रिया के द्वारा प्राचीन या वर्तमान समाजों एवे सामाजिक संस्थानों का अध्ययन किया जाता है। तुलना समकालीन समाजों के बीच की गयी है जिनमें उभयनिष्ठ रूप से एतिहासिक, राजनैतिक और अनको अन्य विशेषताएं है। प्राकृतिक विज्ञान में, वैज्ञानिक, प्रयोगों के द्वारा आकस्मिक संबंध स्थापित कर सकते है। लेकिन समाज की व्यवस्था के अध्ययन में प्रयोग मुश्किल से संभव होते है। फिर भी समाज विज्ञानी ऐसी स्थितियों के परीक्षण के द्वारा जिनमें दो या दो से अधिक घटनाएं एक साथ उपस्थित या अनुपस्थित होती है, आकस्मिक संबंध स्थापित करते है। अत: सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में तुलनात्मक विधि यह प्रदर्शित करती है कि कैसे कुछ निश्चित सामाजिक घटनाएँ लगातार एक-दूसरे से संबंद्ध होती है या नियमित रूप से बढ़ते हुए क्रम में लगातार घटित होती है। डरखिम, मेक्स वेबर एवं अनेकों अन्य समाज शास्त्रतियों ने सामाजिक घटनाओ के अध्ययन में इस उपागम का अत्यधिक रूप से लगातार उपयोग किया है। उदाहरण के रूप में डरखिम ने विभिन्न समाजों एवं समाजों के विभिन्न समूहों के बीच आत्महत्या कीदर की तुलना की, और यह प्रदर्शित किया कि ये आत्महत्या दर सामाजिक एकात्मकता के स्तर के साथ व्युत्क्रम रूप से बदलती है।

प्रकार्यवादी उपागम– प्रकार्यवादी उपागम आधुनिक समाज शास्त्रीय सिद्धांतों को गम्भीर रूप से प्रभावित करता हैं वास्तव में यह विधि विकासवादी विधि के विरूद्ध प्रतिक्रिया का परिणाम है। वास्तव में, प्रकार्यवादी उपागम के खोजबीन वाले उपागम की अपेक्षा अधिकांशत: अर्थनिरूपण वाले उपागम के रूप में सुविचारित किया जाता है। समाज के अध्ययन के लिए प्रकार्यवादी उपागम इस ओर इंगित करता है –''समाज/सामाजिक घटना के कार्य के दृष्टिकोण से (या समाज के तत्व/सामाजिक घटना) समाज/सामाजिक घटना का अध्ययन'' है। किसी व्यवस्था के कार्य उन क्रियाकलापें की ओर इंगित करते है जो उस व्यवस्था के द्वारा, व्यवस्था

की स्वस्थ रखरखाव की उपलब्धि हेतु किया जाता है। यह उपागम पूर्वानुमान पर आधारित है जैसे कि कोई व्यवस्था अपने अनेको रचनात्मक भागों पर आधारित होती है। व्यवस्था का प्रत्येक भाग आन्तरिक रूप से व्यवस्था के अन्य भाग से संबंधित होता है। व्यवस्था के एक भाग का कार्य, व्यवस्था के अन्य भाग के कार्य के संदर्भ में पहले से तय होता है। इसी प्रकार से यदि समाज एक व्यवस्था है तब इसके रचनात्मक भाग धर्म, अर्थ, राजनीति आदि है। तब प्रकार्यवादी संदर्भो से समाज का अध्ययन, समाज के भागों जैसे धर्म, अर्थ, राजनीति आदि के संबंधित कार्यों के संदर्भ में समाज को समझने से है। अगस्त काम्टे तथा हरबर्ट स्पेन्स ने प्रकार्यवादी संदर्भो से समाज के अध्ययन की नींव रखी। सामाजिक घटनाओं के अध्ययन में इस विधि का उपयोग करने में डरखिम को महारत हासिल थी। रेडक्लिफ ब्राऊन तथा मेलिनोवस्की ने सामाजिक घटनाओं के अत्ययन में इस उपागम की अत्यधिक प्रशंसा की है।

सांख्यिकीय उपागम – 17वीं सदी की शुरूआत से, सामाजिक घटनाओं के अध्ययन में सांख्यिकीय उपागम का उपयोग किया गया। इस उपागम का उपयोग, सामाजिक घटनाओं में संख्यात्मक एवं वस्तुनिष्ठ तरीके में किया जाता है। सामाजिक मुद्दे जैसे – जन्म एवं मृत्यु, तलाक, अपराध, स्थान परिवर्तन आर्थिक स्थिति, लोक इच्छा आदि इस प्रकार के संबंधित मुद्दों का अच्छी प्रकार से इस उपागम के अन्तर्गत अध्ययन किया जा सकता है। इस उपागम का अधिक उपयोग सामाजिक घटनाओं के विभिन्न पहलुओं के बीच संबंधों को स्पष्ट करने में किया जाता है। यह सत्य है अधिक सामाजिक आंकड़े गुणात्मक है, लेकिन फिर भी समाज विज्ञानी अपनी बेहतर कोशिश कर रहे है कि सांख्यिकीय विधि के अर्थपूर्ण उपयोग के द्वारा इन आंकड़ों को संख्यात्मक तथा उद्देश्यपूर्ण बना सके। समाज शास्त्रीय शोधो को करने में, समाज शास्त्री जैसे गिडिंग्स तथा अनेकों अन्य, इस उपागम का उपयोग करने पर बल देते है।

इन उपागमों के अतिरिक्त अनेकों अन्य उपागम जैसे केस स्टडी उपागम, विकासवादी उपागम आदि भी है, जिनका सामाजिक घटनाओं के अध्ययन में अधिक उपयोग किया जाता है।

प्रगति जाँच-2

- रोबिन्स के अर्थशास्त्र अध्ययन के दुर्लभता एवं चुनाव उपागम के विशिष्ट पहलुओं को बताइए।

(नोट – नीचे दिये गये स्थान पर अपना उत्तर लिखिए तथा इस इकाई के अन्त में दिये आदर्श उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

....

....

....

....

....

टिप्पणी

5.4 सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम के भाग के रूप में सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन का महत्व

सामाजिक विज्ञान को एक विषय के रूप में हमारे विद्यालय पाठ्यक्रम में इसलिए शामिल किया गया जिससे कि विद्यार्थियों को समाज की सामाजिक सांस्कृतिक व्यवस्था के प्रति जागरूक किया जा सके तथा समाज की वास्तविकता का सामना करने के योग्य बनाया जा सके। इसका उद्देश्य कुछ निश्चित गुणों, दक्षताओं और मूल्यों का विद्यार्थियों में विकास करना है। जिससे कि वे समाज की विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक समस्याओं का समाधान कर सकें। यह विषय विद्यार्थियों की स्वतंत्र समाज का एक प्रभावशाली सदस्य बनने में सहायता करता है।

उच्च प्राथमिक स्तर पर, सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम में तीन शिक्षण-अधिगम क्षेत्र शामिल है, जिनके नाम इस प्रकार है–'इतिहास', 'भूगोल' और सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन। अब आप सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम के भाग के रूप में 'सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन' के महत्व का अधिगम करेंगे।

5.4.1 सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम के भाग के रूप में सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन का महत्व

पूर्व में आप पहले ही सीख चुके है कि सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम में 'सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन' के क्षेत्र ने 'नागरिक शास्त्र' के क्षेत्र को बदल दिया है। अब हम सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम के भाग के रूप में 'सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन' के महत्व पर चर्चा करेंगे।

'सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन' सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम के एक महत्वपूर्ण पहलू की रचना करता है जैसे इतिहास और भूगोल। जबकि इतिहास को सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम में, बच्चों को भूतकाल के समय के प्रत्येक भाग तक पहुँच के प्रति जागरूक करने के लिए, शामिल किया गया है; भूगोल को सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम में, बच्चों को उनके चारों ओर के वातावरण के भौतिक, पर्यावरणीय तथा सामाजिक-सांस्कृतिक पहलुओं के प्रति जागरूक बनाने के लिए, शामिल किया गया है, सामाजिक और राजनीतिक जीवन को सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम में, बच्चों को उनके सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक जीवन के विभिन्न पहलुओं के प्रति जागरूक बनाने के लिए शामिल किया गया है। उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक और राजनीतिक जीवन का अधिगम सामान्यतया निम्न उद्देश्यों से संबंधित है–

- बच्चों के बीच सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक मूल्यों की बढ़ोतरी करना।
- बच्चों में राष्ट्रीय मूल्य, सहभागिता और धैर्य को विकसित करना।
- बच्चों को समाज का सक्रिय सहभागी बनाना।

- बच्चों की विभिन्न विवादास्पद सामाजिक-राजनीतिक तथा आर्थिक मुद्दों को हल करने में सहायता करना।
- बच्चों में प्रजातांत्रिक तथासंवैधानिक मूल्यों को अंतर्निवेशन करना।
- बच्चों को सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक संस्थानों से परिचित कराना।
- बच्चों में शांति और समझ के मूल्यों में वृद्धि करना।

उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम के NCF (2005) के निहितार्थ:-

उच्च प्राथमिक स्तर पर, सामाजिक अध्ययन ने अपनी पाठ्यवस्तु इतिहास, भूगोल, राजनीति विज्ञान तथा अर्थशास्त्र से ही ली है। इतिहास में भारत के विभिन्न भागों में विकास तथा संसार के अन्य भागों में विकास का लेखा जोखा रहेगा। भूगोल एक संतुलित परिप्रेक्ष्य के विकास में सहायता कर सकता है जोकि पर्यावरण, संसाधन तथा विभिन्न स्तरों पर स्थानीय से लेकर वैश्विक मुद्दों से संबंधित है। राजनीति विज्ञान में, विद्यार्थी, स्थानीय राज्य स्तरीय तथा केन्द्रीय सरकारों के निर्माण एवं क्रियात्मकता से परिचित होंगे तथा सहभागिता की प्रजातांत्रिक प्रक्रिया से भी परिचित होंगे। अर्थशास्त्र के घटक विद्यार्थियों को आर्थिक संस्थानों जैसे–परिवार, बाजार और राज्य आदि का अवलोकन करने के योग्य बनायेगा। यहाँ एक भाग ऐसा भी है जो इन कथ्यों का बहु विषयी उपागम को संकेत करता है।

'सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन' के मूल कारण तथा उद्देश्यों की सामाजिक विज्ञान के शिक्षण (2006) पर राष्ट्रीय अभिकेन्द्रित समूह की व्याख्या इस प्रकार से:-

मूल कारण – प्रारम्भिक स्तर पर, राजनीतिक, सामाजिक तथा अर्थशास्त्रीय जीवन के विभिन्न पहलुओं को बच्चों को परिचित कराने का विचार है। इसे प्राथमिक रूप से कुछ निश्चित विशिष्ट अवधारणाओं पर केन्द्रित करके किया जायेगा, जिसका ज्ञान भारतीय प्रजातंत्र की कार्यशीलता को समझने के लिए आवश्यक है। इन अवधारणाओं की व्याख्या काल्पनिक उदाहरणों के माध्यम से किया जायेगा जो बच्चों को इन अवधारणाओं तथा रोजाना के अनुभवों के बीच संबंध बनाने की आज्ञा देता है। इस स्तर पर भारत की प्रजातांत्रिक संरचना के सभी पहलुओं को समावेश करने का प्रयास नहीं किया जायेगा। लेकिन प्रयास एक दृश्यावलोकन उपलब्ध कराने पर अधिक है जिसके द्वारा बच्चा एक जीवंत व सतत प्रजात्रात्रिक प्रक्रिया को रुचि लेने वाले नागरिकों के रूपमें अपने आप को तैयार करके महत्वपूर्ण ढंग से संलग्न होकर सीखता है। संस्थानों एवं आदर्शों के वास्तविक जीवन की क्रियात्मकता पर केन्द्रित होना, बच्चे को उसके प्रतिदिन के जीवन के राजनीतिक एवं सामाजिक पहलुओं के बीच गहरे अर्न्तसंबंधों को ग्रहण करने के योग्य बनाता है तथा इसके अतिरिक्त आर्थिक निर्णय लेने में ये दोनों प्रभाव डालते है।

टिप्पणी

उद्देश्य –

- विद्यार्थियों को अपने दैनिक जीवन तथा पाठ्यपुस्तक में चर्चा किये गये मुद्दों के बीच संबंध बनाने के योग्य बनाना।
- विद्यार्थियों को भारतीय संरचना के आदर्शों को आत्मसात कराना।
- बच्चों को भारतीय प्रजातंत्र का कार्य प्रणाली को वास्तविक अर्थों में ग्रहण कराना जैसे–इसके संस्थान एवं इसकी प्रक्रिया।
- राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक मुद्दों के बीच अन्तर्संबंधों को ग्रहण करने के योग्य बनाना।
- सभी प्रकार के लिंगों की प्रकृति को पहचान कराना।
- विवेचनात्मक विश्लेषण तथा अधिकारहीन दृष्टिकोण से राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक विकास की व्याख्या के कौशल को विकसित कराना।
- उन तरीको की पहचान कराना जिसके कारण राजनीति के द्वारा उनका दैनिक जीवन प्रभावित होता है।

5.4.2 सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम के सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन अधिगम के शैक्षणिक सिद्धांत–

मूलरूप से सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन के अधिगम की आवश्यकता एक परस्पर क्रिया एवं प्रायोगिक शैक्षणिक स्थिति है। अधिगम बच्चे के दैनिक जीवन के कार्यों से जुड़ा हुआ होना चाहिए। बच्चे के सांस्कृतिक एवं सामाजिक संदर्भो को, सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन की सम्पूर्ण शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में प्राथमिकता दी जानी चाहिए। इस क्षेत्र के अधिगम के लिए उपयोग की गयी शैक्षणिकता, बच्चे की सृजनात्मकता, जटिल समझ तथा समस्या समाधान की योग्यता को सुविधा प्रदान करती है। शिक्षण बाल–केन्द्रित होनी चाहिए जिससे बच्चा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में केन्द्र पर रहे।

नीचे आपके लिए कुछ टिप्पणी दी गयी है कि कैसे सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन का अधिगम एक क्रियाकलाप आधारित शिक्षण–अधिगम शैक्षणिकता का अनुकरण करता है।

क्रियाकलाप–1 (अच्छी सामाजिक आदतो पर क्रियाकलाप आधारित अधिगम)

यह एक कक्षा आधारित क्रियाकलाप है। इस क्रियाकलाप का उद्देश्य बच्चों में अच्छी आदतों का विकास करना तथा बुरी आदतों का उन्मूलन करना है। क्रियाकलाप का विवरण नीचे निम्न बिन्दुओं में दिया गया है।

(a) क्रियाकलाप प्रोफाइल–

कक्षा – VI

अधिगम क्षेत्र	–	सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम का क्षेत्र 'सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन'।
अधिगम की पाठ्यवस्तु	–	अच्छी सामाजिक आदतें।
मुख्य अधिगम उद्देश्य	–	बच्चों में अच्छी सामाजिक आदतों का विकास करना तथा बुरी आदतों का उन्मूलन करना।
आवश्यक सामग्री	–	अच्छी और बुरी सामाजिक आदतों से संबंधित कुछ चित्र
व्यूह रचना	–	उपयुक्त चित्र के सामने (✓) या (x) लगाइए।
विधि	–	व्यक्तिगत

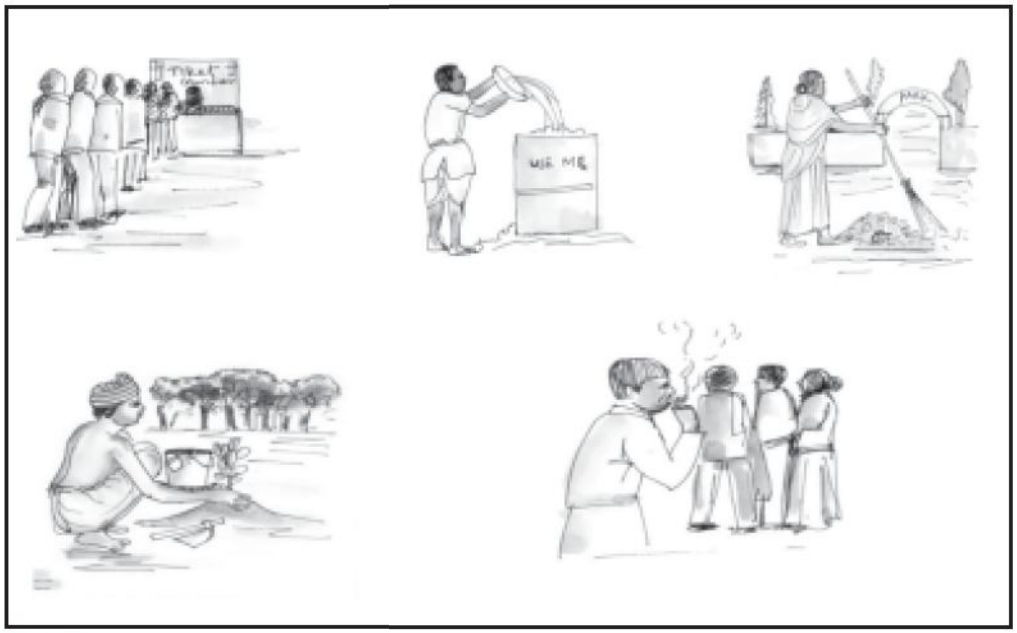

(b) क्रियाकलाप का अनुकरण

इस क्रियाकलाप में, शिक्षक बच्चों को इस प्रकार से मार्गदर्शित करेगा–प्यारे बच्चों, ऊपर के बॉक्स में अनेको चित्र दिये गये है। सभी चित्रों में कुछ सामाजिक आदतों की विशेषताओं का चित्रण किया गया है। उपयुक्त चित्र का चुनाव कीजिए जो अच्छी सामाजिक आदतों को प्रदर्शित करती है उनके दांये ओर (✓) का निशान लगाइए तथा जो बुरी आदतों को प्रदर्शित करती है उनके दाँयी ओर (×) का निशान लगाइए।

(c) क्रियाकलाप आधारित अधिगम दत्तकार्य–

ये अधिगम दत्त कार्य बच्चों के लिए है। इन अधिगम दत्त कार्यो को करते हुए शिक्षक बच्चे का इस प्रकार से मार्गदर्शन करेगा–

नीचे आपके लिए (बच्चे के लिए) विभिन्न कार्य दिये गये है, जो बहुत ही रूचिपूर्ण है। इन कार्यो को पूर्ण कीजिए और उन्हें चर्चा एवं विश्लेषण के लिए जमा कीजिए।

1. 'अच्छी सामाजिक आदतों' के शीर्षक पर एक छोटी कहानी तैयार कीजिए।

टिप्पणी

2. 'बुरी सामाजिक आदतों के दुष्प्रभाव' पर एक निबन्ध लिखिए।

3. 'अच्छी सामाजिक आदतों' पर कुछ चित्र तैयार कीजिए।

4. ऐसी बुरी सामाजिक आदतों की एक सूची तैयार कीजिए जो आपके विद्यालय प्रांगण में व्याप्त है तथा इसकी रिपोर्ट अपने कक्षा अध्यापक को सौंपिए।

प्रगति जाँच-3

- सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम के 'सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन' के पहलुओं के अधिगम के शैक्षणिक सिद्धांत क्या होने चाहिए?

(नोट- नीचे दिये गये स्थान पर अपना उत्तर लिखिए और अपने उत्तर की तुलना इस इकाई के अन्त में दिये गये आदर्श उत्तर से कीजिए।)

.....

.....

.....

.....

.....

5.7 सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम के सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन पहलुओं के अधिगम के लिए पाठ योजना विकसित करना–

आपकी चर्चा एवं अधिगम के लिए, सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम के 'सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन' क्षेत्र पर एक पाठ योजना यहाँ प्रस्तुत की गयी है।

इस पाठ योजना को कक्षा-VI के 'भारत में विभिन्नता एवं एकता' शिक्षण के लिए तैयार किया गया है। इस पाठ योजना को शिक्षण-अधिगम के निम्न लिखित संरचनात्मक उपागमों से तैयार किया गया है। यह पाठ योजना शिक्षक से बच्चे की सम्पूर्ण अधिगम प्रक्रिया के लिए एक मार्गदर्शक की अपेक्षा करती है। पाठ योजना का विस्तृत विवरण नीचे निम्नलिखित शीर्षकों में दिया गया है।

(a) पाठ का संदर्भ–

कक्षा – VI

अधिगम क्षेत्र – सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम का 'सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन' क्षेत्र।

प्रकरण – भारत में विभिन्नता एवं एकता।

समय – एक कालांश

अधिगम उपागम – संरचनात्मक उपागम

(b) पाठ के अधिगम उद्देश्य –

इस प्रकरण के अधिगम के पश्चात् आप (बच्चे) इस योग्य हो सकेंगे–

- भारत में प्रचलित विभिन्न प्रकार की विभिन्नताओं (जैसे-धार्मिक विभिन्नता जाति विभिन्नता, वर्ग विभिन्नता आदि) की पहचान करना।
- इन सभी प्रकार की विभिन्नताओं की प्रकृति एवं इनके कारणों की व्याख्या करना।
- यह निष्कर्ष निकालना कि भारतीयो की विभिन्नता भरतीयों को एकता का आधार प्रदान करने में किस प्रकार कार्य करती है।
- भारत के सामाजिक-सांस्कृतिक मानचित्र में विभिन्नता के पहलुओं की स्थिति की खोज करना। तथा
- भारतीय संदर्भ में विभिन्नता में एकता से संबंधित परियोजना/योजना तैयार करना।

(c) अधिगम विधियाँ – कक्षा में प्रवेश करने के पश्चात, शिक्षक को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि कक्षा की व्यवस्था समुचित है अथवा नहीं। पहले शिक्षक कक्षा का अनुशासन ठीक करेगा और तब वह बच्चों को शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के लिए कुछ प्रेरक तकनीकीयों की मदद से प्रेरित करेगा। उपस्थित कक्षा मूल रूप से शिक्षण अधिगम के लिए संरचनात्मक उपागम का अनुकरण करेगी। इस पाठ को प्रस्तुत करने में शिक्षक जिस विधि का अनुकरण करेगा, नीचे निम्न शीर्षको के अन्तर्गत दी गयी है।

(d) प्रकरण का परिचय – उपस्थित अधिगम कार्य में बच्चों को प्रेरित करने के लिए, शिक्षक बच्चों को कुछ चित्र (बाक्स-1 में दिये गये) दिखायेगा, जो विभिन्न धर्मो की पहचान है, और चित्रों से संबंधित निम्नलिखित प्रश्न पूछेगा।

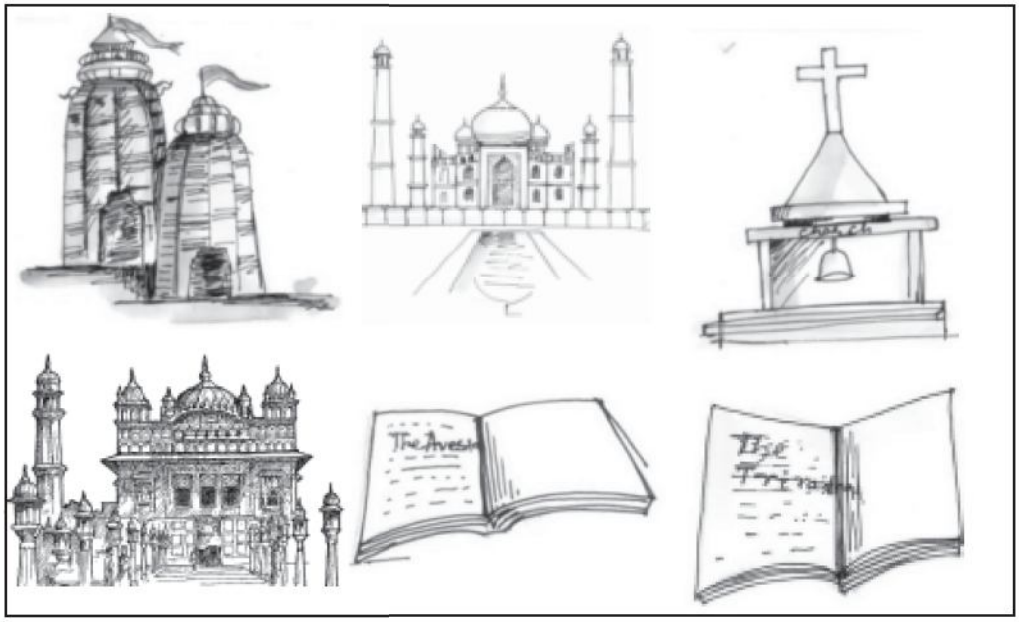

टिप्पणी

शिक्षक क्रियाकलाप	विद्यार्थी क्रियाकलाप (अपेक्षित)
क्या आप इन चित्रों में अन्तर कर सकते हो?	हाँ।
ये चित्र आपस में कैसे अलग-अलग है (विभिन्नता के आधार पर)	धर्म, इन चित्रों में अन्तर का आधार है।
क्या ये चित्र एक धर्म से संबंधित है?	नहीं, ये अनेकों धर्मो से संबंधित है।
क्या ये सभी धर्म भारत में पाये जाते है?	हाँ।

(e) प्रकरण की उद्घोषणा– बच्चों के साथ उपर्युक्त चर्चा करने के बाद, शिक्षक ये कहेगा कि धार्मिक विभिन्नता भारत का एक मुख्य पहलू है, और इसी प्रकार से कोई अन्य विभिन्नता भारत में पायी जाती है या नहीं, आओं इस पर चर्चा करें।

(f) प्रस्तुतीकरण – इस स्तर पर, शिक्षक भारत में विभिन्नता एवं एकता के पहलुओं से संबंधित चर्चा के क्रम में विभिन्न उपागमों/तकनीकियों का अनुकरण करेगा। ऐसी उपागम/तकनीकियों की विस्तृत चर्चा नीचे निम्नलिखित दो भागो (भाग-A और भाग-B) में की गयी है।

भाग-A (विभिन्नता के संदर्भ में संरचनात्मक अधिगम)

बाक्स-2 विभिन्नता से संदर्भित - I

शिक्षक क्रियाकलाप	विद्यार्थी क्रिया कलाप (अपेक्षित)
इन चार दृश्यों को देखिए और बताइए कि यह चारों एक-दूसरे से कैसे अलग-अलग है।	बच्चे अपने स्वयं के अनुभव के आधार पर इनमें अन्तर खोजने का प्रयत्न करेंगे।
उचित उदाहरणों के साथ एक निबन्ध लिखिए, भारत इन विभिन्नताओं का अलग-अलग समय में अलग-अलग स्थानों पर कैसे अनुभव करता है।	बच्चे अपने अनुभव के आधार पर इस संदर्भ में निबन्ध लिखेंगे।

शिक्षक बच्चों के द्वारा लिखे गये निबन्ध पर बच्चों से चर्चा करेगा। तथा एक विस्तृत चर्चा बच्चों से करेगा कि भारतीयों के उनके दैनिक जीवन में विभिन्नता के कैसे अनुभव है।

बाक्स-3 विभिन्नता से संदर्भित-2

शिक्षक क्रियाकलाप	विद्यार्थी क्रियाकलाप (अपेक्षित)
बाक्स-3 में कुछ चित्र दिये गये है। इन चित्रों में से कुछ ग्रामीण क्षेत्रों से संबंधित है तथा कुछ शहरी क्षेत्रों से। ग्रामीण क्षेत्र एवं शहरी क्षेत्र के आधार पर इनमें विभेद कीजिए।	बच्चे इनको देखते हुए इनमें अन्तर करेंगे।
क्या आप शहरी भारत एवं ग्रामीण भारत में कुछ और विविधता प्राप्त कर सकते हो?	बच्चे और विविधता प्राप्त करने की कोशिश करेंगे।

टिप्पणी

संरचनात्मक अधिगम परस्पर क्रिया (उपरोक्त दो विविधताओं के संदर्भ में)

बच्चे निम्न प्रकार से विविधताओं के संदर्भ में (उन्होंने जो कुछ भी उपरोक्त दो विविधताओं के संदर्भ में अनुभव किया है) अपने अधिगम की संरचना करेंगे।

शिक्षक क्रियाकलाप	विद्यार्थी क्रियाकलाप (अपेक्षित)
हम और किस प्रकार की विविधता भारत में खोज सकते है? इस प्रकार की विविधताओं की एक सूची तैयार कीजिए।	बच्चे, जाति, वर्ग, क्षेत्रीयता, भाषा, संस्कृति, भोजन की आदत, पहनावा, त्यौहार, जानवर, पक्षी आदि विविधताओं को बतायेंगे।
हमारे देश में कौन-कौन सी जातियाँ है? अपनी राय दीजिए कि जाति एक वरदान है या एक अभिशाप है।	प्रत्येक बच्चा जटिलता से विश्लेषण करेगा और इसका उत्तर देगा।
हमने अनेको बार भारतीय लोगों के बीच वर्ग के आधार पर झगड़े, भाषा के आधार पर झगड़े, धर्म के आधार पर झगड़े आदि को देखा है। हमारे देश में इस प्रकार के झगड़े क्यों होते है? और इन झगड़ों के बुरे प्रभाव क्या है?	बच्चे जटिलता से इन झगड़ो के कारणों एवं प्रभावों का विश्लेषण करेंगे और आपस में अपने विचारों का आदान-प्रदान करेंगे।
भारत एक विस्तृत एवं विविधता वाला राष्ट्र है। आपके अनुसार भारतीय विविधता भारतीयों के लिए वरदान है या अभिशाप?	बच्चे इस मुद्दे पर आपस में बहस करेंगे और अपने विचार कक्षा में प्रस्तुत करेंगे।

भाग - B (एकता के संदर्भ में सरंचनात्मक अधिगम)

एकता का संदर्भ -I

शिक्षक क्रियाकलाप	विद्यार्थी क्रियाकलाप (अपेक्षित)
इस चित्र को देखे। आप इस चित्र में क्या देखते हो? चित्र देखने में कैसा है? क्या आप इस चित्र में भारत के एकता के किसी पहलू को प्राप्त किया जा सकता है?	इतनी विविधताओं के होते हुए भी भारत एकता को बनाये रखने में कैसे कामयाब हुआ है तथा कितना कामयाब हुआ है, बच्चे ये बताने की कोशिश करेंगे।

टिप्पणी

बाक्स 4 एकता का संदर्भ -2

शिक्षक क्रियाकलाप	विद्यार्थी क्रियाकलाप (अपेक्षित)
बाक्स-4 में चित्र को देखो। क्या आप महसूस करते है कि भारत अपनी सांस्कृतिक विविधता के लिए महान है?	हाँ।
उपरोक्त चित्र से संक्षेप में वर्णन कीजिए कि कैसे भारत ने अपनी विविधता से सांस्कृतिक एकता को बनाये रखा है?	बच्चे ये निर्णय करेंगे कि भारत ने सांस्कृतिक एकता को कैसे बनाये रखा है।

रचनात्मक अधिगम पारस्परिक क्रिया (उपरोक्त दो एकता से संबंधित)

बच्चे अपने अधिगम की रचना भारत में इसकी विविधता से एकता के बारे में, उपरोक्त दो एकता से संबंधित करेंगे।

शिक्षक क्रियाकलाप	विद्यार्थी क्रियाकलाप (अपेक्षित)
शिक्षक बच्चों को दस रूपये का नोट दिखायेगा और बतायेगा कि कैसे इस पर भारत की विविधता तथा एकता को वर्णित किया गया है।	बच्चे नोट को देखेंगे तथा इस नोट से विविधता एवं एकता के पहलुओं का अनुमान लगायेंगे।
विश्व, भारत को इसकी भाषा, धर्म, तथा सांस्कृतिक एकता से पहचानता है। इस कथन पर अपनी टिप्पणी दीजिए।	बच्चे अपने अनुभव के आधार पर अपनी टिप्पणी प्रदान करेंगे।
आप भारतीय महानगरो की पहचान विविधता में एकता के चिहन के रूप में कैसे करते है?	बच्चे महानगरों में एकता की विशेषताओं की खोज करेंगे।

गानों की सूची तैयार कीजिए जिनसे भारत में विविधता में एकता की झलक दिखायी दे।	बच्चे कुछ गाने, वचन आदि एकत्रित कर सकते है जिनसे भारत में विविधता में एकता की झलक दिखायी देती हो। जैसे–सारे जहाँ से अच्छा

(g) मूल्यांकन –

निम्नलिखित कार्य आपके लिए विद्यार्थी है। इन कार्यो को पूरा कीजिए।

(1) तीन मुख्य त्यौहारों की सूची बनाइए, जो आपके राज्य में मनाये जाते है। इन धार्मिक तथा सांस्कृतिक समूहों का नाम बताइए जो इन तीनो त्यौहारों में प्रत्येक में भाग लेते है।

(2) भारत में ब्रिटिश शासन के दौरान, भारत में विभिन्न समूहों के लोगों ने एकता के पहलुओं को प्रदर्शित किया और भारत को ब्रिटिश हाथों से मुक्त कराया। इस पर अपनी टिप्पणी दीजिए।

(3) निम्नलिखित कथानक पर एक परियोजना तैयार कीजिए।

''अपने गाँव/पास–पड़ौस में जाइए। विभिन्न संस्कृति, जाति एवं धर्म के लोगों की खोज कीजिए जो कि वहाँ रहते है। उनके बीच की विभिन्नता की खोज कीजिए। उनके बीच में एकता की उपलब्धि हेतु कुछ विधियों का सुझाव दीजिए।''

(4) कालम -A में, चार राष्ट्रीय नेताओं के नाम दिये गये है। कॉलम -B मे उन नेताओं के जन्म स्थान शामिल है। तीर का निशान लगाकर कॉलम -A के नेताओं को कॉलम -B मे दिये जन्म स्थान से मिलान कीजिए।

कॉलम -A	कॉलम -B
सुभाष चन्द्र बोस	उत्तर प्रदेश
जवाहर लाल नेहरू	उड़ीसा
महात्मा गाँधी	गुजरात
बाल गंगाधर तिलक	महाराष्ट्र
	आसाम
	कर्नाटक

(5) प्रश्न –4 में चार राष्ट्रीय नेताओं के नाम दिये गये है। हमारे देश की एकता के लिए उन्होंने कैसे बलिदान दिया, वर्णन कीजिए।

प्रगति जाँच–4

- भारत में पायी जाने वाली विभिन्न प्रकार की विविधता क्या है?

(नोट– नीचे दिये गये स्थान पर अपना उत्तर दीजिए और अपने उत्तर की तुलना इस इकाई के अन्त में दिये गये आदर्श उत्तर से कीजिए।)

टिप्पणी

.....

.....

.....

.....

.....

5.6 सारांश

इस इकाई में, राजनीति विज्ञान/अर्थशास्त्र/समाज शास्त्र के एक एकीकृत विषय के रूप ''सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन'' के संदर्भ में चर्चा हुई इस इकाई में मुख्य रूप से तीन बिन्दुओं पर ध्यान केन्द्रित किया गया–

प्रारम्भिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान में ''सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन'' की पाठ्यवस्तु; राजनीति विज्ञान, अर्थ शास्त्र तथा समाज शास्त्र में समाज वैज्ञानिको द्वारा अपनायी गयी विधि याँ/उपागम; तथा सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम के भाग के रूप में ''सामाजिक तथा राजनीतिक जीवन'' का महत्व। इस इकाई के अन्तिम भाग में सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम के पहलू ''सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन'' से संबंधित पाठ योजना प्रस्तुत की गयी।

5.7 प्रगति जाँच के उत्तर

प्रगति जाँच-1

सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन ने अपने अधिगम अनुभव मुख्य रूप से राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र तथा समाज शास्त्र से लिए है। राजनीति विज्ञान बच्चों को प्रजातांत्रिक प्रक्रिया तथा सहभागिता से परिचत होना सिखाती है। अर्थशास्त्र बच्चों को आर्थिक क्रियाकलापों जैसे- उत्पादन, उपभोग, वितरण, विनिमय आदि से परिचित होने के योग्य बनाता है। समाज शास्त्र बच्चों को जाति, वर्ग तथा धर्म आदि के बन्धनों को तोड़कर एक सभ्य समाज का महत्वपूर्ण सदस्य बनना सिखाता है।

प्रगति जाँच-2

रोबिन्स ने अर्थशास्त्र को विज्ञान के रूप में परिभाषित किया जिसमें अन्तिम तथा न्यूनतम साधन के बीच संबंधों के रूप में मानवीय व्यवहार का अध्ययन किया, जिसका वैकल्पिक उपयोग है। रोबिन्स के आर्थिक अध्ययन के दुर्लभता तथा चुनाव उपागम के विशिष्ट पहलु निम्न प्रकार है।

1. मानवीय इच्छाएं असीमित है।
2. संसाधन इच्छाओं के अनुपात में सीमित/दुर्लभ है।
3. संसाधनों के विभिन्न वैकल्पिक उपयोग है।
4. सामान तथा सेवाएं कल्याण कार्य को प्रोन्नत करेगी या नहीं, यह अर्थशास्त्र से संबंधित नहीं है। यदि सामान और सेवाएं मानवीय इच्छाओं को संतुष्ट करती है तो अर्थशास्त्र में उनका अध्ययन होना चाहिए।
5. समाज के संसाधनों को विभिन्न इच्छाओं की संतुष्टि के लिए कैसे बाँटा जाना चाहिए, यह अर्धशास्त्र से संबंधित है।

प्रगति जाँच-3

सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम का पहलू ''सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन'' के अधिगम को मुख्य रूप से एक परस्पर क्रिया तथा प्रायोगिक शैक्षणिक स्थिति की आवश्यकता है। अधिगम को बच्चे के दैनिक जीवन की स्थितियों से संबंधित होना चाहिए। बच्चे के सांस्कृतिक एवं सामाजिक संदर्भ को सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन की सम्पूर्ण शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में उच्च प्राथमिकता दी जानी चाहिए। इस क्षेत्र के अधिगम के लिए उपयोग की गयी शैक्षणिकता को, सृजनात्मकता, जटिल समझ तथा समस्या समाधान की योग्यता की सुविधा, बच्चे को प्रदान की जानी चाहिए। इस विषय की शिक्षण-अधिगम की शैक्षणिकता को खेल के द्वारा अधिगम, मनोरंजन के द्वारा अधिगम, तथा स्वयं करने के द्वारा, अधिगम का अनुसरण किया जाना चाहिए।

प्रगति जाँच-4

भारत में विभिन्न प्रकार की विविधताएँ विद्यमान है। उनमें से कुछ विविधताएँ जाति, भोजन की आदत, वर्ग, धर्म, भाषा, संस्कृति, कपड़े, त्यौहार, जानवर एवं पक्षी, शहरी-ग्रामीण संदर्भ, जलवायु की दशा आदि से संबंधित है।

5.8 शब्दावली/संकेताक्षर

सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन (SPL):- उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन' सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम का एक घटक है उच्च प्राथमिक स्तर पर 'इतिहास' तथा 'भूगोल' सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम के अन्य घटक है।

राज:- राज से तात्पर्य ब्रिटिश राज या प्रशासन से है।

नागरिक शास्त्र:- नागरिक शास्त्र पूर्व में उच्च प्राथमिक स्तर सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम का एक क्षेत्र था। वर्तमान में उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम में 'नागरिक शास्त्र' का स्थान 'सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन' ने ले लिया है।

टिप्पणी

5.9 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

Ahuja, H.L. (2004) Principles of Micro economics. New Delhi: S.chand and company Ltd.

Arora, N.D., & Avasthy, S.S (1999). Political theory. New Delhi: Har-Anand Publication Pvt Ltd.

Braker, E. (1967). Principles of social and Political theory. Oxford: Oxford university Press.

Basantia, T.K. (2003) Effect of Activity based Joyful Learning Approach in Achieving Interdisciplinary MLL Competencies through Teaching Environmental studies at Primary level. M.Phil. Education. Utkal University Basantia, T.K. (2006) Effect of Multi-Dimensional Activity based Integrated Approach in Enhancing Cognitive and Creative Abilities in Social studies of Elementoary school chilren Ph.D. Education utkal University.

Barsantia, T.K. & Panda, B.N. (2008) Multi-Dimensional Activity based Intigrated Approach: An Innovative Teaching Learnign strategy at the school stae.

The Primary Teacher 33 (1-2)

Jarolimek, J. (1962). Social studies in elementary education New Yourk: The Mac Millan Company.

Mishra. S. & Basantia, T.K. (2003) Effect of competency based enaluation on students' attainment at primary level. The primary teacher, 28 (2), 20-26.

NCERT. (2000) National Curriculum Frame work for School Education. New Delhi: NCERT

NCERT. (2005) National Curriculum Frame work - 2005 New Delhi: NCERT.

NCERT. (2006) Position Paper-National Focus Group on Teaching of Social Science. New Delhi: NCERT.

NCERT. (2006). Social science (social and Political life-1 New Delhi: NCERT.

NCERT. (2007) Social Science (social and Political life-II) New Delhi: NCERT

Shankar Rao, C.N. (1995) Socilogy. New Delhi : S. Chand and Company Ltd.

Traill, R.D. Logan, L.M, & Remmington, G.T. (1968).

Teaching the social sciences; A Creative Direction. Sidney: MC Graw Hill Company.

टिप्पणी

5.10 अन्त्य इकाई अभ्यास

1. सामाजिक- आर्थिक मुद्दों की एक सूची तैयार कीजिए, जिनका आपने अपने दैनिक जीवन में अनुभव किया है, जिनको उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम के घटक सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन (SPL) में शामिल करना उपयोगी है।

2. निम्नलिखित प्रकरण पर एक परियोजना तैयार कीजिए:-

   ''अपने गाँव/नगर निगम क्षेत्र में जाइए। उन परिवारों की खोज कीजिए जो गरीबी रेखा के नीचे के है। उनके रहन-सहन की दशा एवं सामाजिक जीवन पर अध्ययन कीजिए। उनके उत्थान के लिए उपचारों का सुझाव दीजिए। कक्षा -VI के स्तर पर, ''भारतीय संदर्भो में लिंग भेद'' के शिक्षण अधिगम के लिए एक पाठ योजना तैयार कीजिए।